142

॥ श्रीहरिः ॥

चेतावनीपद-संग्रह

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देवदेव॥

गीताप्रेस, गोरखपुर

॥ श्रीहरिः ॥

निवेदन

भगवदाराधन, भक्ति तथा प्रेमकी उपासनामें तन्मयता प्राप्त करनेके लिये भजन-कीर्तन और पद-गायनका विशिष्ट स्थान है। भगवद्भावोंको प्रसारित करनेवाले अन्तःप्रेरक भजनों और संकीर्तनके स्वर-नादके माध्यमसे संसारसे विरक्ति और अपने इष्टदेव—प्रभुके प्रति तादात्म्य सहज स्थापित किया जा सकता है। भजनों और नाम-कीर्तनकी इस महत्त्वपूर्ण भूमिका और सर्वमान्य उपयोगिताको ध्यानमें रखकर 'चेतावनीपद-संग्रह' का यह संस्करण आपकी सेवामें प्रस्तुत है।

इसके पूर्व यह पद-संग्रह दो भागोंमें प्रकाशित हो चुका है। अब सबके सुविधार्थ दोनों भागोंको एकहीमें सम्मिलित करके किंचित् संशोधन और परिवर्द्धनके साथ पुनः प्रकाशित किया गया है। इसके अधिकांश भजन एक जिज्ञासुद्वारा संकलित हैं एवं कुछ उनके स्वरचित हैं। भक्ति, प्रेम, त्याग, वैराग्य, चेतावनी, आत्मप्रबोध आदि विभिन्न विषयोंके इन आत्मप्रेरक पदोंमें सरल, सरस हिन्दी तथा सुगम राजस्थानी भाषाका प्रयोग हुआ है। भावमय भजनोंका यह सुन्दर संकलन भावोत्पादक और उपयोगी होनेसे नित्य पठनीय है।

आशा है, सभी आस्तिकजन—भगवत्प्रेमी महानुभाव, श्रद्धालु माताएँ और भावमयी बहनें इस पद-संग्रहसे विशेष लाभ उठायेंगी, साथ ही भगवद्भावोंके प्रचारके पवित्र उद्देश्यसे अधिकाधिक अन्य लोगोंको भी इसे पढ़नेके लिये प्रेरित करेंगे।

—प्रकाशक

॥ श्रीहरिः ॥

पद-सूची

पद	पद-संख्या

॥ श्रीहरि: ॥

राजस्थानी बोलीमें चेतावनीपद-संग्रह

भाग—२

पद-सूची

॥ श्रीहरि:शरणम् ॥

चेतावनीपद-संग्रह

प्रथम भाग

मंगलाचरण

(१)

जय गनेस जय गनेस जय गनेस देवा।
माता तेरी पारबती, पिता महादेवा॥ टेर॥
एक दन्त दयावन्त, चार भुजा धारी।
माथे पै सिन्दूर सोहे, मूस की असवारी॥ १॥
अन्धों को आँख देत, कोढ़िन को काया।
बाँझन को पुत्र देत, निरधन को माया॥ २॥
पान चढ़े फूल चढ़े, और चढ़े मेवा।
लड्डुवन के भोग लगे, सन्त करे सेवा॥ ३॥

कीर्तन-धुन

(२)

राम राघव राम राघव राम राघव पाहि माम्।
जानकी वर मधुर मूरति राम राघव रक्ष माम्॥
कृष्ण केशव कृष्ण केशव कृष्ण केशव पाहि माम्।
राधिका वर मधुर मूरति कृष्ण केशव रक्ष माम्॥

नमस्कार

(३)

नमस्कार प्रभु बारम्बारा।
असंख्य कोटि ब्रह्माण्ड के स्वामी जड़ चेतन सब रूप तुम्हारा॥
तुम हो सबमें सब तेरे में, धन्य सगुण प्रभु रूप तुम्हारा॥ १॥
ना तुम किसमें ना तेरे में, धन्य है निर्गुण रूप तुम्हारा॥ २॥

बाहर भीतर ऊपर नीचे, जहाँ देखूं तहाँ रूप तुम्हारा॥ ३॥
रामकृष्ण ओंकार हरि हर, वेदों में तेरा नाम अपारा॥ ४॥
जुगल चरन में शीश झुकाऊँ, सिर पर धर दो हात तुम्हारा॥ ५॥

दो सुन्दर नाम

(४)

जग में सुन्दर है दो नाम, चाहे कृष्ण कहो या राम॥टेर॥
एक हृदय में प्रेम बढ़ावे, एक ताप सन्ताप मिटावे।
दोनों हीं हैं पूरन काम॥ चाहे॥ १॥
एक विदुर-घर भोजन पावे, एक बेर भिलनी के खावे।
दोनों प्रेम कृपा के धाम॥ चाहे॥ २॥
एक राधिका के संग राजे, एक जानकी संग विराजे।
दोनों सुन्दर रूप ललाम॥ चाहे॥ ३॥
दोनों हीं घट-घट के बासी, दोनों हीं आनन्द प्रकाशी।
भजिये निसि दिन आठौं याम॥ चाहे॥ ४॥

हमारे माँ बाप

(५)

श्री रामजी हमारे बापू, सियाजी मेरी मैया है॥टेर॥
नृप दशरथजी हैं दादा हमारे, दादी कौशल्या महारानी,
सियाजी मेरी मैया है॥ १॥
राजा जनक जी हैं नाना हमारे, नानी सुनैना महारानी,
सियाजी मेरी मैया है॥ २॥
लक्ष्मीनिधि हैं मामा हमारे, मामी है सिद्धि महारानी,
सियाजी मेरी मैया है॥ ३॥
लक्ष्मण भरत शत्रुघन चाचा, हनुमत लव कुश भैया,
सियाजी मेरी मैया है॥ ४॥
'सिया शरण' है दास तुम्हारो, राघवजू कै छैया॥ ५॥

माता, पिता, गुरु और ईश्वरके चरणोंमें वन्दना

(६)

तर्ज—देख तेरे संसार की हालत

मात पिता गुरु प्रभु चरणों में प्रनवत बारम्बार।
हम पर किया बड़ा उपकार॥ टेर॥
माता ने जो कष्ट उठाया, वह ऋण कभी न सके चुकाया।
जिन्हकी गोदी में पल कर हम, कहलाते हुँसियार॥
हम पर किया बड़ा उपकार॥ १॥
पिता ने हमको योग्य बनाया, कमा कमा कर अन्न खिलाया।
जोड़-जोड़ अपनी सम्पति का बना दिया हकदार॥
हम पर किया बड़ा उपकार॥ २॥
गुरु ने तत्व ज्ञान दरशाया, अन्धकार सब दूर हटाया।
बिनु कारन ही कृपा करे वे, कितनें बड़े उदार॥
हम पर किया बड़ा उपकार॥ ३॥
प्रभु कृपा से नर तन पाया, सन्त मिलन का साज सजाया।
ज्ञान विराग भक्ति मुक्ती का, खोल दिया भण्डार॥
हम पर किया बड़ा उपकार॥ ४॥

प्रार्थना

(७)

वह शक्ति हमें दो कृपानिधे, कर्तव्य मार्गपर डट जायें।
पर सेवा पर उपकार करें, हम जीवन सुफल बना जायें॥
अति दीन दुखी निरबल उनके, सेवक बनकर संताप हरें।
जो हैं अटके भूले भटके, उनको तारें खुद तर जायें॥
छल द्वेष कपट पाखण्ड झूठ, अन्याय से निसदिन दूर रहें।
जीवन हो शुद्ध सरल अपना, सुचि प्रेम सुधा रस बरषावें॥
निज आन मान मरियादा का, प्रभु ध्यान रहे सम्मान रहे।
जिस देश जाति में जन्म लिया, बलिदान उसीपर हो जायें॥

(८)

भगवान आपके मन्दिर में, मैं तुम्हें रिझाने आई हूँ।
वाणीं में तनिक मिठास नहीं, पर विनय सुनाने आई हूँ॥टेर॥
प्रभुका चरनामृत लेने को, है पास मेरे कोई पात्र नहीं।
आँखों के दोनों प्यालों में, कछु भीख माँगनें आई हूँ॥ १ ॥
तुमसे लेकर क्या भेंट धरूँ, भगवान आपके चरनों में।
मैं भिक्षुक हूँ तुम दाता हो, सम्बन्ध बतानें आई हूँ॥ २ ॥
सेवा को कोई वस्तु नहीं, फिर भी मेरा साहस देखो।
रो रो कर आज आँसुओं का, मैं हार चढ़ानें आई हूँ॥ ३ ॥

सच्चा सुख

(९)

मिलता है सच्चा सुख केवल
भगवान आपके चरणों में॥
यह विनती है पल पल छिन छिन,
रहे ध्यान आपके चरणों में॥टेर॥
चाहे वैरी सब संसार बने,
चाहे जीवन मुझ पर भार बने।
चाहे मौत गले का हार बने,
रहे ध्यान आपके चरणों में॥ १ ॥
चाहे अगनी में मुझे जलना हो,
चाहे काँटो पे मुझे चलना हो।
चाहे छोड़के देश निकलना हो,
रहे ध्यान आपके चरणों में॥ २ ॥
चाहे संकट ने मुझे घेरा हो,
चाहे चारों तरफ अँधेरा हो।
पर मन नहिं डग मग मेरा हो,
रहे ध्यान आपके चरणों में॥ ३ ॥

जिह्वा पर तेरा नाम रहे,
तेरा ध्यान सुबह और शाम रहे।
तेरी याद तो आठों याम रहे,
रहे ध्यान आपके चरणों में॥ ४॥

दोहा

धन्य ये मानुष जनम है, धन्य है भारत देस।
धन्य हमारे संत जन, धन्य है गीताप्रेस॥

(१०)

धन्य हमारा भारत देश, धन्य धन्य है गीताप्रेस॥ टेर॥
धन्य भागवत संत हमारे जग हितकारी प्रभु के प्यारे।
धन्य हमारा गीता ग्रन्थ, धन्य सनातन वैदिक पंथ॥
धन्य हमारा भारत देश॥ १॥
धन्य गंग जमुना की धारा, धनि धनि रामकृष्ण अवतारा।
धन्य हमारा मानस ग्रन्थ, धन्य हमारे तुलसी संत॥
धन्य हमारा भारत देश॥ २॥
धन्य अयोध्या मथुरा काशी, धन्य गौरिशंकर कैलाशी।
धन्य हमारे प्रभु का नाम, राधा माधव सीता राम॥
धन्य हमारा भारत देश॥ ३॥

गीताप्रेस

(११)

तर्ज—आवो बच्चों तुम्हें दिखायें

भाई बहनो पढ़कर देखो पुस्तक गीताप्रेस की।
इस पुस्तक में भरा खजाना निधि है इस देश की॥
राधे गोविन्द भजो राधे गोविन्द॥ टेर॥
खाली हाथ कभी ना जाना, पढ़कर जाना भाईजी।
पुस्तक गीताप्रेस की ये, गोरखपुर से आई जी॥
भवसागर को पार करोगे, जै बोलो सर्वेश की॥ इस॥ १॥

राधे गोविन्द भजो राधे गोविन्द
गन्दी पुस्तक पढ़ लोगे तो, बिगड़े सारी जिन्दगी।
औरों को पढ़ने दोगे तो, फैलावोगे गन्दगी॥
दुर्गुण तजकर सद्‌गुण लावो, छोड़ो चाल विदेश की॥ इस॥ २॥
राधे गोविन्द भजो राधे गोविन्द
ऐसी पुस्तक और कहीं पर नहीं मिलेगी माताजी।
कलजुग में कल्याण करो तो, खुला पड़ा है खाता जी॥
इससे बढ़कर और नहीं है, करो पढ़ाई शेष की॥ इस॥ ३॥
राधे गोविन्द भजो राधे गोविन्द
यह झूठा उपन्यास नहीं है, ज्ञान भरा है गीता का।
सुमिरन कर लो राधा माधव, रामचन्द्रजी सीता का॥
रामचरितमानस में देखो, लीला है अवधेश की॥ इस॥ ४॥

आपने क्या कमाई की?

(१२)

गोविन्दो नहिं गायो जगमें, क्या कमायो बावरा॥टेर॥
माटी का एक बूत बनाया, धर्‌यो आदमी नाम रे।
आपहि हाले आपहि चाले, भलो बसायो गाँव रे॥ १॥
अहरन की चोरी करे रे, करे सुई को दान रे।
ऊपर चढ़कर देखन लाग्यो, कब आवे बीमान रे॥ २॥
आकड़े का पेड़ लगावे, खायो चाहवे आम रे।
जे तूँ प्रानी सुख चाहवे तो, रट ले हरि को नाम रे॥ ३॥
पत्थर की तो नाव बनाई, उतर्‌यो चाहवे पार रे।
कहत कबीर सुनो भाइ साधो, डूबेगी मझधार रे॥ ४॥

गीता-स्तुति

(१३)

जय जग जननी जगत वन्दिनी,
जय जय भगवद गीता॥ टेर॥

गनपति लिखित कथित केशव मुख, वेदव्यास भनीता।
श्री मूरति नर नारायण की, प्रगट भई जग हीता॥ १॥

तत्वविवेचनि भव दुख मोचनि, उज्ज्वल परम पुनीता।
करमयोग अरु ग्यान भक्ति की, परमानन्द सरीता॥ २॥

साधक की संजीवनि बूँटी, बड़ भागी जन पीता।
समता बोध प्रेम नर पावे, मुक्त होइ वह जीता॥ ३॥

दरपन सुचि सिद्धान्त सत्य की, पक्ष वाद तें रीता।
अरथ भाव का अन्त न पावै, नित नित नव दरसीता॥ ४॥

गीता क्यों नहीं पढ़ते?

(१४)

जनम जाय बीता, पढ़ो क्यों न गीता।
पढ़ो क्यों न गीता, सुनो क्यों न गीता॥ टेर॥

ये हड्डियों का पिंजरा, कभी गिर पड़ेगा।
निकल जायेगा दम, तो फिर क्या करेगा।
उठा ले चलेंगे, लगेगा पलीता॥ १॥

तूँ किस देश का है, कहाँ बस रहा है।
बिषय वासनाओं में, क्यों फँस रहा है।
मानुष जन्म पाके, ना रह जाय रीता॥ २॥

तू है अंश ईश्वर का, मालिक वो तेरा।
बुलाता तुझे कहके, मेरा तूँ मेरा।
उसीकी शरण ले के, हो जा नचीता॥ ३॥

बदलता है उसका ना, पकड़ो सहारा।
कभी ना बदलता है, वो ही तुम्हारा।
वही कृष्ण राधा, वही राम सीता॥ ४॥

हमारी मातेश्वरी गीता

(१५)

धर्म ग्रंथों में है सबसे बड़ी मातेश्वरी गीता।
हरी मुख शब्द रतनों से जड़ी मातेश्वरी गीता॥टेर॥
किसी भी वर्ण में कोई, किसी भी धर्म में कोई।
करे कल्याण सब जग का, हमारी मातु यह गीता॥१॥
जगत में धर्म हैं जितने, अनेकों मत मतान्तर हैं।
बताती सार सब मत का, हमारी मातु यह गीता॥२॥
करो सेवा सकल जग की, छोड़ आसक्ति ममता को।
तजो अहँकार फल इच्छा, सिखाती योग यह गीता॥३॥
इन्द्रियाँ बुद्धि तन धन जन, हटा लो सबसे अपनापन।
रहो ईश्वर के होइ शरन, पढ़ाती प्रेम यह गीता॥४॥
देह संसार नहिं कायम, बदलता मिट रहा हरदम।
करो अनुभूति आप स्वयं, कराती बोध यह गीता॥५॥

(१६)

जय जय जग जननी भगवद्‌गीता, हरि मुख की बानी॥टेर॥
जितने धर्म ग्रंथ सबकी सिरमौर महारानी।
जगत गुरु श्रीकृष्ण बड़े ठाकुर की ठकुरानी॥१॥
हिन्दू मुस्लिम बौध इसाई हितकर सब मानी।
मानव मात्र लेत शिक्षा तुम सबकी गुरुआनी॥२॥
सीखे पढ़े कला कौशल नर खोई जिंदगानी।
गीता अमृत पीवत हो गए बड़े भक्त ग्यानी॥३॥
जो नर ऐसा गर्व करे हम हैं हिन्दुस्तानी।
भगवद्‌गीता पढ़ी नहीं कैसा हिन्दुस्तानी॥४॥
बिछुड़ गया प्रभुसे जब प्रानी हुई बड़ी हानी।
गीता का नित पाठ करे तो होत महरबानी॥५॥

गीता माँकी दीक्षा और आजकी शिक्षा

(१७)

सब जग ईश्वर रूप लखावे, गीता माँ की दीक्षा है।
ईश्वर नाम निशान मिटावे, भ्रष्ट आज की शिक्षा है॥ टेर ॥
दैवी संपति के गुन लावे, गीता माँ की दीक्षा है।
असुर भाव जगमें फैलावे, भ्रष्ट आज की शिक्षा है॥ १ ॥
पैंड पैंड पर धरम सिखावे, गीता माँ की दीक्षा है।
धरम विरोधी पाठ पढ़ावे, भ्रष्ट आज की शिक्षा है॥ २ ॥
स्वारथ छोड़ करो जग सेवा, गीता माँ की दीक्षा है।
कारन बिना बने दुख देवा, भ्रष्ट आज की शिक्षा है॥ ३ ॥
हरि अरपित शुचि भोजन पाना, गीता माँ की दीक्षा है।
अण्डे, मांस तामसी खाना, भ्रष्ट आज की शिक्षा है॥ ४ ॥
सबही के हित में रत रहना, गीता माँ की दीक्षा है।
औरों का उतकर्ष न सहना, भ्रष्ट आज की शिक्षा है॥ ५ ॥
ऊपर अलग एक हो भीतर, गीता माँ की दीक्षा है।
ऊपर एक अलग हो भीतर, भ्रष्ट आज की शिक्षा है॥ ६ ॥
सब महँ आत्म भाव अपनाना, गीता माँ की दीक्षा है।
बरन भेद तजि सँग महँ खाना, भ्रष्ट आज की शिक्षा है॥ ७ ॥
अक्षय सुख का अनुभव करना, गीता माँ की दीक्षा है।
राग द्वेष महँ हरदम जलना, भ्रष्ट आज की शिक्षा है॥ ८ ॥
एक लालसा हरी मिलन की, गीता माँ की दीक्षा है।
एक लालसा धन मिलने की, भ्रष्ट आज की शिक्षा है॥ ९ ॥
बिनु दीक्षा के घातक शिक्षा, देखो करो परीक्षा है।
वो शिक्षा भारत में कैसें, यह ही बड़ी समीक्षा है॥ १० ॥

पाप कर्म ईश्वर नहीं कराते ! मनुष्य ही आसक्तिवश करता है।

(१८)

उथल पुथल मचि रही जगत में, उलटे मारग जाते हैं।
लोग कहे ईश्वर ही हमसे, पाप करम करवाते हैं॥ टेर ॥
पहले लिख धर दिया शीश पै, पाप करम का भारा है।
कैसे बचें बुरे करमों से, क्या अपराध हमारा है॥
डींग हाँकते रहते ऐसें, हरदम पाप कमाते हैं॥ लोग १ ॥
अगर पाप ईश्वर करवाते, मुक्त न कोई रह पाता।
संत शास्त्र उपदेश न रहते, धरम करम शुभ उठ जाता॥
क्या करना अरु क्या नहिं करना, कौन किसे यह समझाता।
सभी बुराई करने लगते, विप्लव जगमें मच जाता॥
मलिन बुद्धि के लोग जगत में, गलत बात फैलाते हैं॥ लोग २ ॥
दिया बड़ा अधिकार पुरुष को, कृपा करी जगदीश्वर ने।
स्वारथ में अन्धे होकर नर, लगे अहित जगका करने॥
हो आसक्त अधर्म करे खुद, ईश्वर पर सब थोप दिया।
राग द्वेष के वशमें होकर, बीज कलुष का रोप दिया॥
एक घड़ी भर सत पुरुषों की, संगत में नहिं जाते हैं॥ लोग ३ ॥
गीता त्रय अध्याय श्लोक सैंतीस, कृष्ण की बानीं है।
धन संग्रह भोगों की इच्छा, सब पापों की खाँनी है॥
बिना कामना कोई भी नर, पाप करम नहिं कर सकता।
पाप करम करने से प्राणीं, भव से कभी न तर सकता॥
भजो हरी को तजो कामना, संत शास्त्र समझाते हैं॥ लोग ४ ॥

गायक और लायक

(१९)

जब राम गुन गाया नहीं, गायक हुआ तो क्या हुआ।
माँ बाप मन भाया नहीं, लायक हुआ तो क्या हुआ॥ टेर ॥

पढ़ सुन के बातें बहुत सी, कहता फिरे सब जगत को।
अपना सुधार नहीं किया, शिक्षक हुआ तो क्या हुआ॥ १॥
घर छोड़ कर त्यागी बना, छोड़ी न कंचन कामिनी।
वैराग्य जब भीतर नहीं, त्यागी हुआ तो क्या हुआ॥ २॥
वोटों से बाजी जीत कर, लेता है पक्ष अधर्म का।
पुतला बना वह पाप का, नेता हुआ तो क्या हुआ॥ ३॥
सतसंग जग सेवा के खातिर, खर्च धन करता नहीं।
गउओं की रक्षा नहिं करी, धनपति हुआ तो क्या हुआ॥ ४॥
मल मल के तन को खूब धोया, घिस के साबुन से सदा।
मन मैल को धोया नहीं, सुन्दर हुआ तो क्या हुआ॥ ५॥

भगवत्-प्रार्थना

(२०)

तुमको भूलूँ अब नहिं नाथ, दासपर ऐसी कृपा करो।
चढ़े रहो चित ऊपर मेरे, कबहू नायँ टरो॥टेर॥
बिकल रहूँ दरशन बिनु तेरे, ऐसी आग लगा दो मेरे।
जिन्दा रह नहिं सकूँ एक पल, ऐसी लगन भरो॥ १॥
चाहूँ स्वर्ग नरक में डारो, सुख चाहूँ तो दुख मत टारो।
प्यारे लगते रहो मुझे तुम, दूजी चाह हरो॥ २॥
माँ माँ कह बालक अकुलावे, ले गोदी झट हृदय लगावे।
आप अनन्त जनम की माता, धीरज काहे धरो॥ ३॥

भूलूँ नहीं

(२१)

ऐसी कृपा करो हे नाथ, आपको कबहू ना बिसरूँ॥टेर॥
विमुख हुआ तुमसे हरिराई, अगनित जन्म ठौकरें खाई।
मिला नहीं बिसराम कहींपर, जनमूँ सदा मरूँ॥ १॥

चाह रहित बिचरूँ जगमाहीं, आश रहे किससे कछु नाहीं।
निसदिन पूजा करूँ आपकी, जो कछु काज करूँ॥ २॥
सयन करूँ जागूँ उठि जाऊँ, प्रभु का नाम सुमिरि गुन गाऊँ।
परिकम्मा नित करूँ आपकी, जहँ जहँ पाँव धरूँ॥ ३॥
जब जब जैसा स्वाँग सजावो, जानउँ नहिं तो मोहि जनाओ।
निरखौं नित नव छबी आपकी, हियमहँ आनि भरूँ॥ ४॥
अब मत नाथ मोहि तरसाओ, जैसा हूँ मुजको अपनाओ।
पड़ा रहूँ चरनों में हरदम, पल छिन नायँ टरूँ॥ ५॥

दरश भिखारी

(२२)

घनश्याम तुम्हारे द्वारेपर, एक दरश भिखारी आया है।
दो नयन कटोरों में आँसू, भर भेंट चढ़ाने आया है॥टेर॥
चलो श्याम चलो बाजे नूपुर ध्वनि,
एक ताल पै बाँसुरियाँ गूँजे।
मन भावना रूपी गोपिन्ह ने, हृद धाम में रास रचाया है॥ १॥
मन प्रेम के सुन्दर मण्डप में, दिन रात जुगल जोड़ी झूले।
घनश्याम तुम्हारे झूलन को, एक सुन्दर बाग लगाया है॥ २॥
मैं तुम्हमें बसूँ तुम्ह मुजमें बसो, पूरन हो भगत की अभिलाषा।
तुम्ह एक अनेक हो मनमोहन, जंजाल से जग भरमाया है॥ ३॥

मैं आपका हूँ

(२३)

मैं आपका हूँ आपका हूँ आपका रहूँगा॥टेर॥
आपके दरवाजेका मैं हूँ भिखारी,
दाताकी महिमा सुनाता रहूँगा॥ १॥

आपके ही दासोंके दासोंका सेवक,
मन्दिरोंमें झाड़ू लगाता रहूँगा ॥ २ ॥
आपहीके चरणोंका मैं हूँ पुजारी,
अँसुवों की माला चढ़ाता रहूँगा ॥ ३ ॥

एक निश्चय

(२४)

मुझे है काम ईश्वर से, जगत रुठे तो रुठण दे ॥टेर॥
कुटुम्ब परिवार सुत दारा, माल धन लाज लोकनकी।
हरीके भजन करने में, अगर छूटे तो छूटण दे ॥ १ ॥
बैठ सन्तों की संगत में, करूँ कल्याण मैं अपना।
लोक दुनियाँ के भोगों में, मौज लूँटे तो लूटण दे ॥ २ ॥
प्रभूके ध्यान करने की, लगी दिलमें लगन मेरे।
प्रीत संसार विषयों से, अगर टूटे तो टूटण दे ॥ ३ ॥
धरी सिर पापकी मटकी, मेरे गुरुदेवने झटकी।
वो ब्रह्मानन्दनें पटकी, अगर फूटे तो फूटण दे ॥ ४ ॥

फरियाद

(२५)

पतित पावन तरन तारन, मेरी फरियाद सुन लेना ॥
तेरे चरणों में मस्तक है, मुझे अपना बना लेना ॥टेर॥
सुना है पार करते नाव, तुम पतितों अनाथों की।
भँवर बिच है मेरी नैया, किनारे से लगा देना ॥ १ ॥
बढ़ाया चीर द्रौपदिका, ओ राखी लाज भक्तोंकी।
तुम्हारी ही दया है शूलको आसन बना देना ॥ २ ॥
यह दुनियाँ पापकी बस्ती, बिछा है जाल स्वारथका।
छुड़ाके पापसे मुझको, पास अपने बुला लेना ॥ ३ ॥

सब आपका; आप मेरे

(२६)

तूँ मेरा है तूँ मेरा है, जो मिला हुआ सब तेरा है।
तूँ मेरा है तूँ मेरा है, यह रचा हुआ सब तेरा है॥टेर॥
दौड़त कोई पकड़े छाया, ऐसी अजब रची तूँ माया।
मैं मूरख देखत ललचाया, कैसा गजब चितेरा है॥ १ ॥
मैं तो रहा सदा मुख मोड़े, फिर भी तूँ मुजको नहिं छोड़े।
जैसे गाय बच्छ सँग दौड़े, करता लाड घनेरा है॥ २ ॥
पाया कष्ट बहुत गफलत में, अब लिखकर देता हूँ खत में।
मेरा कुछ भी नहीं जगत में, जो कुछ है सब तेरा है॥ ३ ॥
तूँ ही मात पिता अरु भ्राता, तूँ मेरा स्वामी सुखदाता।
मेरा एक तुमहिं से नाता, तुम बिन घोर अँधेरा है॥ ४ ॥
तुम बिन कोई रहा न जगमें, रमा हुआ मेरे रग रग में।
पल भर रह नहिं सकूं अलग मैं, जहँ रवि तहाँ उजेरा है॥ ५ ॥

दर्शनकी भीख

(२७)

दिला दो भीख दर्शनकी प्रभू तेरा भिखारी हूँ॥टेर॥
चलकर दूर देशोंसे, तेरे दरबार में आया।
खड़ा हूँ द्वार पै दिलमें, तेरी आशा का धारी हूँ॥ १ ॥
फिरा संसार चक्कर में, भटकता रात दिन बिरथा।
बिना दीदार के तेरे, हमेशा मैं दुखारी हूँ॥ २ ॥
तुहीं माता पिता बन्धू, तुहीं मेरा सहायक है।
तेरे दासन के दासों का, चरण का सेवकारी हूँ॥ ३ ॥
भरा हूँ पाप दोषों से, क्षमा कर भूलको मेरी।
वो ब्रह्मानन्द सुन विनती, शरणमें मैं तिहारी हूँ॥ ४ ॥

प्रार्थना

(२८)

तोसे अरज करूँ साँवरिया, मोसे मन नहिं जीत्यो जाय॥टेर॥

मन मेरा यह चंचल भारी, छिन छिन लेवे राड़ उधारी।
तोड़ फेंक दे ज्ञान पिटारी, ना कछु पार बसाय॥मोसे० १॥

मन मेरा यह चंचल घोड़ा, सत्सँग का माने नहिं कोड़ा।
ज्ञान ध्यान का लंगर तोड़ा, पल छिनमें हिहिनाय॥मोसे० २॥

मन हस्थी काबू नहिं मेरे, न्हाय धोय सिर धूल बखेरे।
महावत को भी नीचा गेरे, जरा नहीं भय खाय॥मोसे० ३॥

कैसे राखूँ मनको वशमें, मन कर राखा मुझको वश में।
तुलसी का मन विषय कुरस में, पल पल में ललचाय॥मोसे० ४॥

(२९)

प्रभु मेरे अवगुन चित ना धरो।
समदरशी प्रभु नाम तिहारो, चाहो तो पार करो॥टेर॥

एक लोहा पूजा में राखत, एक घर बधिक परो।
सो दुविधा पारस नहिं देखत, कंचन करत खरो॥

एक नदियाँ एक नाल कहावत, मैलो नीर भरो।
जब मिलिके दोऊ एक बरन भये, सुरसरि नाम परो॥

एक माया एक ब्रह्म कहावत, सूर श्याम झगरो।
अबकी बेर मोही पार उतारो, नहिं पन जात टरो॥

(३०)

दीन बन्धु दीनानाथ मेरी सुध लीजिये॥टेर॥

भाई नाहीं बन्धु नाहीं, कुटुम्ब कबीलो नाहीं,
ऐसो कोई मित्र नाहीं स्वारथ बिन रीझिये॥१॥

सोने की सलैया नाहीं, रूपे का रूपैया नाहीं,
कौड़ी पैसा पास नाहीं जासौं कछु कीजिये॥ २॥
खेती नाहीं बाड़ी नाहीं, बनिज व्यापार नाहीं,
ऐसो कोई साहू नाहीं, जाहिसौं पतीजिये॥ ३॥
कहत मलूकदास, छोड़ दे पराई आश,
प्रभु के शरण रह के बाहर न पसीजिये॥ ४॥

(३१)

मालिक से मेरी कब सुनवाई होगी॥ टेर॥
लिखता हूँ अरजी पै अरजी, कहौ तुम्हारी क्या है मरजी,
हमको चैन नहीं पल भरजी, कैसी विपति मैने भोगी॥ १॥
ज्यों बालक दुखिया जननी बिन, जैसे काला नाग मनी बिन,
जैसे सिंघ ना रहे बनी बिन, जुगत बिना जैसे जोगी॥ २॥
अब मैं रहा न इधर उधर का, ना मैं घर का ना बाहर का,
जैसे पंछी है बिनु पर का, पिया बिन नार बियोगी॥ ३॥
अब तो दरशन दो नन्दलाला, मत लो मोहन हमसें टाला,
शंकरदास करो प्रतिपाला, देवो दवाई मैं हूँ रोगी॥ ४॥

(३२)

तुम मेरी राखो लाज हरी,
तुम जानत प्रभु अन्तर्यामी, करनी कछु ना करी।
अवगुन मोते बिसरत नाहीं, पल छिन घरी घरी।
सब प्रपंच की पोट बाँधके, अपने शीश धरी।
सुत दारा धन मोह लियो हैं, सुधि बुधि सब बिसरी।
सूर पतित को बेगि उबारो, अब मेरी नाव भरी।

(३३)

सभा में मेरा तुमहीं करोगे निसतारा॥ टेर॥
मीराँबाई सदन कसाई, नामदेव की छान छवाई,
कबीर के घर बालद लाई, आप बने बनजारा॥ १॥
जब मैं तुझको याद किया था, जहँ देखूँ मौजूद खड़ा था,

नरसीजी का भात भरा था, सबही कारज सुधारा॥ २॥
बलि छलने ब्राह्मण बनि आये, द्रौपदि के तुम्ह चीर बढ़ाये,
खम्भ फाड़ प्रहलाद बचाये, हिनाकुश को मारा॥ ३॥
भारत में भीषम प्रन राख्यो, गीता शास्त्र जुद्ध महँ भाख्यो,
सारथि बन अरजुन रथ हाँक्यो, भूमि का भार उतारा॥ ४॥

(३४)

अब सौंप दिया इस जीवन का सब भार तुम्हारे हाथों में।
यह जीत तुम्हारे हाथों में अरु हार तुम्हारे हाथों में॥टेर॥
यह जीत हार सब तेरी है, मेरा इस जगमें कुछ भी नहीं।
मैं जैसा हूँ प्रभु तेरा हूँ, उपचार तुम्हारे हाथों में॥ १॥
मेरी तड़फन बस एक यही, एक बार तुम्हें पा जाऊँ मैं।
अरपण कर दूँ दुनियाँ भर का, सब प्यार तुम्हारे हाथों में॥ २॥
यदि मानुष का मोहि जन्म मिले, तेरे दासों का दास बनू।
फिर अन्त समय में प्राण तजूँ, सरकार तुम्हारे हाथों में॥ ३॥
तुझमें मुझमें बस भेद यही, मैं नर हूँ तुम नारायण हो।
जो चाहो मुझसे करवा लो, यह डौर तुम्हारे हाथों में॥ ४॥

सावधान

(३५)

जागो सज्जन वृन्द हमारे, मोह निशाके सोवन हारे॥टेर॥
जागो जागो हुआ सबेरा, मोह निशा का उठ गया डेरा,
ज्ञान भानुने किया उजेरा, आशा दुखद अस्त भये तारे॥ १॥
सोते सोते जनम गमाया, अब तक चैन कभी नहीं पाया
देह गेह में मन भरमाया, होय रहे मदमें मतवारे॥ २॥
यह घर बार जगत् सब सपना, सुत वित्त दारा कोई नहिं अपना
मैं मेरे की तजो कलपना, परमेश्वर के हो तुम्ह प्यारे॥ ३॥

यह संसार रात अँधियारी, सो रहि जिसमें दुनियाँ सारी,
जागे कोई सन्त हितकारी, परमारथ पथ के उजियारे॥ ४॥
जागो सत संगत में आवो, आकर परम शान्ति को पावो
जनम-मरण से पिण्ड छुटावो, कट जावे दुख शंकट भारे॥ ५॥
जानो तबहि कि अब हम जागे, जब मन विषयों से खुद भागे,
चित हरि चरणन में अनुरागे, राग-द्वेष भय मिट गये सारे॥ ६॥
सीता पति रघुपति रघुराई; राधा पती कृष्ण यदुराई,
श्री माधव गोविन्द सुखदाई, मंजुल नाम जपो सुखकारे॥ ७॥

उस दिनकी तैयारी

(३६)

कुछ उस दिन की भी सार करो।
लेखा-जोखा उस मालिक को, सँभलाना तैयार करो॥टेर॥
क्या करने जगमें आये थे, क्या आज्ञा प्रभु की लाये थे।
याद है क्या वहाँ कौल किया था, अन्तर की संभार करो॥ १॥
पूरन काम हुआ क्या अपना, बोलो बाकी क्या है कितना।
देखो समय भागता जाता, इसका सोच विचार करो॥ २॥
क्षणभंगुर यह जीवन भाई, सब जीवों की करो भलाई।
बुरा किसी का कभी न सोचो, सबसे हित व्यवहार करो॥ ३॥
खाते सदा नमक हो जिसका, काम करो तन मन से उसका।
मिला हुआ अपना मत मानो, झूठा मत अधिकार करो॥ ४॥
करम करे वह बल भी प्रभुका, सब करमों का फल भी प्रभुका।
हम भी प्रभु के सब कुछ प्रभु का, प्रभु से सब मिल प्यार करो॥ ५॥

भारत माँके लाल

(३७)

जागो भारत माँ के लाल, राम के भक्त बनो तुम वीर॥टेर॥
जैसे हनूमान बल धारी, खोज लई सीता महतारी,
असुर मार लंकापुर जारी,
आकर खबर दई सीता की, रिनियाँ भये रघुबीर॥ १ ॥
ब्रह्म मुहूरत में उठ जाओ, उठकर हरिका ध्यान लगाओ।
मात पिता गुरु पद सिर नाओ,
परमेश्वर से करो प्रार्थना, हरो नाथ भव पीर॥ २ ॥
द्विज हो तो नित संध्या करना, सेवा धर्म शूद्र का बरना
परम धरम भव सागर तरना,
निज निज धरम करो तुम पालन, कटे करम जंजीर॥ ३ ॥
सब जीवों का हित अपनाओ, दीन दुखी को गले लगाओ।
दुष्टों से तुम भय मत खाओ,
देश भक्ति अरु धर्म नीति में, सजग रहो धरि धीर॥ ४ ॥
दुबला मैला मन मत करना, पीछें पाँव कभी मत धरना।
जगमें होय निशंक विचरना,
डट अधर्म का करो सामना, हरी तुम्हारे सीर॥ ५ ॥

शिक्षाप्रद पत्र—सन्तानके लिये

(३८)

ताल-रूपक

तुम भूलना सब कुछ मगर, माँ-बाप को मत भूलना।
करजा बहुत माँ-बाप का, सिर पर चढ़ा मत भूलना॥टेर॥
मुखड़ा तुम्हारा देखनें, पूजे थे देवी-देवता।
जन्मे तो सब हर्षित हुये, इस बात को मत भूलना॥ १ ॥

थाली बजा खुशियाँ मना, एकत्र सबको कर लिया।
घर-घर फिरे लड्डू बँटाये, स्नेह यह मत भूलना॥ २ ॥
बचपन में जब रोगी हुआ, कड़वी दवा माँ खावती।
टोना किया नजरें उतारी, वह घड़ी मत भूलना॥ ३ ॥
माता के कपड़े कीमती, मल-मूत्र सें मैले किये।
धो-पौंछ कर छाती लगाया, प्यार यह मत भूलना॥ ४ ॥
सरदी की ठण्डी रात में, बिस्तर सभी गीले किये।
तब साफ कर सूखे सुलाया, वह घड़ी मत भूलना॥ ५ ॥
गोदी बिठाकर ग्रास अपना, तोड़ कर मुखमें दिया।
तूँ उगल वापिस थूक भरता, वह समय मत भूलना॥ ६ ॥
माँ ने सिखाया बैठना जब, तूँ लुढ़क गिरता वहाँ।
फिर बोलना चलना सिखाया, वह समय मत भूलना॥ ७ ॥
अब तो बड़ी बातें बनाता, देन यह माँ-बाप की।
तुम छेद मत करना कलेजे, युग-युगों मत भूलना॥ ८ ॥
तुमने कमाया धन बहुत, माँ-बाप को सुख ना दिया।
धिक्कार है ऐसी कमाई, बात यह मत भूलना॥ ९ ॥
धन से सभी वस्तु मिले, माता-पिता मिलते नहीं।
नित शीश चरणों में झुकावो, बचन यह मत भूलना॥ १० ॥
तुम अगर निज सन्तान से, सुख मिलन की आशा करो।
खुश हो सदा माँ-बाप की, सेवा करो मत भूलना॥ ११ ॥
थी मात कैकइ पिता दशरथ, बचन प्रभु टाला नहीं।
लंका विजय कर आ गये, श्री राम को मत भूलना॥ १२ ॥

ब्रह्मचर्य

(३९)

क्यों हुआ देश मतवाला, ब्रह्मचर्य नष्ट कर डाला॥टेर॥
पवन पुत्र हनुमान बली ने, कैसा बल दिखलाया था।

ब्रह्मचर्य के प्रताप से वो, लंका जाय जलाया था॥
रावण कुल से अंगद का वह पैर टला नहिं टाला॥ १॥
शक्ती खाय उठे लक्ष्मणजी, कैसा शब्द मचाया था।
मेघनाद से शूरवीर को, पलमें मार गिराया था॥
रामायण को पढ़कर देखो, यह इतिहास निराला॥ २॥
जमदगनी-सुत परसराम को शूरवीर पहिचाना है।
बाल ब्रह्मचारी भीषम को, जानत सकल जहाना है॥
उनके बल से सब जग काँपे पड़ न जाय कछु पाला॥ ३॥
ब्रह्मचर्य को धारण कर लो, ये ही दवा अनूठी है।
मुरदे को जिन्दा करने में, यह संजीवन बूँटी है॥
इन्द्र कहे कमजोरी को तुम दे दो देश निकाला॥ ४॥

भारतकी माताओंसे

(४०)

तुम सुनियो भारत-नारी क्या हो गई दशा तुम्हारी॥टेर॥
रामचन्द्र अरु लक्ष्मण जैसे, तुमने गोद खिलाये थे।
भीषम अर्जुन भीमसेन से, तुमने योधा जाये थे॥
पीर पिशाच पूजके अब तुम, पैदा किये मदारी॥ १॥
सीता द्रौपदि दमयन्तीने, कैसा पतिव्रत धारा था,
सहे हजारों कष्ट ये लेकिन, धर्म से पग नहिं टारा था॥
पति-सेवा के बदले में अब, देत हजारौं गारी॥ २॥
राजा रतनसिंह की रानी, पदमावती सयानी थी।
अपने पति को लिया छुड़ा के, बीर बड़ी मरदानी थी॥
मर कर गई पती के सँगमें ऐसा पतिव्रत धारी॥ ३॥
‘इन्द्र’ कहे भारत की नैया, तुमहीं उबारोगी बहना।
विद्या पढो पतिव्रत धारो, ये ही है उत्तम गहना॥
बिन विद्या के हाय तुम्हें अब, कहते नार गँवारी॥ ४॥

पातिव्रत-धर्म पालनसे कल्याण

(४१)

तर्ज—रसिया

बहनो ऐसा गहना पहनो, जासौं सुधरे सब संसार॥टेर॥
सती-धर्म की पहनो साड़ी, पती-प्रेम की लगे किनारी,
शीश-सिन्दूर भाल की बिन्दी, पतिव्रत तेज अपार॥ १॥
सील स्वभाव आँख का सुरमा, वाणी मधुर गले का गहना,
कथा श्रवण कानों का कुण्डल, हरि-सुमिरन का हार॥ २॥
बल के बाजूबन्द पहन लो, कारीगरी के कड़े पहन लो,
सास-ससुर की सेवा का, हतफूल जड़ाऊदार॥ ३॥
पतिव्रत धर्म प्रेम से पालो, इसी नियम को कभी न टालो,
पतिव्रता नारी का जग में, होवे बेड़ा पार॥ ४॥

धनके गुलाम मत बनो!

(४२)

सन्त कहे हरि-भजन करो रे, लोग मरे रुपियाँ ताईं।
हाय रुपैया होय रुपैया, आग लगी सब जग माहीं॥ टेर॥
खाऊँ-खाऊँ करे रात दिन, धरम करम शुभ छोड़ दिया।
नाशवान का लिया सहारा हरि से नाता तोड़ दिया॥
उपजा दोश यहीं सों सारा फल लागे अति दुखदाई॥ हाय० १॥
घर-त्यागी क्या ग्रस्थी देखो, लोलुपता सबके लागी।
अन्न वस्त्र जल दाता देवे, भीतर भूख नहीं भागी॥
सारा धन मुझको मिल जावे, मिटे नहीं यह मँगताई॥ हाय० २॥
बड़ा आदमी कौन जगत् में, धन से काँटे पर तोले।
धन लेकर बेटा परणावे, लेण-देण पहले खोले॥
स्वारथ अन्ध हो गया जबसों, आगें की सूझत नाहीं॥ हाय० ३॥

मान बड़ाई धन कुटुम्ब के, सुख में इतना फूल गया।
मैं हूँ कौन? कहाँ से आया? क्या करना? यह भूल गया॥
जैसे फिरे बैल घाणी का, आँखों पर पट्टी छाई॥ हाय० ४॥

अगणित पाप करे धन के हित, बुरा-बुरा व्यवहार करे।
झूठ कपट छल धौखेबाजी, चोरी का व्यापार करे॥
मरते समय पाप सँग जावे, मार पड़े जमपुर माहीं॥ हाय० ५॥

असत् वस्तु का छोड़ सहारा, सुख की आशा तजिये रे।
नाशवान तो नाश करेगा, अविनाशी को भजिये रे॥
नर-तन जनम सुफल हो जावे, सतसंगत करिये भाई॥ हाय० ६॥

धनका सदुपयोग करो!

(४३)

धन का लोभी सुख का भोगी उसके बड़ी बिमारी।
धन का पद का गर्व करे वह नरकों का अधिकारी॥टेर॥

धन के कारन बड़ा समझता खुद ही हो गया छोटा।
भीतर आग लगी तृष्णा की ऊपर दीखे मोटा।
खोया मानुष जनम इसी में समझे यह हुँसियारी॥ १॥

पद अधिकार लालसा धन की घमंड में रहे फूला।
सत पुरुषों का संग करे नहिं भटकत मारग भूला।
धन ही उनके इष्ट देवता धन का वही पुजारी॥ २॥

चेतन होकर जड़ पदार्थ से गठबंधन खुद जोड़ा।
जिस प्रभु का वह अंश सनातन उससे नाता तोड़ा।
अपना मूल्य घटा कर करता धन की ताबेदारी॥ ३॥

जिन्ह के कछु भी चाह नहीं है वे ही बड़े कहाते।
उन्ह से होता हित सबही का गीत प्रभू का गाते।
सच्चे शरणागत वे प्रभु के सदगुन के भंडारी॥ ४॥

(४४)

बगुला भगती न कीजिये, जगमें होय हाँसी।
जम्म पकड़ ले जायँगे, डारे गल बिच फाँसी॥टेर॥
बगुला धोली पांख का, मनमहँ कुटिलाई।
आँख मूंद मौनी भयो मछली गटकाई॥ १ ॥
बिल्लि कथामें बैठ के सिर दीपक राखे।
चूहा देखत दौड़ि के झट मुखमहँ भाखे॥ २ ॥
जैसे जल बिच कूंजरा न्हावत जल पूरा।
जल से बाहर होत ही सिर डारत धूरा॥ ३ ॥
लाख पिघल पानी भई पावक के संगा।
पल छिन न्यारी होत ही कियो काठ सो अंगा॥ ४ ॥
रे मन मूढ़ बिलाव क्यों मूसा सँग दौड़े।
कहत कबीर सनेह सों चित हरि सों जोड़े॥ ५ ॥

ईश्वरका सहारा पकड़ो

(४५)

तर्ज—निर्गुण

किसका लिया सहारा रे प्राणी, बहता यह जग सारा रे॥टेर॥
पाँच तत्व का पींजर रचिया, मन बुद्धी अहँकारा रे।
मैं अरु मेरा मान इसीको, बहता जीव विचारा रे॥ १ ॥
बालक बहता बूढ़ा बहता, बहता तरुण कुमारा रे।
दुबला बहता मोटा बहता, बहता स्वस्थ बिमारा रे॥ २ ॥
साधू बहता पण्डित बहता, बहता मूर्ख गँवारा रे।
धनपति बहता नरपति बहता, हाथी के असवारा रे॥ ३ ॥
आश्रम बहता, कुटिया बहती, मन्दिर महल दिवारा रे।
जिन्दा बहता मुरदा बहता, बहती सबकी छारा रे॥ ४ ॥

नदियाँ बहती परबत बहता, बहता समँदर खारा रे।
धरणीं पवन अगन जल बहता, चाँद सूरज नभ तारा रे॥ ५॥
स्वर्गलोकमें इन्दर बहता, देवों का सरदारा रे।
ब्रहमलोक में ब्रहमा बहता, जिसके है मुख चारा रे॥ ६॥
मिन्ट सेकन्ड घड़ी पल बहवे, दिन रजनी पखवारा रे।
जाग्रत स्वप्न सुषुप्ती बहवे, ज्यों गंगा की धारा रे॥ ७॥
बहता संग बहो मत प्यारा, सुमिरो सिरजन हारा रे।
हरदम रहता, कभी न बहता, वह सबका आधारा रे॥ ८॥
यह संसार शरीर एक है, तूँ इन सबसे न्यारा रे।
तू ईश्वर का अंश सनातन मालिक वही तुम्हारा रे॥ ९॥

हंस उड़ जायगा

(४६)

उड़ जायगा रे हंस अकेला, दिन दोय का दर्शन मेला॥टेर॥
राजा भी जायगा, जोगी भी जायगा, गुरु भी जायगा चेला॥ १॥
मात पिता भाई बन्धु भी जायगा, और रुपयों का थैला॥ २॥
तन भी जायगा मन भी जायगा, तूँ क्यों भया है गैला॥ ३॥
तुम भी जायगा तेरा भी जायगा, सब माया का खेला॥ ४॥
कोड़ी रे कोड़ी माया जोड़ी, संग चले ना अधेला॥ ५॥
साथी रे साथी तेरे पार उतर गये, तू क्यों रहा अकेला॥ ६॥
राम नाम निष्काम रटो नर बीती जात है बेला॥ ७॥

शरीरका भरोसा नहीं

(४७)

तेरे तनका तनिक भरोसा नाहीं, काहे पै करत गुमाना रे।
तेरे तनका पलक भरौसा नाहीं, भज ले श्री भगवाना रे॥टेर॥

बन्दा मैं बड़ मैं बड़ क्या करे मूरख, माया देख लुभाना रे।
बहन भाणजी कुटुम कबीलो, भँवर जाल लिपटाना रे॥ १॥
बन्दा सिर ऊपर जम घात करत है, साँधे तीर कमाना रे।
पैन्ड पैन्ड पर तक तक मारे, कालकी चोट निशाना रे॥ २॥
बन्दा चन्द्रमा भी जायगा सूरज भी जायगा, धरनि और असमाना रे।
पवनरु पाणी सब उठि जायगा, रहेगा अलख निशाना रे॥ ३॥
बन्दा गुरुजी का बचन सांच कर मानो, कर ले वो ठौर ठिकाना रे।
चरणदास शुकदेव कहत है, फिर नहिं आना जाना रे॥ ४॥

हमको भी जाना है

(४८)

यह चला जाय जग सारा, एक दिन हमें भी जाना है॥टेर॥
सात द्वीप नवखण्ड बीच में, काल दिवाना है।
इस पापी जीव को छुपने का, कहिं नायँ ठिकाना है॥ १॥
मात पिता सुत नारि मित्र, मतलब का जमाना है।
कर तन मनसे हरि भजन, तुझे जो मुक्ती पाना है॥ २॥
चारजनों के बीच बैठकर, दिल बहलाना है।
आखिर को होना विदा यार, मिट्टी मिल जाना है॥ ३॥
कौड़ी कौड़ी माया जोड़ी, भरा खजाना है।
शम्भुदास की यही वीनती, भरम गमाना है॥ ४॥

सच्चा शूरवीर

(४९)

कोई बदलेंगे ज्ञानी जन शूर, मनवा तेरी आदत को॥टेर॥
कामी क्रोधी क्या बदलेंगे, माया के मजदूर।
अमल तमाखू भांग धतूरा, रहत नशे में चकनाचूर॥ १॥

पाँचों ठग इस मन को लूटे, तृष्णा दे रही लूर।
बिन समझे नर कितने बह गये, माच्यो जगत में फितूर॥ २॥
पाँच विषय में लिपट रहत है, सदा मति के क्रूर।
उनको दर्श स्वप्न में नाँही, साहिब जिनसे है दूर॥ ३॥
राम नाम से प्रीत लगा के, सत्सँग करो जरूर।
जनम जनम के पाप मिटेंगे, हो जावे माफ कसूर॥ ४॥
वेद पुराण शास्त्र की आग्या, गुरु मिले भर पूर।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, सत् चित् आनन्द नूर॥ ५॥

डरते रहो

(५०)

डरते रहो यह जिन्दगी बेकार ना हो जाय।
सुपने में भी किसी जीव का अपकार ना हो जाय॥टेर॥
पाया है तन अनमोल सदाचार के लिये।
कहीं विषयों में फँस करके अनाचार ना हो जाय॥ १॥
सेवा करो निज धर्म की, शुभ कर्म हरी भजन।
इतना भी करके पीछे अहंकार ना हो जाय॥ २॥
मंजिल असल मुकाम की तय करनी है तुम्हें।
जग ठग नगरी में फस के गिरफ्तार ना हो जाय॥ ३॥
माधव लगी है बाजी माया मोह जाल की।
धोखे में फँस करके कहीं अब हार ना हो जाय॥ ४॥

दाग मत लगाना

(५१)

तेरी काया के काट लगावे मतना।
लगावे मतना रे ठगावे मतना॥टेर॥
या काया तेरी सोने की बनी है,
सोने में खोट मिलावे मतना॥ १॥

या काया तेरी हीरों की बनी है,
हीरों में कँकड़ मिलावे मतना॥ २॥
या काया तेरी निर्मल गुदड़ी,
गुदड़ी में दाग लगावे मतना॥ ३॥
इस काया में दिवलो जगत है,
दिवले को फूँक से बुझावे मतना॥ ४॥
'रामसखी' चरणन की चेंरी,
राम के भजन ने भुलावे मतना॥ ५॥

मैं-मेरीका त्याग

(५२)

मैं नहीं मेरा नहीं यह तन किसीका है दिया,
जो भी अपने पास है वह धन किसी का है दिया॥टेर॥
देने वाले ने दिया वह भी दिया किस शान से।
"मेरा है" यह लेने वाला, कह उठा अभिमान से।
"मेरा है" यह कहने वाला, मन किसी का है दिया॥ १॥
जो मिला है वह हमेशा, पास रह सकता नहीं।
कब बिछुड़ जाये यह कोई, राज कह सकता नहीं।
जिन्दगानी का खिला मधुवन किसीका है दिया॥ २॥
जग की सेवा खोज अपनी, प्रीति उनसे कीजिये।
जिन्दगी का राज है यह जानकर जी लीजिये।
साधना की राह पर साधन किसी का है दिया॥ ३॥

पछिताना पड़ेगा

(५३)

पछितावेगा पछितावेगा तेरा गया वक्त नहिं आयेगा॥टेर॥
रतन अमोलक मिलिया भारी, कांच समझकर दीन्हा डारी,
खोजत नाहीं मूरख अनाड़ी, फेर कभी नहिं पायेगा॥ १॥

नदी किनारे बाग लगाया, मूरख सोवे ठंडी छाया,
काल चिड़ैया सब फल खाया, खाली खेत रह जायेगा॥ २॥
बालू का तूँ महल बनावे, कर कर जतन सामान सजावे,
पलमें वर्षा आन गिरावे, हात मसल रह जायेगा॥ ३॥
लगा बजार नगर के माहीं, सबही वस्तु मिले सुखदाई,
ब्रह्मानन्द खरीदो भाई, बेगि दुकान उठायेगा॥ ४॥

रामजीका आश्रय

(५४)

तेरा रामजी करेंगे बेड़ा पार, उदास मन काहे को करे॥टेर॥
नैया तूँ कर दे प्रभु के हवाले, लहर लहर हरि आप सँभाले,
हरि आपही उतारे तेरा भार, निराश मन॥ १॥
काबू में मँझधार उसीके, हातोंमें पतवार उसीके,
बाजी जीत लेवो चाहे तुम हार, निराश मन॥ २॥
गर निर्दोष तुझे क्या डर है, पग पग पर साथी ईश्वर है,
जरा भावनासे कीजिये पुकार, निराश मन॥ ३॥
सहज किनारा मिल जायेगा, परम सहारा मिल जायेगा,
डोरी सोंपदे उसीके सब हात, निराश मन॥ ४॥

गोरे शरीरका अभिमान

(५५)

गोरे गोरे गात को गुमान कहा बावरे,
रंग तो पतंग तेरो काल उड़ि जायगो॥टेर॥
धूंवा कैसो धन तेरो, जातहु ना लागे बेरो,
नदी के किनारे रूँख, कैसे ठहरायगो॥ १॥
मनहु को छोड़ मान, प्यारे मेरी सीख मान,
जोबन को रूप तेरो, कूकरा न खायगो॥ २॥

मानुष की देही वो तो जीवत ही आवे काम,
मूवा पीछे स्याल काग सूकर न खायगो॥ ३॥
फूसहु की आगको निवास घड़ी दोयहु को,
चौरन को माल नहिं चौहटे बिकायगो॥ ४॥
कहत मलूकदास, छोड़ दे माया की आश,
बँधी मुट्ठी आयो है पसारे हात जायगो॥ ५॥

बेफिक्र रहो

(५६)

जीव तूँ मत करना फिकरी, जीव तूँ मत करना फिकरी।
भाग लिखी सो हुई रहेगी, भली-बुरी सगरी॥टेर॥
तप करके हिरनाकुश आयो, वर पायो जबरी।
लोह लकड़ से मर्‌यो नहीं वो मर्‌यो मौत नखरी॥ १॥
सहस्त्र पुत्र राजा सगर के, तप कीनो अकरी।
थारी गति ने तूँहीं जाने, आग मिली ना लकड़ी॥ २॥
तीन लोक की माता सीता, रावण जाय हरी।
जब लक्ष्मण ने लंका घेरी, लंका गई बिखरी॥ ३॥
आठ पहर साहेब को रटना, ना करना जिकरी।
कहत कबीर सुनो भई साधो, रहना बे फिकरी॥ ४॥

उस देश चलो

(५७)

चल हंसा उस देश समँद विच मोती है॥टेर॥
चल हंसा वह देश निराला,
बिनु शशि भानु रहे उजियाला।
लगे न काल की चोट जगमग ज्योती है॥ १॥

करूँ चलन की जब तैयारी,
दुबिधा जाल फँसे अति भारी
हिम्मत कर पग धरूँ हंसनी रोती है॥ २॥
चाल पड़ा दुविधा सब छूटी,
पिछली प्रीत कुटुम्ब से टूटी।
सतरह उड़ गई पाँच, धरणि पर सूती है॥ ३॥
जाय किया अमरापुर वासा,
फिर न रही आवण की आशा।
धरी कबीर मौत के सिर पर जूती है॥ ४॥

प्रभुका खेल

(५८)

कैसो खेल रच्यो मेरे दाता, जित देखूँ उत तूँ ही तूँ।
कैसी भूल जगत में डारी, साबित करणी कररयो तूँ॥टेर॥
नर नारी में एक ही कहिए, दोय, जगत् में दर्शे तूँ।
बालक होय रोवण ने लाग्यो माता बन पुचकारे तूँ॥ १॥
कीड़ी में छोटो बन बैठ्यो, हाथी में ही मोंटो तूँ।
होय मगन मस्ती में डोले, महावत बन कर बैठ्यो तूँ॥ २॥
राजघराँ राजा बन बैठ्यो, भिखयाराँ में मँगतो तूँ।
होय झगड़ालू झगड़वा लाग्यो फौजदार फौजां में तूँ॥ ३॥
देवल में देवता बन बैठ्यो, पूजा में पूजारी तूँ।
चोरी करे जब बाजे चोरटो, खोज करन में खोजी तूँ॥ ४॥
राम ही करता राम ही भरता, सारो खेल रचायो तूँ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, उलट खोज कर पायो तूँ॥ ५॥

हरिकी लीला

(५९)

हरि की लीला बड़ी अपार।
बन गये आप अकेले सब कुछ, नाम धरा संसार॥टेर॥
मात पिता गुरु स्वामी बनकर, करे डाँट फटकार।
सुत दारा अरु सेवक बनकर, खूब करे सतकार॥ १ ॥
कभी रोग का रूप बनाकर, बनते आप बुखार।
कभी वैद्य बन दवा खिलाते, आप करे उपचार॥ २ ॥
कभी भोग सुख मान बड़ाई, हाजिर में नर नार।
कभी दुखों का पहाड़ पटकते, मचती हाहाकार॥ ३ ॥
कभी संत बनकर जीवों पर, कृपा दृष्टि विस्तार।
अगनित जनमों का दुख संकट, छन महँ देवे टार॥ ४ ॥
कभी धरनि पर संतन के हित, धर मानुष अवतार।
अजब अनोखी लीला करते, सुमिरत हो भव पार॥ ५ ॥
अगनित स्वाँग रचाते हरदम, धन्य बड़े सरकार।
ऐसे परम कृपालू प्रभू को, बिनवउँ बारम्बार॥ ६ ॥

श्याममयी सृष्टि

(६०)

जित देखौं तित श्याम मई है।
श्याम कुंज बन जमुना श्यामा, श्याम गगन घन घटा छई है॥
सब रंगन में श्याम भरो है, लोग कहत यह बात नई है॥
हौं बौरी कै लोगन ही की, श्याम पुतरियाँ बदल गई है॥
चन्द्रसार रविसार श्याम है, मृगमद सार काम बिजई है॥
नील कंठ को कंठ श्याम है, मनहु श्यामता बेल बई है॥
श्रुति को अक्षर श्याम देखियत, दीप शिखा पर श्याम तई है॥
नर देवन की कौन कथा है, अलख ब्रह्म छबि श्याम भई है॥

प्रभुका विराट रूप

(६१)

तूँ हीं है, तूँ हीं है, जो कुछ है सो तूँ हीं है।
तूँ हीं, तूँ हीं, तूँ हीं है, जो कुछ है सो तूँ हीं है॥ टेर ॥
तूँ हीं किरिया, तूँ करतार, तूँ हीं तिरिया, तूँ भरतार।
तूँ हीं सृष्टि का विस्तार, तूँ हीं सब वेदों का सार॥ तूँ० १॥
तूँ हीं कपड़ा, तूँ हीं सूत, तूँ हीं मात पिता अरु पूत।
तूँ हीं बन गया पाँचौं भूत, तेरी है सारी करतूत॥ तूँ० २॥
तूँ विषयों का पाँचौं भोग, तूँ हीं समता तूँ हीं योग।
तूँ हीं काटे भव का रोग, तूँ हीं सत्संगत का जोग॥ तूँ० ३॥
तूँ हीं माटी तूँ हीं कुम्हार, तूँ हीं सोना, तूँ हीं सुनार।
तूँ हीं बणियाँ, तूँ व्यापार, तूँ हीं चमड़ा, तूँ हीं चमार॥ तूँ० ४॥
तूँ हीं श्रोता, तूँ हीं व्यास, तूँ हीं श्रद्धा, तूँ विश्वास।
तूँ हीं सबका है परकास, तुझ में सब भूतों का बास॥ तूँ० ५॥
तूँ हीं निर्गुण, तूँ गुणवन्त, ना कोइ तेरा आदी-अन्त।
तूँ हीं धारे रूप अनन्त, समझे कोई विरला सन्त॥ तूँ० ६॥
मन की हलचल तूँ हीं हैं बुद्धि निश्चल तूँ हीं है।
निर्बल का बल तूँ हीं है, साधन का फल तूँ हीं है॥ तूँ० ७॥
मैं मैं भीतर तूँ ही है, तूँ तूँ भीतर तूँ हीं है।
यह के भीतर तूँ हीं है, वह के भीतर तूँ हीं है॥ तूँ० ८॥
बाहर भीतर तूँ हीं है, भीतर भीतर तूँ हीं है।
सबके भीतर तूँ हीं है, तेरे भीतर तूँ हीं है॥ तूँ० ९॥

सबमें तेरी ही सुगंध

(६२)

जिसमें तेरी नहीं सुगंध ऐसा कोई फूल नहीं।
ऐसा कोई फूल नहीं, ऐसी कोई वस्तु नहीं॥ टेर॥

मैंने देख लिया सब ठौर, तुमसा मिला न कोई और।
पाया तूँ सबका सिरमौर, इसमें कोई भूल नहीं॥ १॥
तुमसे मिलकर करुना कन्द, मुनिजन पाते हैं आनन्द।
तेरा प्रेम सच्चिदानन्द, किसका मंगल मूल नहीं॥ २॥
तुमसे करे निरंतर प्यार, जिसका तुम पर दारमदार।
चाहे आवे कष्ट अपार, तो कुछ भी प्रतिकूल नहीं॥ ३॥
'शंकर' कहा बजाऊँ ढ़ोल, तेरा नाम बड़ा अनमोल।
उसको सके न कोई तोल, ऐसा कोई तूल नहीं॥ ४॥

मेरा कुछ नहीं

(६३)

कछु नहीं मेरा जगत में कछु न मुजको चाहिये।
मैं उसी का वे हमारे, फिर कहो क्या चाहिये॥टेर॥
मैं तो उनका था सदा से, भूल थी वह मिट गई।
सुरति परगट हो गई अब, क्या रहा जो चाहिये॥ १॥
कछु भी बाकी न रहा अब, प्राप्त करने के लिये।
समझना करना रहा नहिं, मिट गया सब चाहिये॥ २॥
सुगम सहज प्रशस्त निरमल, सार गीता सास्त्र का।
सुलभ अति सबके लिये, उपलब्ध करना चाहिये॥ ३॥
शरन प्रभु के हो गये वे, भक्त जीवन मुक्त हैं।
उन महापुरुषों का दरशन, संग करना चाहिये॥ ४॥

अपना अपनेमें पाया

(६४)

परम प्रभु अपने हीं महुँ पायो।
जुग जुग केरी मेटी कलपना, सतगुरु भेद बतायो॥टेर॥
ज्यों निज कण्ठ मनी भूषण कहुँ, जानत ताहि गमायो।
आन किसी ने देखि बतायो, मन को भरम मिटायो॥ १॥

ज्यों तिरिया सपनें सुत खोयो, जानत जिय अकुलायो।
जागत ताहि पलँग पर पायो, कहुँ ना गयो नहिं आयो॥ २॥
मिरगन्ह पास बसे कस्तूरी, ढूँढ़त वन वन धायो।
निज नाभी की गंध न जानत, हारि थक्यो सकुचायो॥ ३॥
कहत 'कबीर' भई गति सोई, ज्यों गूँगो गुड़ खायो।
ताको स्वाद कहे कहु कैसो, मन ही मन मुसकायो॥ ४॥

नश्वर देह

(६५)

खबर नहिं है जगमें पलकी,
राम सुमिरले सुकरित करले, को जाने कलकी॥टेर॥
कौड़ी कौड़ी माया जोड़ी, झूठ कपट छलकी।
सिरपर धरलइ पाप गठरिया, हो कैसे हलकी॥ १॥
तारा मंडल सूर्य चंद्रमा ज्योती झिलमिल की।
झपके पलक जाय जिंदगानी, ज्यों बिजली चमकी॥ २॥
भाई बन्धु कुटुम्ब कबीला मुहबत मतलबकी।
दया धरम साहिबने सुमिरो, विनती नानक की॥ ३॥

सहज सुख

(६६)

अब हम सोये पाँव पसार।
मूँदी दृष्टि सहज सुख पाया, बिसर गया संसार॥टेर॥
बिसर गई चतुराई जग की, बिसर गया घरबार।
ना कोइ अपना दुशमन दरशे, ना कोइ अपना यार॥ १॥
हरष न शोक न अस्तुति निन्दा, मिथ्या रहा न सार।
खण्डन मण्डन रहा न कछु भी, जीत न कोई हार॥ २॥
मैं मेरा कर रहा न कोई, ना कोइ नातेदार।
छोटा बड़ा न निरधन धनियाँ, भिक्षुक ना दातार॥ ३॥

देह भावना सकल बिलाई, सुरत न रही सँभार।
परम अगाध अमिय रस भीनो, हेमा अनुभव सार॥ ४॥

रामके बन्दे

(६७)

हमें धन की नहीं है चाह हमतो राम के बन्दे।
रहा करते नहीं प्यासे, कभी घनश्याम के बन्दे॥टेर॥
तीन लोकों की सम्पति को, पलक में मारदें ठौकर,
प्रभु के द्वार के सेवक, प्रभु के धाम के बन्दे॥ १॥
कभी मरते नहीं संसार के सुख भोग पर धन पर,
भरौसे जी रहे जिसके, उसी हरि नाम के बन्दे॥ २॥
सदा अलमस्त रहते हैं, न दुख चिन्ता नहीं कोई,
जसोदानन्द आनँदकन्द पूरनकाम के बन्दे॥ ३॥
नहीं किसको सताते हैं, नहीं हम कुछ भी चाहते हैं,
जपें श्रीकृष्ण राधेकृष्ण राधेश्याम के बन्दे॥ ४॥

मालिककी दूकान

(६८)

मेरे मालिक की दूकान में सब जीवों का खाता।
जो नर जैसा करम कमावे, वैसा ही फल पाता॥टेर॥
क्या साधू क्या संत गृहस्थी, क्या राजा क्या रानी।
प्रभु की पुस्तक में लिख रक्खी, सबकी करम कहानी।
सबही के वो जमा खर्च का, सही हिसाब लगाता॥ १॥
बड़े बड़े कानून प्रभु के, बड़ी बड़ी मरियादा।
किसी को कौड़ी कम नहिं देते, किसे न दमड़ी ज्यादा।
इसी लिये तो दुनियाँ में वो, जगत सेठ कहलाता॥ २॥
करते हैं इनसाफ फैसला, निज आसन पर डटके।
उनका हुकुम कभी नहिं बदले, लाख कोई सिर पटके।
समझदार तो चुप रह जाता, मूरख शोर मचाता॥ ३॥

अच्छी करनी करो चतुर जन, करम न करियो काला।
हजार आँख से देख रहा है, तुझे देखने वाला।
हरि का भजन करो रे भाई, समय गुजरता जाता॥ ४॥

मायाका गुलाम

(६९)

माया को मजूर बन्दो कहा जाने बंदगी॥ टेर॥
माया को ही ध्यान धरे, खोटे खोटे काम करे।
गंदगी को कीड़ो प्रानी, मानत आनंदगी॥ १॥
पाप केरि पोट लीन्हो, तिलक निन्दा को कीन्हो।
कथा तो कपट की बाँचे, डारे सब फन्दगी॥ २॥
साधुओं से धूम धाम, चौरों के करते काम।
मूरखों से चापलूसी, गरीबों से गुन्दगी॥ ३॥
बंदगी न नेक भावे, चंदगी को चित्त चावे।
कबिर कहे रे मूरख, खोई खाली जिन्दगी॥ ४॥

गुरु कृपांजन

(७०)

गुरु कृपांजन पायो मेरे भाई।
राम बिना कछु जानत नाहीं॥
अंतर रामहि बाहिर रामहि।
जहँ देखौं तहँ रामहि रामहि॥
जागत रामहि सोवत रामहि।
सपनेहि देखौं राजा रामहि॥
एका जनार्दन भावहिं नीका।
जो देखौं सो राम सरीखा॥

प्रभुका खुला दरबार

(७१)

तर्ज—ओ जाने वाले रघुवर से परनाम।

जो चाहें कल्याण आप हम, अटल रहें इस बात में॥
कभी बुराई नहीं करेंगे, अब हम किसके साथ में॥ टेर॥
ना हम बुरा करेंगे किसका, ना किससे करवायेंगे।
ना हम बुरा कहेंगे किसको, ना किससे कहलायेंगे॥
ना हम किस की सुनें बुराई, ना अब किसे सुनायेंगे।
तरुवर पर ज्यों रैन बसेरा, भोर भये उठ जायेंगे॥
देखत ही सब छुप जायेंगे, ज्यों तारे परभात में॥ १ ॥
बुरा नहीं समझेंगे किसको, बुरा नहीं समझायेंगे।
बुरा नहीं देखेंगे किसको, बुरा नहीं दिखलायेंगे॥
सोचेंगे नहिं बुरा किसीका, बुरा न भाव बनायेंगे।
अपना समझ राम के नाते, सबसे प्रेम बढ़ायेंगे॥
समता प्रेम भक्ति के रस में, छके रहें दिन रात में॥ २ ॥
तनसे मनसे वचनो से अब किसको नहीं सतायेंगे।
पर निन्दा अपवाद छोड़ सर्वात्म भाव अपनायेंगे॥
लखें भिन्न व्यवहार भेद से, किससे कछु नहिं चाहेंगे।
पूछे कोई परामर्श तो, हित की बात बतायेंगे॥
माने कोई नहिं माने तो, बहुत खुशी इस बात में॥ ३ ॥

भजनका प्रकार

(७२)

ईश्वर को अपना मान लो, बस हो गया भजन।
दूजा नहिं अपना जान लो, बस हो गया भजन॥ टेर॥
आया कहाँ से, कौन है तूँ, जायगा कहाँ।
इतना ही दिल विचार लो, बस हो गया भजन॥ १ ॥

अनुकूलता प्रतिकूलता, दोनों में सम रहो।
मंगल विधान मान लो, बस हो गया भजन॥ २ ॥
नेकी सभी के साथ में, जितनी बने करो।
बदनीती का मत भार लो, बस हो गया भजन॥ ३ ॥
दृष्टी में तेरे दोष है, दुनियाँ निहारती।
समता का अंजन आँज लो, बस हो गया भजन॥ ४ ॥
तुजको बुरा बुरा कहे कर 'सूर' तूँ क्षमा।
वाणी के स्वर सँभार लो, बस हो गया भजन॥ ५ ॥

संत-मिलनकी उत्कण्ठा

(७३)

मेरे दिल में तो ये ही बड़ा चाव मैं आते देखू सन्तन को॥टेर॥
बड़े भाग्य से सन्त पधारे, उठकर करूँ प्रणाम।
हरि-मिलने का मारग पूछूँ, तज दुनियाँ का सारा काम॥ १ ॥
कैसे करम करूँ इस जग के, लोक शास्त्र व्यवहार।
कैसे जनम-मरण से छूटूँ, पूछूँ आँखों से आँसू डार॥ २ ॥
कैसे प्रेम करूँ मैं प्रभु से, हो निर्मल निषकाम।
ऐसी जुगत बताओ स्वामी, कैसे रटूँ मैं प्रभु का नाम॥ ३ ॥

और उपाय नहीं

(७४)

संत समागम करिये भाई, तरने की नहिं और उपाई॥ टेक॥
जान अजान छुहे पारस को, लोह पलट कंचन हो जाई॥ १ ॥
नाना विधि वनराइ कहावत, भिन्न भिन्न करि नाम धराई॥ २ ॥
जाको बास लगे चंदन की, चंदन होवत बार न लाई॥ ३ ॥
नौका रूप जानि सतसंगत, तामें सब कोइ बैठहु आई॥ ४ ॥
और उपाय नहीं तरिबे को, सुन्दर काढ़ी राम दोहाई॥ ५ ॥

सत्संगमें जाइये

(७५)

संत समागम होय तहाँ पर जाइये,
हियमहँ उपजत ग्यान राम गुन गाइये॥ १॥
ऐसी सभा जलजाय कथा नहीं राम की,
दुलहा बिना तो बरात कहो केहि काम की॥ २॥
संतन्ह सेती प्रीत पले तो पालिये,
राम भजन में देह गले तो गालिये॥ ३॥
यह मन मूढ़ गँवार मरे तो मारिये,
कंचन कामिनि फन्द टरे तो टारिये॥ ४॥
चल रही पिछवा पवन चिन्ह उड़ जायँगे,
हरषि कहे बाजिन्द मूरख पछितायँगे॥ ५॥

सत्संग-सरोवर

(७६)

पड़ा सतसंग का दरिया नहा लो जिसका जी चाहे।
करो हिम्मत जरा डुबकी लगा लो जिसका जी चाहे॥टेर॥
हजारौं रत्न हैं इसमें, एक से एक बढ़ आला।
किसी का डर नहीं कुछ भी, उठा लो जिसका जी चाहे॥ १॥
मिटे संसार का चक्कर, लगे नहिं मौत की टक्कर।
करे है पार भव सागर, करा लो जिसका जी चाहे॥ २॥
बनावे चोर से साहू, मिटावे दुष्टता मन की।
कटे जड़ मूल पापों का, कटा लो जिसका जी चाहे॥ ३॥
बनावे रंक से राजा, बड़े राजों के महाराजा।
श्रेष्ठ से श्रेष्ठ अपने को, बना लो जिसका जी चाहे॥ ४॥
करत यह मुक्त जीवत ही, मिटे सन्ताप दुख सारे।
रँगे हरि प्रेम के रँगमें, रँगा लो जिसका जी चाहे॥ ५॥

सन्तोंको बड़भागी ही जानते हैं

(७७)

सन्तों को कोई बड़भागी लखि पावे॥टेर॥
बाहर का कोइ भेष नहीं है, भीतर राग-द्वेष नहीं है,
अभिमान का लेष नहीं है, औरों का मान बढ़ावे॥ १ ॥
किससे कुछ भी चाह नहीं है, जीने की परवाह नहीं है,
सद्गुण की कोई थाह नहीं है, दुनियाँ की जलन मिटावे॥ २ ॥
तन की सुधि बिसराय भजन में, पर हितकारी रहे लगन में,
घुले मिले सत् चित् आनन्द में, प्रेम कृपा बरसावे॥ ३ ॥
बोले सो सद्ग्रन्थ वही है, पाँव धरे सत् पन्थ वही है,
सन्त कहो भगवंत वही है, अलग-अलग दरशावे॥ ४ ॥
ऐसे सन्त कहीं पर जावे, वह धरणी तीरथ बन जावे,
माया मोह निकट नहिं आवे, भाग्य जीवों का खुल जावे॥ ५ ॥

सन्तोंके लक्षण

(७८)

जग में सन्तन की महिमा को कोई, बड़भागी लख पाय।
बड़ भागी लख पाय, कोई विरला ही लख पाय॥टेर॥
बाहर का कोई वेष नहीं है, भीतर राग-द्वेष नहीं है,
अभीमान का लेष नहीं है,
मान बड़ाई तजकर अपनी, जग का मान बढ़ाय॥ १ ॥
तन की सुध विसराय भजन में, पर हितकारी रहे लगन में,
धुले मिले सत् चित् आनन्द में,
सनमुख होय उसी प्राणी पर, प्रेम कृपा बरषाय॥ २ ॥
किससे कुछ भी चाह नहीं है, जीने की परवाह नहीं है,
सद्गुण की कोई थाह नहीं है,
बिनु करता जग का हित होवे, प्रभु ही करे कराय॥ ३ ॥

बोले सो सद्ग्रंथ वही है, पाँव धरे सत्पंथ वही है,
सन्त कहो भगवन्त वही है,
चलते फिरते तीर्थराज में, सब कोई लेवो न्हाय॥ ४॥

सत्संग करना अति आवश्यक

(७९)

यह अवसर फिर नहिं मिलने का, सतसंग करो सतसंग करो।
यह वक्त नहीं हिल डुलने का, सत्संग करो सत्संग करो॥टेर॥
चाहे सारी दुनियाँ ठुकरावे, चाहे धन सम्पत्ति सब लुट जावे।
चाहे थाली लोटा बिक जावें, सत्संग करो सत्संग करो॥ १॥
चाहे तन में अधिक बिमारी हो, प्रतिकूल चले नर नारी हो।
माने नहिं बात हमारी हो, सत्संग करो सत्संग करो॥ २॥
अपमान अचानक हो जावे, निज साथी सभी बिछुड़ जावे।
चाहे नित्य नई आफत आवे, सत्संग करो सत्संग करो।
हे सुख सम्पत्ति के अभिमानी, कर लो अँचवन बहते पानी।
यहाँ चार दिनों की मेहमानी, सत्संग करो सत्संग करो॥ ४॥
व्यवहार सीखना है जिसको, व्यापार सीखना है जिसको।
भव पार उतरना है जिसको सत्संग करो सत्संग करो॥ ५॥

जीवन-परिवर्तन

(८०)

सतसंग सच्चे सन्तका, बड़ भाग्य से जो पा गया।
कैसे कुसंग करे जिसे, हरि-भक्ति का रँग छा गया॥टेर॥
वह झूठ चोरी मांस मदिरा, जुवा अरु व्यभिचार से।
दुर्गुण दुराचारों को तज, भगतों के मन वो भा गया॥ १॥
सिगरेट बीड़ी भाँग गाँजा, दुर्व्यसन सब त्याग के।
सतरंज चौपड़ तासबाजी, की वो सौगंध खा गया॥ २॥
उसको पसंद आते नहीं, नाटक सिनेमा देखने।
घुड़दौड़ किरकिट खेल सारे दिलसे वो बिसरा गया॥ ३॥

अब समय अपना कीमती बरबाद वो करता नहीं।
हरि भजन अरु सतसंग की सरिता के जलसे न्हा गया॥ ४॥

सन्तोंकी वाणीसे अपरिमित लाभ

(८१)

सुन मन उन सन्तन की वाणी,
करत है चोट कलेजे भीतर, चमक उठे जिन्दगानी॥टेर॥
मानुष जैसा मानुष दीखे, कौन लखे वाने प्राणी।
चाह नहीं चिन्ता नहिं मन में, सबसे बढ़कर दानी॥ १॥
राग न द्वेष न लेष किसी से, चाल चले मस्तानी।
हरि-सुमिरन सूं हियरौ उमड़े, संत कहो चाहे ज्ञानी॥ २॥
स्वारथ छोड़ जगत् की सेवा, सुमिरण सारंग पाणी।
आदर मान करे औरन का, बन रहे आप अमानी॥ ३॥
क्या जाने विषयन सुख भोगी, मोह माया लिपटानी।
जाने सोइ जन हरि का प्यारा, हरिमें सुरता समानी॥ ४॥

रंग खिल जायेगा

(८२)

कर ले उन संतन का संग, तेरा खिल जायेगा रंग।
तेरा खिल जायेगा रंग, तेरा सुधर जायेगा ढंग॥टेर॥
सबका हित करने के खातिर, कमर कसी दिन रात।
अपना कुछ भी स्वारथ नाहीं, बड़ी अनोखी बात॥ १॥
मान बड़ाई मल ज्यों त्यागी, त्याग दिया सब भोग।
दरशन परसन सेवा खातिर, तरस रहे सब लोग॥ २॥
केश बरोबर गरज न किसकी, कौड़ी रखे न पास।
लछमी माता पीछे पड़ कर, मुख में देवे ग्रास॥ ३॥
गीता ग्यान महासागर में, नित नइ उठे तरंग।
बगुला डूब हंस हो जावे, जीवन होत सुरंग॥ ४॥

गप्पें मत मारो

(८३)

गप्पें न मार भाई सतसंग बीच आके॥टेर॥
हरि की कथा है ज्योती, जग की कथा है तोथी।
बन्द कर दे तेरी पोथी, जप राम नाम जाके॥ १ ॥
हीरा बिके जँवाहरा, मत बेच वहाँ तूँ चारा।
भक्तों को लागे खारा, क्यों हँसता दिल दुखा के॥ २ ॥
सत्संग बीच आना, गप शप नहीं लगाना।
चुपके से उठके जाना, सन्तों को ना खिजा के॥ ३ ॥
जेहि हरि कथा न भावे, वो अपनें घर को जावे।
यों अचलराम गावे, चरणों में सिर झुका के॥ ४ ॥

वास्तविक चतुराई

(८४)

सतसंग करो मिल भाई, छोड़ो जग की चतुराई॥टेर॥
चुन चुन कर ईंटे अरु पत्थर, ऊँचे मंजिल वास किया।
हरी भजन का समय अमोलक, उसका सत्यानाश किया।
निरबल और गरीबों की कछु, करी नहीं सुनवाई॥ १ ॥
कितनी कला सीख लो पढ़ लो, कुछ भी काम न आयेगी।
पद अधिकार मिल्कियत सारी, मिट्टी में मिल जायेगी।
काल बली की चोट लगे जब, खोज खबर नहिं पाई॥ २ ॥
मूढ़ होय कर भजो हरी को, वृथा नहीं बकवाद करो।
भजन कीरतन सेवा सतसँग, पल पल प्रभु को याद करो।
जीवन ऊँचा उठ जायेगा, फरक नहीं है राई॥ ३ ॥

(८५)

सतसँग नहिं कीन्हो गफलत में ऊमर सारी खो दई।
हरि भजन न कीन्हो बातों में ऊमर सारी खो दई॥टेर॥
बिन सतसंग जगत में प्राणी पशुओं से भी खोटा।
भार रूप धरनीपर रहवे पाप करे वे मोटा॥ जी॥ १॥
दियो न कुछ भी दान हातसे लियो न हरि को नाम।
मर करके वो घोड़ा बनता मुख में पड़े लगाम॥ जी॥ २॥
उजला पहिरे कापड़ा रे पान सुपारी खाय।
नारायण के भजन बिना वो जमपुर बाँधा जाय॥ जी॥ ३॥
बड़े घरों की लाड़ली वा सतसँग में नहिं जाय।
मरकर के वो कुतिया बनती घर घर डंडे खाय॥ जी॥ ४॥
झूठ कपट कर माया जोड़े ना खरचे ना खाय।
मरकर के वो अजगर बनता पड़ा पड़ा दुख पाय॥ जी॥ ५॥
सरवर माहीं न्हावे धोवे भीतर कुरला करता।
मरकर के वो मेंढ़क बनकर टर्रक टर्रक करता॥ जी॥ ६॥
मानव तन अनमोल मिला है तनिक न वृथा गमाओ।
ग्यान भक्ति की गंगा बहती सज्जन सब मिल न्हावो॥ जी॥ ७॥

कवित्त

तात मिले पुनि मात मिले, सुत भ्रात मिले जुबती सुखदाई।
राज मिले गज बाजि मिले, सब साज मिले मनवाँछित पाई॥
लोक मिले सुरलोक मिले, बिधिलोक मिले बैकुण्ठहु जाई।
सुन्दर और मिले सबही सुख, सन्त समागम दुरलभ भाई॥

प्रभुके अत्यन्त प्यारे

(८६)

उधो मोही सन्त सदा अति प्यारे, जाकी महिमा वेद उचारे॥टेर॥
मेरे कारण छोड़ जगत के, भोग पदारथ सारे।
निशिदिन ध्यान धरे हियमहीं, सब गृहकाज बिसारे॥ १॥

मैं सन्तन के पीछें जाऊँ, जहँ-जहँ सन्त सिधारे।
चरणन-रज निज अंग लगाऊँ, सोधूँ गात हमारे॥ २॥
सन्त मिले तब मैं मिल जाऊँ, सन्त ना मुझसे न्यारे।
बिनु सतसंग मुझे नहिं पावे, कौटि जतन करि डारे॥ ३॥
जो सन्तन के सेवक जगमें, सो मुझ सेवक भारे।
'ब्रह्मानन्द' सन्तजन पलमें भवबन्धन सब टारे॥ ४॥

भक्त-भक्तिमान्

(८७)

मैं तो उन संतन को हूँ दास जिन्होंने मनवा मार लिया॥टेर॥
मन मार्‍या तन वश किया रे, भया भरम सब दूर।
बाहिर तो कछु दीखत नाहीं, भीतर झलके है नूर॥ १॥
काम क्रोध मद लोभ मारकर, मेटि जगत की आश।
बलिहारी उन संत की रे, प्रगट कियो है परकाश॥ २॥
आपौ त्याग जगत में बैठे, नहीं किसी से काम।
उनमें तो कछु अन्तर नाहीं, संत कहो या चाहे राम॥ ३॥
नरसी के तो सतगुरु स्वामी, दिया अमी रस पाय।
एक बूँद सागर में मिल गई, अब क्या करेगो जमराय॥ ४॥

प्रभुके वचन

(८८)

मेरे हिय महँ गइ है समाय, हो समाय,
भगतों की भाव भरी भगती॥टेर॥
मैं रीझूँ एक चुलू जल पै, बिक जाऊँ एक तुलसि दल पै।
बिनु प्रेम न सुधा सुहाय, हो सुहाय, भगतों की०॥ १॥
जो मेरो नाम सुमिरि लैगो, भवसागर पार उतर लैगो।
सुमिरन बिनु गौता खाय, हो खाय, भगतों की०॥ २॥

बिदुरानी के छिलका खाऊँ, दुरियोधन के घर नहिं जाऊँ।
गोपियन की छाछ सुहाय, हो सुहाय, भगतों की० ॥ ३ ॥
मेरी माया घोर अँधेरी है, पकड़े उनकी मति फेरी है।
तब काल अचानक आय, हो आय, भगतों की० ॥ ४ ॥
मेरो प्रेम को पंथ निरालो है, यह जानत जानन हारौ है।
गुरु मारग दियो बताय, हो बताय, भगतों की० ॥ ५ ॥

(८९)

क्या कहिये साधो दुनियाँ दुरंगी अनादी ॥ टेर ॥
ध्यान करे तो बगुला कहवे, नहिं किये कहत प्रमादी ॥ १ ॥
मौन रहे तो गूँगा कहवे, बोले तो कहे बकवादी ॥ २ ॥
नम्र रहे तो खुशामदि कहवे, कड़े रहें कहत मिजाजी ॥ ३ ॥
सांच कहे तो मूरख कहवे, झूठ कहत कहे पाजी ॥ ४ ॥
शांत रहे तो सीतल कहवे, नाहिंत कहत विषादी ॥ ५ ॥
अचल राम गुन कैसे सूझे, चश्मा लगा है अपराधी ॥ ६ ॥
क्या कहिये साधो दुनियाँ दुरंगी अनादी ॥ ७ ॥

असीम कृपा

(९०)

पहली कृपा भई मेरे प्रभु की नर तन दीनानाथ दियो।
पुन्य भूमि भारत में मोकहुँ, कलिजुग माहीं जन्म दियो ॥ टेर ॥
दूजी कृपा करी करूनामय, धर्म सनातन पंथ दियो।
वेद पुरान भागवत गीता, रामचरित सो ग्रंथ दियो ॥ १ ॥
तीजी कृपा करी मेरे स्वामी, जग सौं सदा बियोग दियो।
जाग्रत करी रुची सतसँग की, संत मिलन को जोग दियो ॥ २ ॥
चौथी कृपा करी मेरे दाता, सुमिरन को हरि नाम दियो।
जनम मरन मिट जावे ऐसो, सब साधन को धाम दियो ॥ ३ ॥

पंचम कृपा करी परमेश्वर, धर नर तन अवतार लियो।
कर लीला उपदेश बताकर, बहुत बड़ो उपकार कियो॥ ४॥
सकें न बरनन शेष शारदा, कृपा तुम्हारी हे घनश्याम।
ऐसे परम कृपालू प्रभु को, कौटि कौटि हम करें प्रनाम॥ ५॥

गोविन्दको भजो

(९१)

भज गोविन्दम् भज गोविन्दम्
भज गोविन्दम् जगदाधारम्॥टेर॥
परम कृपालुम् परम दयालुम्
परमानंदम् परम उदारम्॥ १॥
प्रेम स्वरूपम् छटा अनूपम्
त्रिभुवन भूपम् नर अवतारम्॥ २॥
कटि पटपीतम् चरित पुनीतम्
मायातीतम् महिमाऽपारम्॥ ३॥
परम मनोरम् जन चित चौरम्
मस्तक मौरम् गिरिवर धारम्॥ ४॥
अगुन अरूपम् सगुन स्वरूपम्
धरि नर रूपम् करत बिहारम्॥ ५॥

(९२)

यह नैया पार लगा देना, मुरलीवाले श्याम॥टेर॥
तुम सब प्रानिन्ह के प्यारे, नहिं जाने लोग बिचारे।
भूलों को पथ दरशा देना, मुरलीवाले श्याम॥ १॥
मैं महा कुटिल खल कामी, तुम जानो अंतरयामी।
मोहि अपना समझ निभा लेना, मुरलीवाले श्याम॥ २॥
मैं रह नहिं सकूँ अकेला, तुम जगतगुरू मैं चेला।
सोया हूँ मुझे जगा देना, मुरलीवाले श्याम॥ ३॥

यह नैया बीच फसेगी, तो दुनियाँ तुझे हँसेगी।
तुम अपना बिरद बचा लेना, मुरलीवाले श्याम॥ ४॥

(९३)

करौ प्रभु अब सब का कल्याण।
हिंसा राग द्वेष का जग में मेटो नाम निशान॥टेर॥
हिन्दू संस्कृति लुप्त हो रही रख लो कृपा निधान।
महा पाप से पीड़ित लोग भये कर दो आप निदान॥ १॥
घर घर हो रामायण गीता श्री भागवत पुराण।
घर घर कथा कीरतन होवे आपहि का गुण गान॥ २॥
घर घर हो सतसँग हरि चरचा योग भक्ति अरु ग्यान।
बनी रहे इस धरनि मात पर गीताप्रेस दुकान॥ ३॥
भाषा वेष जीविका अपनी शुद्ध खान अरु पान।
जाति पाति कुल शील समझ कर कन्या का हो दान॥ ४॥
पतिव्रता नारी हो घर घर हरी भक्त संतान।
गौ अरु विप्र अतिथि संन्यासी सबका हो सम्मान॥ ५॥
चारौ बरन करे नित पालन अपना धरम प्रधान।
सेवा सबकी करै लखे प्रभु सबमें आप समान॥ ६॥
बढ़े परसपर प्रेम प्रीति का हो आदान प्रदान।
राम राज्य घोषित कर सबको कर दो सुखी महान॥ ७॥

(९४)

हरि का भजन करो रे प्रानी, दुनियाँ झूठी एक कहानी॥टेक॥
झूठे जग की झूठी आसा, झूठा इनका खेल तमासा,
पानी का यह बुदबुदासा, कछु नहिं आनी जानी॥ १॥
अगनित धनपति हुये जगत में, अगनित हो गये भूप।
राम भजे सो तर गये प्रानी, बाकी के गये डूब।
मिट गइ सबकी नाम निशानी॥ २॥

गनिका गीध अजामिल ब्याधा, इन्ह महँ कौन है साधु।
जनम जनम के पापी सबही, तर गये भजन प्रसाद।
भजनकी महिमा वेद बखानी॥ ३॥
भजन अकारथ कबहु न जावे, रीझ भजो चाहे खीज।
खेत पड़े सो सब उग जावे, उलटे सुलटे बीज।
भजन की महिमा संत बखानी॥ ४॥

(९५)

लोग कहे हरि दूर बसत है, हरी बसे हिरदय माहीं।
अंतर टाटी लगी कपट की, जासौं हरि सूझै नाहीं॥
कर टाटीको दूर अरे नर, कर टाटीको दूर,
कपट तजि सरल होय सोइ हरि पावै।
सरल सुभाव बिना प्रभु तुमको, नहीं नजर हरगिज आवै॥
छोड़ कपट छल छिद्र अरे नर, छोड़ कपट छल छिद्र
कृपा करि शीघ्र मिलेंगे यदुराई॥ १॥
किससे कपट करे मन मूरख, किससे कपट करे मन मूरख
जो सबके अंतरयामी।
सकल सृष्टिके करता हरता, मात पिता सबके स्वामी।
त्राहि त्राहि कर टेर अरे नर, त्राहि त्राहि कर टेर,
लगे नहिं देर निकट तेरे साईं॥ २॥
सरल भावसे रीझे प्रभुजी, सरल भावसे रीझे प्रभुजी,
कपटीसे अति दूर रहे।
चार बेद छह शास्त्र पढ़े या सकल कला भरपूर रहे।
अहंकार के दुशमन हैं प्रभु, अहंकार के दुशमन हैं प्रभु,
दीनजनों के सुखदाई॥ ३॥

सरल भाव से श्रद्धा उपजे, सरल भाव से श्रद्धा उपजे,
निरमल जन हरि को भावै।
सरल होय संतन से पूछे, योग ग्यान भगती पावै।
कर ले प्रभु से प्रेम, अरे नर, कर ले प्रभु से प्रेम अरे नर
तज दे मनकी कुटिलाई॥ ४॥

(९६)

मैं तो हूँ भगतन को दास भगत मेरे मुकुटमणी॥टेर॥
जो मोहि भजे भजूँ मैं वाको हूँ दासन को दास।
सेवा करे करूँ मैं सेवा हो सच्चा बिसवास।
यही तो मेरे मन में ठनी॥ १॥
जूठा खाऊँ गले लगाऊँ नहिं जाती को ध्यान।
आचार विचार कछू नहिं देखूँ मैं प्रेम सम्मान।
कर राखूँ वांने सिरका धणी॥ २॥
पग चाँपूँ अरु सेज बिछाऊँ नौकर बनू हजाम।
हाँकूँ बैल बनू गड़वारो बिन तनखा रथवान।
करूँ मैं सेवा जैसी बनी॥ ३॥
अपने प्रन को छोड़ भगत को पूरो प्रनहि निभाऊँ।
साधू जाचक बनूँ कहे तो बेचे तो बिक जाऊँ।
और तो क्या कहुँ मैं घनी॥ ४॥
जो कोइ भगती करे कपट से उसको भी अपनाऊँ।
साम दाम अरु दंड भेदसे सीधे रस्ते पै लाऊँ।
नकल से असल बनी॥ ५॥
गरुड़ छोड़ बैकुंठ त्याग कर नंगे पावौं धाऊँ।
जहँ जहँ भीड़ पड़े भक्तन पै तहँ तहँ दौड़्यो मैं जाऊँ।
तजूँ प्रभुता अपनी॥ ६॥

जो कुछ बनी बन रही वामें करता मुझे ठहरावे।
'नरसी' हरि गुरु चरनन चेरो चरनो में सीस नवावे।
पतीवरता एक धणी॥ ७॥

(९७)

क्या कर रहे हिन्दू भाई, रहे अपना धरम मिटाई॥टेर॥
धरम बिना पथभ्रष्ट हो रहे, अधर्मियोंका स्वांग सजा।
छोड़ा सदगुन सदाचार को, दुराचार का ढोल बजा।
पशू कहो या मानव कह दो, फरक नहीं है राई॥ १॥
धोती नहीं किसीके तन पर, लूँगी पेंट पजामा है।
रिषि मुनियों का कहा न माने, वृथा करे हंगामा है।
चोटी कटा कटा कर बन रहे, मुस्लिम और इसाई॥ २॥
टी०वी० और सिनेमा भीतर, कलजुग आकर वास किया।
बुरे बुरे चलचित्र दिखाकर, जीवन सत्यानाश किया।
दुरलभ इस मानव शरीर का, अवसर रहे गमाई॥ ३॥
बुरे बुरे उपन्यास पत्रिका, पढ़े रात दिन नर नारी।
बिगड़ रही संतान हमारी, बिगड़ रही दुनियाँदारी।
खुद ही गिर पड़ने के खातिर, खोद रहे क्यों खाई॥ ४॥
गीता अरु रामायण पढ़ लो, यह संजीवनि बूँटी है।
साधक की अनमोल संपदा, अमर करन की घूँटी है।
जीवन सफल करो तुम अपना, सबकी करो भलाई॥ ५॥

(९८)

जनम तेरो बातोंमें बीत गयो रे,
तूँ तो कबहु न कृष्ण कह्यो रे॥टेर॥
पाँच बरस को भोलो बालो, अब तो बीस भयो रे।
मकर पचीसी माया के कारन, देश विदेश गयो रे॥ १॥

तीस बरष की अब मति उपजी, लोभ बढ़े नित नयो रे।
माया जोड़ी लाख करोड़ी, अजहु न तृप्त भयो रे॥ २॥
वृद्ध भयो तब आलस उपज्यो, कफ नित कंठ नयो रे।
साधू संगति कबहु न कीन्ही, बिरथा जनम गयो रे॥ ३॥
यो जग सब मतलब को लोभी, झूठो ठाठ ठयो रे।
कहत कबीर समझ मन मूरख, तूँ क्यों भूल गयो रे॥ ४॥

(९९)

मनवा तूँ दुख पासी रे।
लियो न हरि को नाम साथे क्या लेजासी रे॥टेर॥
दान पुन्य करसी तो जग तन्ने भलो बतासी रे।
बिना भजे भगवान भजन बिन मुकती न पासी रे॥ १॥
धरमराज जब लेखो लेसी क्या बतलासी रे।
पड़सी मुगदर मार तन्नें कूण छुटासी रे॥ २॥
भाई बंधु कुटुम्ब कबीलो यहाँ रह जासी रे।
निकल जायगो हंस काया काम न आसी रे॥ ३॥
सतगुरु कालूराम दया कर ग्यान बतासी रे।
हीन जानकर धन्ना साहिब पार लगासी रे॥ ४॥

(१००)

मनवा नायँ बिचारी रे।
थारी म्हारी करतां ऊमर खोदइ सारी रे॥टेर॥
गरभवास में कौल कियो तूँ हरिसे भारी रे।
बाहर काढ़ो नाथ भगती करस्यूँ थाँरी रे॥ १॥
बालपने में लाड़ लडायो माता थारी रे।
भरी जवानी माहिं तिरिया लागे प्यारी रे॥ २॥
कौड़ी कौड़ी माया जोड़ी भयो हजारी रे।
दमड़ी दमड़ी खातिर लेवे राड़ उधारी रे॥ ३॥

वृद्ध भयो तब यूँ उठ बोली घर की नारी रे।
कद मरसी यो बुढ़लो छूटे गैल हमारी रे॥ ४॥
रुक गया कंठ दसों दरवाजा मच गइ घ्यारी रे।
कालूराम कहे सुण धन्ना करणीं थारी रे॥ ५॥

(१०१)

थारा जावेछे स्वास अमोल, हंसा राम बिना मत बोल॥
गरभवासमें त्रास भइ जब, कीन्हा हरिसे कोल।
पलक न तोकूँ भूलूँ प्रभुजी, अब काहे काढ़े पोल॥
वाद विवाद वृथा दिन खोवे, हो रहा डावांडोल।
साँची बात गहो कर गाढ़ी, झूठी है झामरझोल॥
अजहूँ कह्यो मान ले मेरो, मन की गुन्ढ़ी खोल।
भावन वेद पुराण पुकारे, कहा बजाऊँ ढोल॥

कलि-ग्रसित मानव

(१०२)

जो ग्रसे हुये कलिकाल के, वे क्या जाने सन्तों को।
जो बनचर माया जाल के, वे क्या जाने सन्तों को॥टेर॥
जीवनमुक्त सन्त कहिं जावे, करै अनादर मुख मटकावे।
बिनु सतसंग अकल नहिं आवे, फूटे हैं अक्षर भाल के॥ १॥
चोर बजारी करते धन्धा, अर्थ भोग में हो रहे अन्धा।
अंतस भीतर कर लिया गन्दा, मारग पड़े कुचाल के॥ २॥
गढ़ गढ़ बातें खूब बनावे, पूजा अपनी ही करवावे।
दौलत मान बड़ाई चाहवे, नौकर हैं धन माल के॥ ३॥
स्वारथ काज करे नित झगड़े, अहंकार में रहते अकड़े।
परमारथ का मरम न पकड़े, बरबस ज्यों बैताल के॥ ४॥
जो नर पुरुषारथ कर हारे, होत न भव दुख सें छुटकारे।
आरत हो हरि नाम पुकारे, शरण पड़े नन्दलाल के,
तब लखि पावे सन्तों को॥ ५॥

भावके भूखे

(१०३)

भाव का भूखा हूँ मैं बस भाव ही एक सार है।
भाव से मुझको भजे तो, उसका बेड़ा पार है॥टेर॥
अन्न धन अरु वस्त्र भूषण, कुछ न मुझको चाहिये।
आप हो जाये मेरा बस, पूर्ण यह सत्कार है॥ १ ॥
भाव बिन सूना पुकारे, मैं कभी सुनता नहीं।
भाव की एक टेर ही, करती मुझे लाचार है॥ २ ॥
भाव बिन सर्वस्व दे डाले तो मैं लेता नहीं।
भाव से एक पुष्प भी दे तो मुझे स्वीकार है॥ ३ ॥
जो भी मुझमें भाव रखकर, लेते हैं मेरी शरण।
मेरे और उसके हृदय का, एक रहता तार है॥ ४ ॥
बाँध लेते भक्त मुझको, प्रेम की जंजीर में।
इसलिये इस भूमि पर होता मेरा अवतार है॥ ५ ॥

प्रभुसे अपनापन

(१०४)

सबसे ऊँची प्रेम सगाई॥ टेर॥
दुर्योधन के मेवा त्यागे साग विदुर घर खाई॥ १ ॥
जूठे फल शबरी के खाये, बहु बिधि स्वाद बताई॥ २ ॥
प्रेम के वश नृप-सेवा कीन्ही, आप बने हरि नाई॥ ३ ॥
राज सुयज्ञ युधिष्ठिर कीन्हो, तामें जूठ उठाई॥ ४ ॥
प्रेमके वश पारथ-रथ हाँक्यो, भूलि गये ठकुराई॥ ५ ॥
ऐसी प्रीति बढ़ी वृन्दावन गोपियन नाच नचाई॥ ६ ॥
‘सूर’ कूर केहि लायक नाहीं, कहँ लगि करौं बड़ाई॥ ७ ॥

हरि सुमिरन

(१०५)

तूँ सुमिरन कर ले मेरे मना, बीती जात ऊमर हरि नाम बिना॥टेर॥
पंछी पंख बिना हस्थी दन्त बिना, नारी तो देखो भला पुरुष बिना।
वैश्या को पुत्र पिता बिन हीनों, वैसे ही प्राणी हरि नाम बिना॥ १ ॥
देहि नैन बिना, रैन चन्द्र बिना, धरती तो देखो भला मेघ बिना।
जैसे पण्डित वेद विहिना, तैसे ही प्राणी हरि नाम बिना॥ २ ॥
कूप नीर बिना, धेनु खीर बिना, मन्दिर देखो भला दिपक बिना।
जैसे तरुवर फल बिन हीना, वैसे ही प्राणी हरि नाम बिना॥ ३ ॥
काम, क्रोध, मद, लोभ निवारो, छोड़ो विरोध भाई संत जना।
कह नानक शाह सुनो भगवन्ता, या जग में कोई नहीं अपना॥ ४ ॥

दिलकी आँख

(१०६)

दिल की आँख उघाड़, अब तूँ जाग रे जिया॥टेर॥
पाप किया तूँ आगे भारी, दुःख वियोग भुगते है बिमारी।
भोगे हैं पुण्य पाप तेरा आगला किया॥ १ ॥
रसना से तू नाम लिया कर, हाथों से कुछ दान किया कर।
संग चले पुण्य पाप तेरा हाथ का किया॥ २ ॥
इतनी मन तेरे क्यों बेईमानी, भूल गयो तूँ साराँग पानी।
इक पल बैठ एकान्त प्रभु का नाम ना लिया॥ ३ ॥
अब मनुवा उलटा मत खेलो, राम मिले वो रस्ता ले लो।
मनमें धार विचार, रट लो राम सीया॥ ४ ॥
कहाँ गया तेरा बाप बडेरा, कहाँ गया सँग साथी तेरा।
करे नहिं सोच विचार, क्यों तेरा फूटग्या हीया॥ ५ ॥
भज ले रे तूँ अन्तरयामी, शिक्षा दे रहे मोहन स्वामी।
रट्यो नहीं हरि नाम, सुधा रस क्यों ना पीया॥ ६ ॥

भजन करो भाई

(१०७)

जपो राम-नाम सुखदाई, भजन करो भाई,
यह मेला दो दिन का॥टेर॥
यह तन है जंगल की लकड़ी, आग लगे जल जाई॥ १ ॥
यह तन है कागज की पुड़िया, हवा लगे उड़ जाई॥ २ ॥
यह तन है फूलोंका बगीचा, धूप पड़े मुरझाई॥ ३ ॥
यह तन है माटीका ढेला, बूँद पड़े गल जाई॥ ४ ॥
यह तन है भूतों की हवेली, मार पड़े भग जाई॥ ५ ॥
यह तन है सपने की माया, आँख खुले कछु नाहीं॥ ६ ॥

सीताराम-राधेश्याम

(१०८)

सीताराम कहो, राधे श्याम कहो मन मेरे
कट जायेंगे शंकट तेरे॥ टेर ॥
प्रभु कैसे मैं तुमको रिझाऊँ, तेरे चरणों में मैं क्या चढ़ाऊँ,
मेरा छोटासा मन, ले लो प्यारे मोहन, ना भुलाना,
पेश करता है तेरा दिवाना॥ सी० ॥
आशा दुनियाँ की सब मैंने छोड़ी, तेरे चरणों में प्रीति मैं जोड़ी
अब मैं जाऊँ किधर, छोड़ तेरा ये दर, ना ठिकाना,
पेश करता है तेरा दिवाना॥ सी० ॥
तुमने बिगड़ी सभीकी बनाई, आशा दर्शन की मैंने लगाई,
श्यामसुन्दर हरी, सुन लो विनती मेरी, ना भुलाना,
पेश करता है तेरा दिवाना॥ सी० ॥

असली सहारा

(१०९)

सहारा पकड़ तूँ नाम का, घबरा न किसी से।
श्री कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण, गाले खुशी से॥टेर॥
लाया नहीं कुछ साथ न कछु साथ जायगा।
सब छूट जायगा कछु नहिं हात आयगा।
कर सबका भला दिल न दुखा बोल हँसी से॥ १ ॥
मेरा जिसे तूँ मानता यहाँ कौन किसी का।
साथी हैं सकल स्वार्थ के न कोइ किसी का।
मत मोह में फँसकर के लगा प्रेम किसी से॥ २ ॥
अवसर जो गया हात से वापिस न आयगा।
जैसा भला बुरा किया वैसा ही पायगा।
कहे शिवप्रसाद अब तो लगा प्रेम हरी से॥ ३ ॥

आलस्य-प्रमादका त्याग

(११०)

सोये पड़े क्यों आज तुम कुछ तो किया करो।
इक राम नाम मंत्र है उसको जपा करो॥टेर॥
साधन करो नित नेम से संध्या किया करो।
मन्दिर में जाके रोज तुलसी दल लिया करो॥ १ ॥
यह भी न तुमसे बन सके तो यह किया करो।
माता पिता की प्रेम से सेवा किया करो॥ २ ॥
यह भी न तुमसे बन सके तो यह किया करो।
मिथ्या बचन को छोड़ सत साधन किया करो॥ ३ ॥
चिरँजी की मानो बात तो यह भी किया करो।
चित मन से सीताराम का सुमिरन किया करो॥ ४ ॥

नीके दिन

(१११)

दिन नीके बीते जाते हैं, तूँ सुमिरन कर ले राम नाम,
सब छोड़ बिषय तज और काम,
तेरे संग चले नहिं एक दाम, जो देते हैं सोइ पाते हैं॥ १ ॥
लख चौरासी भटकत आया, बड़े भाग मानुष तनु पाया,
राम नाम धन नाहि कमाया, अंत समय पछिताते हैं॥ २ ॥
यह जग पानी बीच बतासा, मूरख फसे मोह की फासा,
स्वासन की क्या करिये आसा, गये स्वास नहिं आते हैं॥ ३ ॥
भाई बन्धु कुटुम्ब परिवारा, तूँ किसका है कौन तुम्हारा,
किस कारन हरि नाम बिसारा, दीखत के सब नाते हैं॥ ४ ॥

मतवारी मैना

(११२)

मतवारी ए मैना बैना कैना नैना नेक निहार।
तूँ तो रामहि राम उचार हे, मतवारी ऐ मैना०॥टेर॥
मीठा बोलन बोलो मैना, पैला सूँ कर प्यार।
यार न तेरा कोई सँगाती, स्वारथ को संसार हे०॥ १ ॥
तो सिर ऊपर ताक रही है, मौत बड़ी मंझार।
पिंजरा तोड़ तोही लै जासी, खोलेगी नायँ किंवार हे०॥ २ ॥
मौत मिन्नी से उबरी चाहे, हरि चरणां चित धार।
भावन है हरि रच्छक तेरो, और नहीं आधार हे०॥ ३ ॥

भगवन्नाम

(११३)

तूँ बोल मेरी रसना हरी हरी॥टेर॥
खट रस भोजन अति प्रिय लागे, राम भजन में मरी मरी॥ १ ॥

गरभवास में भगती कबूली, बाहर आयो मति फिरी फिरी॥ २॥
पर निन्दा कर पाप कमावे, फल भोगे तूँ डरी डरी॥ ३॥
चुन चुन कंकर महल चिणावे, मोह ममता में घिरी घिरी॥ ४॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो, भजन कर्‌यां सूँ तरी तरी॥ ५॥

भगवन्नाम-महिमा

(११४)

सब हो गये भव से पार प्रभु का नाम लिया।
भक्त हुये ध्रुव बालापन में, करी तपस्या जाकर वन में।
दर्शन दिया कोकिला वन में, होकर गरुड़ सवार॥ १॥
राम नाम प्रह्लाद ने गाया, हिरणाकुश ने बहुत सताया।
तब हरि नरसिंह रूप बनाया, प्रकट भये खम्भ फाड़॥ २॥
भरी सभा में द्रौपदि टेरी, हे गोविन्द शरण मैं तेरी।
राखी लाज करी नहिं देरी, बढ़ गया चीर अपार॥ ३॥
नल अरु नील राम के चाकर, राम नाम लिख दिया शिला पर।
पत्थर तर गये समँदर ऊपर, हो गई सेना पार॥ ४॥
तुलसी सूरदास अरु मीराँ, नामदेव रैदास कबीरा।
राम कृष्ण नारायण टेरा, खुल गये मुकती द्वार॥ ५॥

तारक-मन्त्र

(११५)

राम नाम तत् सारा सन्तो राम नाम तत् सारा रे॥टेर॥
बानर रींछ जटायु सबरी भये सकल भव पारा रे।
समँदर ऊपर पत्थर तर गये, रामनाम लिख डारा रे॥ १॥
राम नाम से हाथी तर गये, ग्राह से लिया उबारा रे।
राम नाम से मीराँ तर गई, विष अमरित कर डारा रे॥ २॥

गनिका और कसाई तर गये, तर गये मच्छी मारा रे।
कोल किरात भील सब तर गये, पापी नीच अपारा रे॥ ३॥
राम बिमुख ह्वै कोइ न तरिया, डूब गया मझधारा रे।
'जसवँत' तारक मन्त्र राम यह लागत है मोहि प्यारा रे॥ ४॥

संकट कट जायगा

(११६)

मन सीताराम सीताराम रट रे, तेरा संकट जायगा कट रे।
गजराज पुकारे जल में, प्रभु टेर सुनी एक पलमें।
हरि दौड़े भये प्रगट रे॥ १॥
हिरणाकुश बहुत रिसाया, प्रह्लाद को बाँध सताया।
जब खम्भ गया था फट रे॥ २॥
राणाँ ने जहर मँगाया, चरणाँमृत कह भिजवाया।
मीराँ पी गई गट-गट-गट रे॥ ३॥
द्रोपदि दुष्टोंने घेरी, प्रभु आये करी न देरी।
भये वस्त्र हि नागरनट रे॥ ४॥
नरसीनें टेर लगाई, सँग बिलखे नानी बाई।
भर दिया माहेरा झट रे॥ ५॥

(११७)

भजो रे भैया राम गोविन्द हरी।
जप तप साधन कछु नहिं लागत, खरचत ना गठरी॥टेर॥
संतत संपति सुख के कारन, जासौं भूल परी॥ १॥
गणिका तारी शबरी तारी, गौतम घरनि तरी॥ २॥
खग मृग व्याध अजामिल तारे, जिनकी नाव भरी॥ ३॥
गज की टेक सुनत उठि धाये, रुके न पलक घरी॥ ४॥
और अनेक अधम जन तारे, गिनती न जात करी॥ ५॥
कहत कबीर राम नहिं जा मुख, ता मुख धूल भरी॥ ६॥

जगत्को हँसने दो

(११८)

तूँ तो राम सुमर जग हँसवा दे॥टेर॥
कोरा कागद काली स्याही, लिखत पढ़त वानें पढ़वा दे॥ १ ॥
हस्थी की चाल चलो मेरे मनवा, जगत् कूकरी को भुसवा दे॥ २ ॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो, नरक पचत वाको पचवा दे॥ ३ ॥

बड़ी तलवार

(११९)

हरि भजन बड़ी तलवार, राधे गोविन्दा।
नहिं भजे सो खावे मार, राधे गोविन्दा।
बिन भज्याँ न होय उद्धार, राधे० ॥ १ ॥
ध्रुव भगत भज्यो भगवान, राधे गोविन्दा।
वे पायो अविचल धाम, राधे० ॥ २ ॥
प्रहलाद भज्यो भगवान, राधे गोविन्दा।
हिरणांकुश खाई मार, राधे० ॥ ३ ॥
विभीषण भज्यो भगवान, राधे गोविन्दा।
रावण नें खाई मार, राधे० ॥ ४ ॥
बाइ मीराँ भज्यो भगवान, राधे गोविन्दा।
राणाँ ने खाई मार, राधे० ॥ ५ ॥

बद्री विशाल

(१२०)

भज मन बद्री विशाल, नटवर गोपाला॥टेर॥
कोई कहे थाँने कृष्ण मुरारी, कोई कहे नटवर गिरधारी,
कोई कहे नन्दलाल॥ १ ॥

दुरियोधन के मेवा त्यागे, भूख लगी जब उठकर भागे,
साग विदुर घर खाय॥ २॥
केश पकड़ कर कंस पछाड़ा, तपसी बनकर रावन मारा,
भक्तन के प्रतिपाल॥ ३॥
मीराँबाई सदन कसाई, हरि के भजन से मुकती पाई,
ऐसे दीनदयाल॥ ४॥

भजन बिना व्यर्थ

(१२१)

भजन बिना काहेको देह धरी॥टेर॥
चटक चटक सों खायो सोयो, सुमिर्‌यो नायँ हरी॥ १॥
भूखों को भोजन नहिं दीन्हो, सेवा नायँ करी॥ २॥
वाचा देकर बाहिर आयो, पीछें बुद्धि फिरी॥ ३॥
श्री भागवत सुनी नहिं काना, झूठी जिकर करी॥ ४॥
'सूरदास' भगवन्त भजन बिनु, जननीं भार भरी॥ ५॥

दुर्लभ मनुष्य-जन्म

(१२२)

तूने हीरो सो जनम गमायो, भजन बिना बावरा॥टेर॥
ना तूँ आयो सन्तां शरणे, ना तूँ हरि गुण गायो।
पचि-पचि मर्‌यो बैल की नाईं, सोय रह्यो रे उठ खायो॥ १॥
ओ संसार हाट बनिये की, सब जग सौदे आयो।
चातुर माल चौगुना कीन्हा, मूरख मूल गमायो॥ २॥
ओ संसार फूल सेमर को, सूवो देख लुभायो।
मारी चोंच निकल गइ रूई, सिर धुन-धुन पछितायो॥ ३॥
ओ संसार माया को लोभी, ममता महल चिनायो।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, हाथ कछू नहीं आयो॥ ४॥

समय भाग रहा है

(१२३)

भजन बिन दिन जावे, दिन जावे, मन हरिगुण क्यों नहिं गावे॥
छिन-छिन करतां पल पल बीते, पल से घड़ी घट जावे।
घड़ी घड़ी करतां पोहोर बदीते, आठ पोहोर घुल जावे॥ १ ॥
तेल फुलेल का मरदन करके, ताते जलसूँ न्हावे।
अंतकाल का देख तमाशा, काल झपट ले जावे॥ २ ॥
सुकरित काम कबहुँ नहिं कीन्हो, मोह माया चित लावे।
साधु संगति में कदे न बैठे, बातें बहुत बणावे॥ ३ ॥
मानुष देही रतन पदारथ, बार बार नहिं पावे।
बालकदास कहे बैरागी, भूलों को समझावे॥ ४ ॥

कुछ काम नहीं आयेगा

(१२४)

प्राणी भज ले, राधेश्याम, काम तेरे कोई न आवेगो॥टेर॥
देख सब स्वारथ को संसार, पिता माता भ्राता सुत नारि,
तूँ अपने दिल में सोच विचार।
जा दिन हंसो उड़सी वापिस लौट न आवेगो॥ १ ॥
देख सब सुपने को जंजाल, लपेटो ऊपर माया जाल,
हरी को सुमिरन कर ततकाल।
ठाठ धरो रह जाय हाथ मल मल पछितावेगो॥ २ ॥
देह मानुष की तूँ पायो कबहुँ तूँ हरिगुण ना गायो,
करम सुकरित नहिं कर आयो।
भवसागर में पर्‌यो नरक में गोता खावेगो॥ ३ ॥
प्रथम तूँ काम क्रोध को मार, दया तूँ हिरदे में ले धार,
मिले तोहि निश्चय कृष्ण मुरारि।
कहता राधेश्याम लौटि ना जग में आवेगो॥ ४ ॥

यमसे क्या कहोगे?

(१२५)

राम गुण गायो नहिं आय करके,
जम्म से कहोगे क्या जाय करके॥ टेर॥
गरभ में देखी नरक निशानी, तब तूँ कौल किया था प्राणी।
भजन करूँगा चित लाय करके॥ १ ॥
बालपने में लाड लडायो, मात पिता तन्नें पालणें झुलायो।
समय गमायो खेल खाय करके॥ २ ॥
तरूण भयो तिरिया सँग राच्यो नट मरकट ज्यों निशदिन नाच्यो।
माया में रह्यो है भरमाय करके॥ ३ ॥
जोबन बीत बुढ़ापो आवे, इन्द्रिय सब शीतल हो जावे।
तब रोवोगे-पछताय करके॥ ४ ॥
वेद पुराण सन्त यों गावे, बार बार नरदेही न पावे।
देवकी तिरोगे हरि गाय करके॥ ५ ॥

निर्धनका धन

(१२६)

माई मेरे निरधन को धन राम॥ टेर॥
खरचे ना खूटे चोर ना लूंटे, भीड़ पड़े आवे काम॥ १ ॥
दिन दिन सूरज सवायो ऊगे, घटत न एक छदाम॥ २ ॥
राम-नाम मेरे हिरदे में राखूँ, ज्यों लोभी राखे दाम॥ ३ ॥
'सूरदास' के इतनी ही पूँजी, रतन मणी से नहिं काम॥ ४ ॥

प्रभुका मंगलमय विधान

(१२७)

तर्ज—बोल हरि बोल हरि

सीताराम सीताराम सीताराम कहिये,
जाहि बिधि राखे राम ताहि बिधि रहिये॥टेर॥

मुख में हो राम-नाम राम-सेवा हाथ में,
तूँ अकेला नाहीं प्यारे राम तेरे साथ में,
विधिका विधान जान हानि लाभ सहिये॥ १॥
किया अभिमान तो फिर मान नहीं पायेगा,
होगा प्यारे वही जो श्रीरामजी को भायेगा,
फल की आशा त्याग शुभ काम करते रहिये॥ २॥
जिन्दगी की डोर सौंप हाथ दीनानाथ के,
महलों में राखे चाहे झौंपड़ी में वास दे,
धन्यवाद निर्विवाद राम राम कहिये॥ ३॥
आशा एक रामजी से दूजी आशा छोड़ दे,
नाता एक रामजी से दूजा नाता तोड़ दे,
साधू संग राम रंग अंग अंग रंगिये,
काम रस त्याग प्यारे राम रस पगिये॥ ४॥

अनमोल रत्न

(१२८)

नर तेरा चोला रतन अमोला, बिरथा खोवे मत ना।
बिरथा खोवे मत ना, नींदमें सोवे मत ना॥टेर॥
तुमको देह मिली है नर की, भगती करी नहीं तूँ हरि की,
सुध बुध भूल गया उस घर की, सुख में सोवे मत ना॥ १॥
तेरी पूर्व जन्म की करणीं, तुज को होगी यहाँ पर भरनीं,
ऐसी वेदव्यास ने बरनी, दुख में रोवे मत ना॥ २॥
देखे ऋषी मुनी फीकर में, फंस गये माया के चक्कर में,
नैया फँस गई भवसागर में, इसे डुबोवे मत ना॥ ३॥
बदरी बाँध कमर हो तगड़ा, आगे जम सें होगा झगड़ा,
सीधा पड़ा मोक्ष का दगड़ा, इत उत जोवे मत ना॥ ४॥

चमड़ेका चोला

(१२९)

सोचना विचार बन्दे कौन काम का,
हरि के भजन बिना चोला चाम का।
चोला चाम का रे बन्दा महँगे दाम का॥ हरि के॥ टेर॥
गर्भ वास बीच बन्दे, उलटा झूलता,
बाहर नें निकल हरिका नाम भूलता।
पत्ता ना ठीकाना तेरे असली धाम का॥ हरि के॥ १॥
आवेगा बुढ़ापा तेरा शरीर धूजेगा,
ज्योति पड़े मन्दी ना आँखों से सूझेगा।
भाई ना भतीजा तेरे सुख की बुझेगा,
पड़्यो खटिया के तूँ तो बीच जूझेगा।
बाँधले भजन पोट राम-नाम का॥ हरि के॥ २॥
आवेगा परवाना तेरी पेश ना चले,
अन्तकाल बीच दोनों हाथ मसले।
चार जन उठाके तोहे कंधे पे चले,
शमशानां के बीच यह शरीर भी जले।
मती ना बिगाड़ चोला महँगे दाम का॥ हरि के॥ ३॥
पड़ेगी नगारे चोट अन्तकाल की,
ढकी रह जावे कोठी धन-माल की।
संग ना चलेगा टट्टू घोड़ा पालकी,
गावे दत्तूराम कृपा चन्दूलाल की।
पारासर सन्तान बेटा मुकनाराम का॥ हरि के॥ ४॥

उठो, जागो!

(१३०)

उठ जाग मुसाफिर भोर भई, अब रैन कहा जो सोवत है।

जो सोवत है सो खोवत है, जो जागत है सोइ पावत है॥टेर॥
टुक नींद से अँखियाँ खोल जरा, अरु अपने रब से ध्यान लगा।
यहाँ प्रीत करन की रीत नहीं, रब जागत है तूँ सोवत है॥ १॥
जो कल करना सो आजहि कर, जो आज करे सो अबही कर।
जब चिड़िया नें चुग खेत लिया, फिर पछिताये क्या होवत है॥ २॥
नादान भुगत अपनी करनी, ऐ पापी पाप में चैन कहाँ।
जब पाप की गठरी सीस धरी, अब सीस पकड़ क्यों रोवत है॥ ३॥

सांसारिक चाहनासे पतन

(१३१)

भजन बनत नाहीं, मनवा सैलानी।
मनवा सैलानी यह जीव अभिमानी॥टेर॥
खट्टा मिठा भोजन चहिये, और ठण्डा पानी।
चाबने को पान चहिये, और पीकदानी॥ १॥
सेज तो सुरंगी चहिये, रूपवन्ती रानी।
पूत तो सपूत चहिये, कुल की निशानी॥ २॥
हस्थी चहिये घोड़ा चहिये, तम्बू आसमानी।
किला तो अटूट चहिये, तोप धूलधानी॥ ३॥
बालापन बीत गयो, बीती जवानी।
अब तो बुढ़ापौ आयो, लागी खैंचातानी॥ ४॥
कहत मलूकदास, छोड़ दे पराई आस।
देखो भोली दुनियाँ कैसी भरम भुलानी॥ ५॥

ना अपनी; ना अपने बापकी

(१३२)

सुन मन सैलानी, काया तेरी ना तेरे बाप की॥टेर॥
आया था तूँ क्या करने को, अब करता है क्या।

माया जाल के बीच फँसा क्यों, बाँधे गठरी पाप की॥ १॥
उलटे मस्तक रहा गरभ में, कौल किया ईश्वर से।
नरक कुण्ड से मोहि निकालो, याद करूँगा आप की॥ २॥
क्या अभिमान करे नर मूरख झूठा सकल पसारा।
काया कंचन राख मिलेगी, लगे काल के थाप की॥ ३॥
नेक नियत के मारग चल तूँ धरम करम के साथ।
भँवर गुफा में गुरू विराजे, करले बात मिलाप की॥ ४॥
अब मन सोच समझ ले प्रानी, लीजे हियमहँ धार।
राम नाम से प्रीत लगा ले, रट माला इस जाप की॥ ५॥
काया खेताराम बीज दे ऊगे नफा अपार।
मुक्त होइ यह जीव देह तजे जैसे कंचुलि साँप की॥ ६॥

शरीरकी नश्वरता

(१३३)

क्या तन माँजता रे एक दिन माटी में मिल जाना॥ टेर॥
माटी ओढ़न माटी बिछावन, माटी का सिरहाना।
माटी का एक बूत बनाया, जामें भँवर लुभाना॥ १॥
एक दिन दुलहा बने बराती, बाजत ढोल निशाना।
एक दिन जंगल बीच मसाणां, कर सीधे पग जाना॥ २॥
बैठ सदा सतसंगत करना, प्रभु का ध्यान लगाना।
सबका स्वामी सिरजन हारा, उनका हुकम बजाना॥ ३॥
करना है सो अब ही कर ले, नहिं तो फिर पछिताना।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, फेर जनम नहिं पाना॥ ४॥

दो दिनका मेला

(१३४)

अरे मन ये दो दिन का मेला रहेगा।
कायम न जग का ये झमेला रहेगा॥ टेर॥

किस काम का ऊँचा महल जो तूँ बनायगा।
किस काम का लाखों का धन जो तूँ कमायगा।
रथ हाथियों का झुण्ड भी किस काम आयगा।
जैसा यहाँ तूँ आया था वैसा ही जायगा।
तेरी सफर में सवारी के खातिर कन्धों पै ठठरी का ठैला रहेगा॥ १ ॥
कहता है ये दौलत कभी आयेगी मेरे काम।
यह तो बता धन भी कभी किसका हुआ गुलाम।
समझा गये उपदेश हरिश्चन्द्र कृष्ण राम।
दौलत तो सँग रहती नहीं रहता हरी का नाम।
छूटेगी सम्पति यहीं की यहीं पर, तेरी कमर में ना अधेला रहेगा॥ २ ॥
साथी हैं मित्र गंगा के जल बिन्दु पान तक।
अर्धांगिनी बढ़ेगी तो केवल मकान तक।
परिवार के सब लोग चल देंगे मसान तक।
बेटा भी हक निभायेगा तो अगनिदान तक।
इससे तो आगे भजन ही है साथी हरि के भजन बिन अकेला रहेगा॥ ३ ॥

बहके हुए मत फिरो

(१३५)

क्यों बहक्या बहक्या फिरो मगर मस्ती से।
आवेगा जम्म ले जाय जबरदस्ती से॥टेर॥
तूँ राम सुमिरले सुकरित कर ले मूँजी।
तेरी धरी रहेगी संग चले नहिं पूँजी।
तूँ क्यों करता अनरीत तुझे क्या सूझी।
तूँ इस काया को छोड़ ठौड़ कर दूजी।
पड़ गई अगर है गाँठ मगर हस्ती से॥ १ ॥

तूँ कर आया वहाँ कवल भूल मत भाया।
यहाँ बिसर गयो तूँ देख राम की माया।
माया के जाल में पड़ा पड़ा ललचाया।
नहिं सुकरित कीन्हा नहीं राम गुण गाया।
वहाँ साहिब पूछे जबर बहुत तस्ती से॥ २॥
यह लहर लोभ की लख चौरासी धारा।
भये पार भक्त अरु डूबे पापी सारा।
रख दया धर्म तो होय तेरा निसतारा
निन्दा करने से चढे पाप सिर भारा।
अब अन्न जल तेरा ऊठ चला बस्ती से॥ ३॥
माया के जाल में होता है नित फरजी।
कह लक्ष्मणदास दुनियाँ मतलब की गरजी।
पद कथे दास भगवान् राम की मरजी।
चोला है पुराणा कब लगि सींवे दरजी।
इस सन्त सभी के बीच बचो गस्ती से॥ ४॥

कुछ भी स्थिर नहीं

(१३६)

कहाँ माँगूँ कछु थिर ना रहाई।
देखत नयन चल्यो जग जाई॥टेर॥
आठ पहरियाँ रहे सँग लागी,
प्रेत समझ कर तिरिया भागी॥ १ ॥
जा मुख चाबत पान की बीड़ी,
वा मुख बड़-बड़ निकसत कीड़ी॥ २ ॥
बाँधत पाग सँवारत बागा,
उस सिर ऊपर बैठत कागा॥ ३ ॥

तेल फुलेल लगावत अंगा,
सोइ तन जावे काठ के संगा॥ ४ ॥
इक लख पूत सवा लख नाती,
तेहि रावण घर दीया न बाती॥ ५ ॥
कहत कबीर सुनो मेरे गुनियाँ,
आप मरे पीछें मर गई दुनियाँ॥ ६ ॥

शरीरधारी सब दुःखी

(१३७)

तन धर सुखिया कोई नहीं देख्या,
जो देख्या सोई दुखिया वे।
उदय-अस्त की बात कहत हूँ, सबका किया है विवेका वे॥टेर॥
शुक आचारज दुख के कारण, गरभ में माया त्यागी वे।
घाटाँ-घाटाँ सब जग दुखिया, क्या ग्रस्थी वैरागी वे॥ १ ॥
साँच कहूँ तो कोई नहीं माने, झूठी कहि नहिं जाई वे।
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर दुखिया, जिण यह सृष्टि रचाई वे॥ २ ॥
जोगी दुखिया जंगम दुखिया, तपसी को दुख दूना वे।
आशा तृष्णाँ सब घट व्यापे, कोई महल नहिं सूना वे॥ ३ ॥
राजा दुखिया परजा दुखिया, रंक दुखी धन रीता वे।
कहत 'कबीर' सभी जग दुखिया, साधू सुखी मन जीता वे॥ ४ ॥

संसारकी नश्वरता

(१३८)

यो जग झूठो रे संसार, बन्दा थारी नीन्दड़ली ने निवार॥टेर॥
ऊगे सोई आँथवे रे, फूले सो कुम्हलाय।
चिणिया देवल गिर पड़े रे, जनमे सो मर जाय॥ १ ॥

जासौं हँस हँस बोलता रे, दिनमें सौ सौ बार।
वे माणस किण देस गया रे, सुरता कर तूँ विचार॥ २॥
सोने का गढ़ लंक बनाया, हीरों का दरबार।
रति भर सोनूँ ना गयो रे, रावण मरती बार॥ ३॥
हाथाँ परबत तोलता रे, धरती ना झेले भार।
वे माणस माटी मिल्या रे, भाँडा घड़त कुम्हार॥ ४॥
सेर सेर सोनू पहरती रे, मोत्याँ मरती भार।
कोइ एक झोलो बह गयो रे, घर घर की पणिहार॥ ५॥
या जगमें तेरो कोई नहिं साथी, स्वारथ को संसार।
मोह मायामें भूल गयो तूँ, कोइ नहीं चाले लार॥ ६॥
ढ़ाई अक्षर प्रेमका रे, कृष्ण नाम तत्-सार।
'बाई मीराँ' के प्रभु गिरधर नागर, हरि भज उतरो पार॥ ७॥

जमाखोरी

(१३९)

माल जिन्होंने जमा किया, बनजारे हारे जाते हैं॥टेर॥
भाई-बन्धु कुटुम्ब कबीले, दावा कर-कर खाते हैं।
जभी मुसाफिर मारा जावे, कोई काम न आते हैं॥ १॥
साईं का रस्ता बिनु जाने, और राह भटकाते हैं।
इन रस्तों के बीच मुसाफिर, अकसर मारे जाते हैं॥ २॥
ऊँचे नीचे महल बनावे, बैठे समय बीताते हैं।
राम-नाम धन नहीं बटोरा, हात पसारे जाते हैं॥ ३॥
अगन पलीता राज दण्ड अरु, चोर लूँट ले जाते हैं।
राम-नाम पर कभी न देता, माल जँवाई खाते हैं॥ ४॥
भाई बन्धू नाती उस दिन, सभी अलग हो जाते हैं।
कहत 'कबीर' सुनो भाई साधो, अपने हाथ जलाते हैं॥ ५॥

चेतावनी

(१४०)

हाकिम आया हवलदार छोड़ नगरी।
छोड़ नगरी रे हंसा छोड़ नगरी॥ टेर ॥
जमका दूत लेन जब आवे, हंसो छुपे कोटड़ी कोटड़ी॥ १ ॥
दोय घड़ी ठहरो जमराजा, माया पड़ी है म्हारी बिखरी॥ २ ॥
मैं जाण्यो काया संग चलेगी, जोड़ धरी दमड़ी दमड़ी॥ ३ ॥
ऐसी मार पड़ेगी तन पर, उखड़ जाय चमड़ी चमड़ी॥ ४ ॥
तुलसीदास भजो भगवाना, हरिके भजन सों काया सुधरी॥ ५ ॥

वैराग्यकी मस्ती

(१४१)

वाह वाह रे मौज फकीरान्दी॥ टेर॥
कभी चबावे चना चबेना, कभी लहरियाँ खीरान्दी॥
कभी तो ओढ़े साल दुसाले, कभी गुदड़ियाँ लीरान्दी॥
कभी तो सोवे रंग महल में, कभी तो गली अहीरान्दी॥
मंग तंग के टुकड़े खान्दे, चाल चले है अमीरान्दी॥
शाह हुसेन फकीर साईंदा सीख लगी गुरु पीरान्दी॥

भूलिये मत

(१४२)

जब तलक पकड़ा सहारा जगत का।
क्यों वृथा बाना बनाया भगत का॥टेर॥
आश कर संसार की तूँ घुट रहा।
फिर भी दर दर भटकना नहिं छुट रहा॥ १ ॥

जब तलक अधिकार धन की लालसा।
तब तलक भटकत फिरे कंगाल सा॥ २॥
जब तलक सुख भोग में लेता मजा।
तब तलक मिटती न फाँसी की सजा॥ ३॥
जब तलक भूखा है आदर मान का।
तब तलक साबुन लगे नहिं ज्ञान का॥ ४॥
छोड़ मैं मेरे की झूठी कलपना।
मान कहना है इसीमें भलपना॥ ५॥
फोड़ दे भाँडा भरा अभिमान का।
जाग उठ खतरा है तेरी जान का॥ ६॥
संत कहते खोल पड़दा कान का।
भूल मत तूँ अंश है भगवान का॥ ७॥

जागृति

(१४३)

जाग गया फिर सोना क्या रे।
जो नर तन देवन को दुरलभ, सो पाया फिर रोना क्या रे॥
ठाकुर सौं कर नेह बावरे, इन्द्रिन्ह ते सुख होना क्या रे॥
जब वैराग्य ग्यान धन पाया, तब चान्दी अरु सोना क्या रे॥
दारा सुअन सदन बिच परि के, भार सभी का ढोना क्या रे॥
हीरा हात अमोलक आया, काँच किरिच में खोना क्या रे॥
मुँह माँगा दाता जब देवे, जन जन का मुख जोना क्या रे॥
जो तन मन हरि रंग भिगोया, और के रंग भिगोना क्या रे॥
गंगा जल तन मल मल धोया, और नीर से धोना क्या रे॥
जिन्ह नैनन में नींद घनेरी, तकिया और बिछौना क्या रे॥
कहत कबीर उदर भर पूरा, मीठा और सलौना क्या रे॥

फकीरी

(१४४)

मन लाग्यो मेरो यार फकीरी में॥टेर॥
जो सुख पायो राम भजन में, सो सुख नाहिं अमीरी में॥ १ ॥
भला बुरा सबका सुनि लीजे, करि गुजरान गरीबी में॥ २ ॥
प्रेम नगर में रहनि हमारी, भलि बनि आई सबूरी में॥ ३ ॥
हात में कुण्डी बगल में सोंटा, चारौं दिसिहि जगीरी में॥ ४ ॥
आखिर यह तन खाख मिलेगा, काहे फिरत मगरूरी में॥ ५ ॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो, साहिब मिलत सबूरी में॥ ६ ॥

रमता योगी

(१४५)

मैं तो रमता जोगी राम, मेरा क्या दुनियाँ से काम॥टेर॥
हाड़ मांस की बनी पुतलियाँ, ऊपर जड़िया चाम।
देखि देखि सब लोग रिझावे, मेरा मन उपराम॥ १ ॥
माल खजाना बाग बगीचा, सुन्दर महल मुकाम।
एक पलक में प्रलय मचेगी, चले न संग छदाम॥ २ ॥
दिन दिन पल पल छिन छिन काया, छीजत जात तमाम।
ब्रह्मानन्द भजन कर प्रभु का, पावौं मैं विश्राम॥ ३ ॥

फकीरी

(१४६)

लीवी है फकीरी फिकर न करना, ध्यान धणीं का धरना वे।
ममता मान बड़ाई त्यागो, रहो सतगुरुजी के शरणाँ वे॥टेर॥
क्या बस्ती क्या परबत जंगल, निरभै निशंक विचरणाँ वे।
राजा रंक एक कर जाने, पत्थर और सुबरणाँ वे॥ १ ॥

कबहुक सहज पटम्बर अम्बर, कबहु भूमिपर गिरना वे।
गहो इक साँचरु सील सबूरी, अजर पियाला जरना वे॥ २॥
पर इच्छा के षटरस भोजन, तातें छूधा हरणाँ वे।
रूखा सूखा टूका खाकर, इस बिध ऊदर भरना वे॥ ३॥
हरदम हेत चेत घट भीतर, बाहर भटक नहिं मरणाँ वे।
होय उदास त्याग गृह बन्धन, ता सँग लाग न जरणाँ वे॥ ४॥
मात पिता सुत भाई बन्धू, मोह फास नहिं परना वे।
'परसराम' इक राम सुमिर ले, चौरासी नहिं फिरना वे॥ ५॥

वैराग्य

(१४७)

मन रे अब तूँ जग सूँ छूटो।
सीस उघाड़े गल बिच कंथा, कर में कमँडल फूटो॥टेर॥
फाटा पाँव मैल तन ऊपर, उघरत नाहीं अँखियाँ।
मतवाले ज्यों झूमत डोले, एक न माने सँकियाँ॥ १॥
ऐसा होय चला बस्ती में, भिक्षा कारज डोले।
पाँच सात छोरा चौगड़ दे, बैंडो कहि कहि बोले॥ २॥
ऐसी बिधि बिचरे जगमाहीं, संग न कोई साथी।
धत्ता धूत वैराग इसी बिच, ज्यों मद छकियो हाथी॥ ३॥
छोड़ा स्वाद दिया तन भाड़ा, राम नाम लव लाया।
तुलसीदास गुरू परतापै, यों अमरापुर पाया॥ ४॥

वैराग्यका नशा

(१४८)

मन रे निज वैरागी होना।
राव रु रंग एक कर मानो, ज्यों कंकर त्यों सोना॥टेर॥

तज पुर वास उदासी बिचरो, मत कोई बाँधो भवना।
गिरि तरु मढ़ि समसाना में रहिये, के कोई देवल सूना॥ १ ॥
भूख लगे तब भिक्षा करना, कर का कर लेवो दौना।
सीत निवारन जीरन कंथा, तापर थेगल जूना॥ २ ॥
आशा तृष्णाँ मैल निवारो, हरि भज हिरदय धोना।
जब दिल पाक दयानिधि पावो, गावे बड़े बड़े मौना॥ ३ ॥
तन मन जीति प्रीति सतगुरु से, धरिये ध्यान अखौना।
'रामाजन' बैरागी बोले, रामचरणजी का छौना॥ ४ ॥

(१४९)

बाबा असल फकीरी झेल।
लटका झटका काम न आवे बाजीगर का खेल॥टेर॥
जग प्रपंच में पड़कर प्यारे पापड़ तूँ मत बेल।
आदर मान देख मत भूले निकल रहा है तेल॥ १ ॥
कंचन कामिनि दुश्मन तेरे मत पड़ इनके गैल।
जीवन मुक्त संत इक स्वर से कर रहे हेला हेल॥ २ ॥
मत करना अभिमान त्याग का नीचे रहा ढकेल।
'श्यामसखा' कर जोड़ कहत है कर ले प्रभु से मेल॥ ३ ॥

(१५०)

बाबा असल फकीरी धार।
बड़े धणी का लेकर शरणा राग द्वेष को मार॥टेर॥
कफनी बाँध कमर कस करड़ी हो घोड़े असवार।
साहिब का घर दूर नहीं है बढ़ आगे डग चार॥ १ ॥
थूक दिया फिर अब क्यों चाटे आवे कष्ट हजार।
ऊँखल में जब शीश दिया तो मरना कर स्वीकार॥ २ ॥
सुत दारा कुटुम्ब में फसकर जीना है धिक्कार।
'श्यामसखा' विश्वम्भर रक्षक चिन्ता मत कर यार॥ ३ ॥

(१५१)

वाद विवाद अखाड़ा कुस्ती कर ले बाबा करले।
हुज्जत अपनी काम न आवे परमेश्वर सों डरले॥
झोली झंडा लेकर चाहे भेष फकीरी धरले।
बिनु बैराग न बंधन छूटे खलक मुलक में फिरले॥

(१५२)

तप्पा तान मिलावे ऐसी लोग बजावे ताली।
ऊपर ताला गोदरेज का भीतर बगसा खाली॥
खटनी कर नहिं खायो चाहवे भेष फकीरी धार्‌यो।
भीतर भरी जगत की आशा साधू स्वांग बिगार्‌यो॥
मुकती की जुगती नहिं जानी बिषयन्ह महँ लपटायो।
'श्यामसखा' दुबिधा में फसकर मानुष जनम गमायो॥

(१५३)

गर यार की मरजी हुइ सर जोड़ के बैठें।
घर बार छुड़ाया तो वहीं छोड़ के बैठें॥
मोड़ा है वो जिधर वहीं मुख मोड़ के बैठें।
गुदड़ी जो सिलाई तो वहीं ओढ़ के बैठें॥
गर शाल ओढ़ाई तो उसी शाल में खुश हैं।
पूरे हैं वही मर्द जो हर हाल में खुश हैं॥

(१५४)

गर खाट बिछाने को मिली खाट पै सोयें।
दूकाँ मे कहा सो तो वो जा हाट में सोयें॥
रस्ते में कहा सो तो वो जा बाट में सोयें।
गर टाट बिछाने को दिया टाट पै सोयें॥
औ खाल बिछा दी तो उसी खाल में खुश हैं।
पूरे हैं वही मर्द जो हर हाल में खुश हैं॥

(१५५)

साधो जीवत ही करु आसा।
मूवे मुकति कहे गुरु स्वारथी, ताको कहा बिसवासा॥टेर॥
मन हीं बंधन मन हीं मुकती, मन का सकल तमासा।
जो मन को अपना करि माने, ताहि देत बहु त्रासा॥ १ ॥
जो कछु दरसे भाव न ताको, ज्यों सुपने जग भाषा।
परम ब्रह्म चेतन अबिनासी, घट में जाहि निवासा॥ २ ॥
जीवत सूझे जीवत बूझे, जीवत हो भ्रम नासा।
कहत कबीर दया सतगुरु की, मुकती है तोहि पासा॥ ३ ॥

ठगणीं

(१५६)

क्या नैणाँ ठमकावे ठगणी, कबिरो हात न आवे जी॥टेर॥
इन्द्रलोक की दोय अपसरा, गल मोतियन का हारा जी।
जाके मनमें ऐसी आवे, कबीरो करूँ भरतारा जी॥ १ ॥
रूपो पहरे रूप दिखावे, सोनू पहर रिझावे जी।
हम यहाँ बैठे नंगा जोगी, तुझको शरम न आवे जी॥ २ ॥
जात जुलाहो नाम कबीरो, मैं काशी को बासी जी।
मेरे तो मनमें ऐसी आवे, एक मात एक मासी जी॥ ३ ॥
अम्बर बरषे धरती भीजे, पत्थर को काईं भीजे जी।
नाटक चाटक करो घणेरा, कबिरो कबहुँ न रीझे जी॥ ४ ॥
सतगुरु म्हारा पुरा पढ़ाया, बाँध्या काचे धागे जी।
रामानन्द का भणे कबीरा, जल बिच आग न लागे जी॥ ५ ॥

अमूल्य समय

(१५७)

दिन नीके बीते जात सजन कर हरिसे नेहरवा॥टेर॥
घरि घरि घटत जात तन जैसे काचा गागरवा।
प्रान तजत नहिं संग चलेगा, करमें एक करवा॥ १ ॥

निसदिन राम नाम जप लीजे, हिय के मल हरवा।
पाहन तरे नीर पर हो गये पानन ते हरवा॥ २॥
सदा समीप बसे हरि तेरे, सरवन्ह के सरवा।
टेर सुनत तो ऊपर ढ़रि हैं, जैसे बादरवा॥ ३॥
अंतरजामी प्रान पिया प्रभु, पलक न बीसरवा।
जन भावन हरि सांचे साजन, सुख के सागरवा॥ ४॥

भक्तकी प्रार्थना

(१५८)

दीन दयाल दयानिधि स्वामी, कौन भाँति मैं तुम्हें रिझाऊँ॥ टेर॥
तव चरणन से गंगा निकसी, और शुद्ध जल कहाँ से लाऊँ।
कामधेनु सुरतरू तुम्हारे, कौन पदारथ भोग लगाऊँ॥ १॥
चार बेद प्रभु तुमसे प्रगटे, और कहा मैं पाठ सुनाऊँ।
अनहद बाजे बजत तुम्हारे, क्या मैं शंख मृदंग बजाऊँ॥ २॥
कौटि भानु तेरे नखकी शोभा, दीपक ले प्रभु क्या दिखलाऊँ।
लक्ष्मि तब चरणन की चेरी, आन द्रब्य क्या भेंट चढ़ाऊँ॥ ३॥
तुम तिरलोकी करता हरता, छोड़ तुम्हें प्रभु कौन पै जांऊँ।
'सूरश्याम' हरि विपति विदारण, मन वांछित प्रभु तुमसे पाऊँ॥ ४॥

भगवान्का आश्वासन

(१५९)

सदा तुम मुझसे कहते हो, तुम्हें कैसे रिझाऊँ मैं।
सुनो मेरे रिझाने का, सरल रस्ता बताऊँ मैं॥टेर॥
रिझाया था मुझे भिलनी, खिलाकर बेर जंगल के।
लगाया भोग उस दिनका, कभी भी ना भुलाऊँ मैं॥ १॥
रिझाना जो मुझे चाहे, विदुर से पूछ लो रस्ता।
सुदामा की झपट गठरी, खड़ा चावल चबाऊँ मैं॥ २॥

न रीझूँ गान गप्पों से, न रीझूँ तान टप्पों से।
बहा दो प्रेम के आँसू, पिघल बस उस से जाऊँ मैं॥ ३॥
न पत्थर का मुझे समझो, नरम हूँ मोम से बढ़कर।
लगे 'तुलसी' लगन सच्ची, सहज ही उसको पाऊँ मैं॥ ४॥

एक भरौसो

(१६०)

और नहीं कोई कामके, मैं तो भरौसे अपने रामके॥
जो माँगू सो देत पदारथ, और देत सुख धाम के॥
दोऊ अक्षर सब कुल तारे, वारि जाऊँ उस नाम के॥
तुलसीदास आस रघुबर की, और देव सब दाम के॥

हर हर गंगे

(१६१)

तिहारो दरश मोहि भावे, श्री गंगा मैया॥टेर॥
हरिके चरण से प्रगटी हे मैया, शंकर शीश चढ़ावे॥ १॥
सुर नर मुनि तेरी करत वीनती, वेद विमल जस गावे॥ २॥
जो गंगा मैया तेरो जल पीवे, भवसागर तिर जावे॥ ३॥
जो गंगाजी में स्नान करे नित, फेर जनम नहिं पावे॥ ४॥
दास नारायण शरण तिहारी, जनम जनम जस गावे॥ ५॥

तुलसीजीसे प्रार्थना

(१६२)

नमो नमो तुलसी महारानी, नमो नमो हरि की पटरानी॥ टेर॥
जाके दरस परस अघ नासे, महिमा वेद पुराण बखानी॥
साखा पत्र मंजरी कोमल, श्रीपति चरण-कमल लिपटानी॥
धन्य तुलसि पूरण तप कीन्हा, सालिगराम भई मन-भानी॥

शिव सनकादिक अरु ब्रह्मादिक, खोजत फिरत महा मुनी ज्ञानी॥
छप्पन भोग धरे हरि-आगे, बिनु तुलसी प्रभु एक न मानी॥
धूप दीप नैवेद्य आरती, पुष्पन की वरषा वरसानी॥
प्रेम प्रीत कर हरि वश कीन्हे, साँवरि सूरत हृदय समानी॥
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, भक्ति दान दीजे महारानी॥

सालिगराम-पूजन

(१६३)

सालिगराम सुनो विनती मोरी, यह वरदान दया कर पाऊँ॥टेर॥
आप विराजो रतन सिंहासन, झालर शंख मृदंग बजाऊँ।
धूप दीप तुलसी की माला, वरण वरण का पुष्प चढ़ाऊँ॥ १ ॥
जो कुछ अहार मिले प्रभु मोकूँ, भोग लगाकर भोजन पाऊँ।
छप्पन भोग छतीसौं मेवा, प्रेम सहित मैं तुम्हें जिमाऊँ॥ २ ॥
एक बूँद चरणामृत लेकर, कुटुम्ब सहित बैकुण्ठ पठाऊँ।
जो कुछ पाप किया काया से, दे परिकम्मा शीश नवाऊँ॥ ३ ॥
डर लागत मोहि भव सागर को, जमके द्वारे प्रभु मैं नहिं जाऊँ।
राम प्रताप कहे कर जोड़े जनम जनम को दास कहाऊँ॥ ४ ॥

मीठी-सी याद

(१६४)

तुहीं तुहीं याद मोहि आवे रे दरद में॥ टेर॥
लख चौरासी भटकत भटकत,
भटक भटक मर जावे रे दरद में॥ १ ॥
सुख संपति का सब कोई संगी,
दुखमें निकट नहीं आवे रे दरद में॥ २ ॥

भाई बन्धू कुटुम्ब कबीलो,
भीड़ पड़े भग जावे रे दरद में॥ ३॥
साह हुसेन फकीर साईं दा,
हरष निरखि गुन गावे रे दरद में॥ ४॥

प्रार्थना

(१६५)

मैं तो नहीं हूँ तनमें यह चेतना तुम्हारी।
बसमें नहीं है मेरे यह इन्द्रियाँ तुम्हारी॥टेर॥
सुखमें बना हूँ भोगी दुखमें बना हूँ रोगी।
तुमहीं बनाओ जोगी मैं हूँ शरण तुम्हारी॥ १॥
भयभीत हो रहा हूँ घबरा के रो रहा हूँ।
पाया वो खो रहा हूँ रक्षा करो मुरारी॥ २॥
मैं दीन हूँ न टारो हे नाथ तुम उबारो।
दृष्टी कृपा की डारो जय हो सदा तुम्हारी॥ ३॥
बेगी सँभाल लीजे चरनों का दास कीजे।
गोपी को आप दीजे निज भक्ति यह तुम्हारी॥ ४॥

तेरी शरण पड़ा हूँ

(१६६)

तेरी शरन पड़ा हूँ, मुजको तो क्या फिकर है।
तेरा ही गीत गाऊँ, दूजा नहीं जिकर है॥टेर॥
जो दीखता जगत में, खाता है काल सबको।
वह काल उनसे डरपै, जिस पै तेरी महर है॥ १॥
मैं हूँ सदा ही तेरा, बिन मोल का हूँ चेरा।
कुछ भी करो करा लो, मेरा नहीं उजर है॥ २॥

व्यापक सभी जगत में, तूँ हीं झलक रहा है।
तुमको न कोइ जाने, सबकी तुम्हें खबर है॥ ३॥
तेरा ही अंश हूँ मैं, हकदार तेरे दर का।
तेरी ही गोदमें हूँ, अब ना किसी का डर है॥ ४॥

लज्जा आपकी ही जावेगी

(१६७)

जावेगी लाज तिहारी हो नाथ मेरो क्या बिगरेगो॥टेर॥
नीति करी बदनीति सभामें, धरनि धरम सुत हारी हो।
हट गयो तेज प्रबल पारथ को, भीम गदा महि डारी हो॥ १॥
सूर समूह सभी मिल बैठे, बड़े बड़े प्रण धारी हो।
शकुनि दुशासन कर्ण दुर्योधन, सब मिल कुबुद्धि बिचारी हो॥ २॥
मो पति पाँच पाँच के तुम पति, अब पत जावेगी थाँरी हो।
उन पाँचों ने त्याग दई है, तुम मत त्यागो बनवारी हो॥ ३॥
आप तो दीनानाथ कही जो, मैं हूँ दीन दुखारी हो।
जैसे जल बिन मीन तड़फती, सो गति भई है हमारी हो॥ ४॥
अब लगि तो कछु बिगड़्यो नाहीं, खेंचत चीर पुकारी हो।
सूर के स्वामी लाज मरोगे, देखोगे द्रुपदा उघारी हो॥ ५॥

प्रभुके भरोसे निश्चिन्त

(१६८)

मन तूँ क्यों पछितावे रे।
सिरपर श्री गोपाल बेड़ा पार लगावे रे॥टेर॥
निज करनीं को याद करूँ जब जिव घबरावे रे।
प्रभु की महिमा सुन सुन मनमें धीरज आवे रे॥ १॥
शरणागत की लाज तो सबही ने आवे रे।
तीन लोक को नाथ लाज हरि नायँ गमावे रे॥ २॥

जो कोइ अनन्य मनसे हरि को ध्यान लगावे रे।
वाके घर को योग क्षेम हरि आप निभावे रे॥ ३॥
जो मेरा अपराध गिनो तो अन्त न आवे रे।
ऐसो दीन दयाल हरी चित एक न लावे रे॥ ४॥
पतित उधारन विरद हरि को, वेद बतावे रे।
मो गरीब के काज विरद हरी नायँ लजावे रे॥ ५॥
महिमा अपरम पार तो सुर नर मुनि गावे रे।
ऐसो नन्दकिशोर भगत की ओड़ निभावे रे॥ ६॥
वो है रमानिवास भगत की त्रास मिटावे रे।
तूँ मत होय उदास कृष्ण को दास कहावे रे॥ ७॥

परम सेवासे कल्याण

(१६९)

ले लो! ले लो! सज्जन वृन्द, लाभ सेवा का बड़ भारी!
लाभ सेवा का बड़ भारी, लाभ सेवा का बड़ भारी॥ ले लो॥टेर॥
करो नित अन्न वस्त्र जल दान, करो सब जगका हित सम्मान।
बचावो पशु-पक्षिन के प्राण, गरीब अनाथों को दो स्थान।
दो०—सुगम श्रेष्ठ साधन कहूँ, सुनियो सकल सुजान।
लगन एक भीतर लगे, हो सबका कल्याण॥
हो सबका कल्याण, करो घर-घर यह तैयारी॥ ले लो॥ १॥
कहूँ नहिं मन-घड़न्त वाणी, कह रही गीता महाराणी,
बात सब सन्तों ने मानी, सहज में मुक्त होय प्राणी,
दो०—अपने घर या गाँव में, जो कोइ पड़े बिमार।
शुद्ध औषधी देय के, कर लो सद्-उपचार॥
कर लो सद्-उपचार, छोड़ दूजी सम्मति सारी॥ ले लो॥ २॥

प्रथम ईश्वर का नाम सुनाय, पढ़े गीता अष्टम अध्याय,
करे सेवा मल मूत्र उठाय, और नहिं अटपटि बात चलाय,
दो०—गंगाजल में घोटके, तुलसी मुखमें डाल।
गीता सिरहाने रहे, गल तुलसी की माल॥
गल तुलसी की माल, दिखावे प्रभु की छबि प्यारी॥ ले लो॥ ३॥
अगर बचने का नहीं उपाय, धरनि गोवर से दे लिपवाय,
बिछा बृज-रज पर देय सुलाय, हरी-कीर्तन की झड़ी लगाय,
दो०—जीवे तो आनन्द है, जावे तो आनन्द।
कृष्ण-नाम से कट गये, जनम-मरण के फन्द॥
जनम-मरण के फन्द, प्रथम यदि रहा दुराचारी॥ ले लो॥ ४॥
'परम सेवा' है यह भाई, लूँट लो मानुष तन पाई,
हृदय की मिटे मलिनताई, देखि हर्षित हो रघुराई,
दो०—परम-पिता के लाडले, हैं हम सब नर नार।
देख हमारी भावना, करेंगे बेड़ा पार॥
करेंगे बेड़ा पार, कृपा बरषावे गिरधारी॥ ले लो॥ ५॥

विदुरके घर कृष्ण

(१७०)

आज हरि आये विदुर घर पाहुणा॥टेर॥
विदुर नहीं घर थी विदुरानी, आवत देख्या सारंग पाणी।
फूली अंग समावे नाहीं, भोजन कहा जिमावणां॥ १॥
केला बड़े प्रेम से लाई गिरी गिरी सब देत गिराई।
छिलका देत श्याम मुख माहीं, लागे बहुत सुहावणां॥ २॥
इतने माहिं विदुर घर आये, खारे खोटे बचन सुणाये।
छिलका देत श्याम मुख माहीं, कहाँ गमाई भावना॥ ३॥
केला लिये विदुर कर माहीं, गिरी देत गिरधर मुख माहीं।
कहे कृष्ण जी सुणो विदुर जी, वो सवाद नहिं आवणा॥ ४॥

बासी खूसी रूखे, सूखे हम तो विदुरजी प्रेम के भूखे।
'शम्भु सखी' धन धन विदुरानी, भक्तों का मान बढ़ाववणा॥ ५ ॥

श्रीहनुमान्‌जीके सिन्दूर

(१७१)

मोह जाल ममता के बन्धन, जिसने दूर निवारे।
तन मन प्रभु पर वार दिया, वे परमेश्वर के प्यारे,
श्री राघवेन्द्र के प्यारे॥ टेर ॥
एक बार कर स्नान महल में, जनक दुलारी आई।
हनूमान वहाँ जाकर बोला, घाल कलेवा माई॥
सीता बोली कपड़ा पहनूँ, जरा ठहर जा भाई।
करि शृंगार सिया सिन्दूर की, बिन्दी भाल लगाई॥
कपि कलेवा भूल गया बिन्दी की ओर निहारे॥ तन० १ ॥
जब वह कुछ नहिं समझ सका, तो माता से बतलावे।
इसका मतलब बता मात तूँ, बिन्दी काहे लगावे॥
इतनी सुनकर हँसे सियाजी, लाड़ सहित बतलावे।
इस बिन्दी से अपना मालिक, ज्यादा प्यार बढ़ावे॥
ऐसा तो मुझको करना है, कपि मन माहिं बिचारे॥ तन० २ ॥
मन में निश्चय कीन्हा हनुमत, बनूँ राम का प्यारा।
सिया करन लगि काम, कपी ने चारौं तरफ निहारा॥
डिब्बा भरा हुआ सिंदूरका, पटक जमी पर मारा॥
भर भर मुट्ठी ले सिंदूर की, रंग लिया तन सारा॥
बाहर आया दरशाया तो, हँसने लागे सारे॥ तन० ३ ॥
मन में मगन होय बजरंगी दरबारी में आया।
अद्‌भुत शोभा देख राम ने, अपने पास बुलाया॥
प्रेम सहित परमेश्वर बोले, किसने रंग चढ़ाया।

सीता ने जो कहे वचन सो, कपि ने तुरत बताया॥
सूखा रंग उतर जायेगा, यों श्री राम उचारे॥तन० ४॥
मंगल और शनिश्चर के दिन घृत सिंदूर मिलावे।
उस पर ज्यादा कृपा करूँ, जो तेरे लाय चढ़ावे॥
ध्वजा नारियल मोदक मेवा, जो कोई भोग लगावे।
उस पर हम तुम कृपा करेंगे, अन्त अभय पद पावे॥
दास बिहारी इन चरणों पर, सरबस अपना वारे॥तन० ५॥

शरणागति

(१७२)

शरणागत पाल कृपाल प्रभो, हमको एक आस तुम्हारी है।
तुम्हरे सम दूसर और नहीं, कोउ दीनन को हितकारी है॥टेर॥
सुधि लेत सदा सब जीवन्ह की, अतिसय करुना उर धारी है।
प्रतिपाल करो बिनहीं बदले, अस कौन पिता महतारी है॥ १॥
जब नाथ दया करि देखत हो, छुटि जात व्यथा संसारी है।
बिसराय तुम्हें सुख चाहत जो, अस कौन नादान अनारी है॥ २॥
परवाह तिन्हें नहिं स्वर्गहु की, जिन्हको तव कीरति प्यारी है।
धनि धन्य है वे जन बड़भागी, तव प्रेम सुधा अधिकारी है॥ ३॥
सब भाँति समर्थ सहायक हो, तव आश्रित बुद्धि हमारी है।
परताप नारायण तो तुम्हरे, पद-पंकज पै बलिहारी है॥ ४॥

महत् पुरुषोंकी कृपा

(१७३)

मेरे हिरदय लागा सबद बान,
अस तकि मारा सतगुरु सुजान।
मम दसहु दिसा मन करत दौर,
जब लग्यो बान तब रह्यो ठौर।

अब चाल सके नहिं पैंड एक
अस भयो कलेजे माहिं छेक।
लखि सके न कोई मोर पीर,
जाने सोइ जाके लगा तीर।
जीवत ही मोकहुँ लियो मार,
अब रोम रोम ऊठत खुमार।
उर प्रेम मगन रस नहिं अघात,
अति भूल गयो सब और बात।
अब पलटी गति मति पलट्यो अंग,
मिल पाँच पचीसौं रहत संग।
अस उलट समाना सुन्न मायँ,
सोइ सुन्दर कबहु न आव जाइ।

अनिर्वचनीय बोध

(१७४)

अब कहा कहौं कछु कहि न जाय,
जब हम तुम तुम हम रहे बिलाय।
जस लवन पर्‌यो है सिन्धु माहिं,
जेहि खोजत पावत कछुक नाहिं।
अस जीव ब्रह्म को मिट्यो भेद,
संसार भरम को भयो निषेध।
जस बरफ रूप अरु जलाकार,
दोउ भिन्न भिन्न दीखत न सार।
जस खाँड खिलौना रूप रंग
बहु भाँतिन्ह कर आकार ढंग।
जब खाँड गली है मिटा भेक,
तब खाँड खिलौना एक मेक।

जस तानें बानें एक सूत,
अस ब्रह्महिं दरसे जीवभूत।
कहे किसनदास आतम प्रकास,
ज्यों घट बाहर भीतर अकास।

अति विलक्षण भगवद्गीता

(१७५)

जाने क्या जादू भरा हुआ, भगवान तुम्हारी गीता में।
मन चमन हमारा हरा हुआ, घनश्याम तुम्हारी गीता में॥टेर॥
जब शोक मोह से घिर जाते, तब गीता बचन हृदय लाते।
कल्यान खजाना धरा हुआ, भगवान तुम्हारी गीता में॥ १ ॥
गीता ग्रन्थों में न्यारी है, श्रुति जुगती अनुभव कारी है।
युग युग का अनुभव जुड़ा हुआ, घनश्याम तुम्हारी गीता में॥ २ ॥
गीता सन्तों का जीवन है, गंगा के सम अति पावन है।
शरनागति अमरित भरा हुआ, भगवान तुम्हारी गीता में।
बिग्यान ग्यान रस भरा हुआ, घनश्याम तुम्हारी गीता में।
हरि प्रेम लबालब भरा हुआ, भगवान तुम्हारी गीता में॥ ३ ॥

परिशिष्ट

(१७६)

हमारे गुरु दीन्ही एक जरी।
कहा कहौं कछु कहत न आवै अमरित रस की भरी॥टेर॥
ताको मरम संत जन जानत, वस्तु अमोल खरी।
याते मोहि पियारी लागत, लेकर सीस धरी॥
इक भुजंग अरु पाँच नागिनी, सूँघत तुरत मरी।
डाकिनि एक खात सब जगको सो भी देखि डरी॥

त्रिविध विकार ताप तन भागे दुरमति सकल हरी।
ताको गुन सुनि मीचु पलाई और कौन बपुरी॥
निसि बासर नहिं ताहि बिसारत, पल छिन आध घरी।
सुन्दरदास भयो घट निरविष, सबही ब्याधि टरी॥

(१७७)

साधो सहज समाधि भली।
गुरु प्रताप जा दिन तैं उपजी, दिन दिन अधिक चली॥टेर॥
जहँ जहँ डोलूँ सोइ परिकम्मा, जो कछु करौं सो सेवा।
जब सोवौं तब करौं दंडवत, पूजौं और न देवा॥ १ ॥
कहौं सो नाम सुनौं सो सुमिरन, खावौं पिवौं सो पूजा।
गिरह उजाड़ एक सम लेखौं, भाव न राखौं दूजा॥ २ ॥
आँख न मूँदौं कान न रूँधौं, तनिक कष्ट नहिं धारौं।
खुले नयन पहिचानउँ हँसि हँसि, सुन्दर रूप निहारौं॥ ३ ॥
सबद निरंतर से मन लागा, मलिन वासना त्यागी।
ऊठत बैठत कबहु न छूटे, ऐसी तारी लागी॥ ४ ॥
कह 'कबीर' यह उनमनि रहनी, सोउ परगट करि भाई।
दुख सुख से कोइ परे परमपद, तेहि पद रहा समाई॥ ५ ॥

(१७८)

साधो सोइ सतगुरु मोहि भावे।
राम नाम का भर भर प्याला, आप पिये मोहि पावे॥टेर॥
मेला करे ना महन्त कहावे, पूजा भेंट न चाहवे।
परदा दूर करे अँखियन का, ब्रह्म दरश दिखलावे॥ १ ॥
जाही बिधि साहिब घट दरशे, सो मोहि शबद सुनावे।
माया के सुख दुख करि माने, आतम सुख उपजावे॥ २ ॥
निसदिन राम भजन में राता, शबद में सुरता समावे।
कहत कबीर ताको भय नाहीं, निरभय पद परसावे॥ ३ ॥

(१७९)

भाइ संत बड़े वे श्रेष्ठ कुछ भी नहिं चाहवे जी नहिं चाहवे।
सब जीवों का भ्रम मेट हरि हरि दरसावे जी दरसावे॥ टेर॥
ना कोइ मूँडे चेला चेली, मूँडे कलेजा ठेट, भव दुख मिट जावे॥ जी॥
ना अपनी पूजा करवावे, ना माँगे कछु भेंट, सबके मन भावे॥ जी॥
कौड़ी पैसा पास न राखे, सेठों के वे सेठ, अमरित बरसावे॥ जी॥
ना कोइ आश्रम कुटी छ्वावे, खुली हवा में बैठ, प्रभु का गुन गावे॥ जी॥
केस बरोबर गरज न किसकी, पूत राम के जेठ, हरिपुर पहुँचावे॥ जी॥
ना गृहस्थ का धरम छुड़ावे, ना कोइ बदले फेंट, हिवड़ो रँग जावे॥ जी॥
ना कोइ भेजे परबत जंगल, भेजे हरिपुर ठेट, वापिस नहिं आवे॥ जी॥
जनम जनम के भूखे प्राणी, भर रहे सबका पेट, जिवड़ा सुख पावे॥ जी॥

(१८०)

कर हरि चरनन से हेत हेत।
बाल पनो खेलन में खोयो, केस भये सिर स्वेत स्वेत॥ १॥
मानुष जनम अमोलक हीरा, काहे रुलावत रेत रेत॥ २॥
बीज बोइ कर खबर न लीन्ही, चिड़िया चुग गइ खेत खेत॥ ३॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो, मरकर होहि हैं प्रेत प्रेत॥ ४॥

(१८१)

हरिजी से लागे रहो रे भाई, तेरी बिगड़ि बात बनि जाई॥टेर॥
रंका लागी बंका लागी, लागी सदन कसाई।
धन्ना भगत के ऐसी लागी, हरिने साख निभाई॥ १॥
सेना लागी केवट लागी, लागी मीराँबाई।
बलख बुखारे ऐसी लागी, छाँड़ि चले बादशाही॥ २॥
ध्रुव लागी प्रहलाद के लागी, नारद बीन बजाई।
शिव सनकादिक लागे रहत नित, कबहु न रहत अघाई॥ ३॥

ऐसा ध्यान धरो घट भीतर, आवागमन मिटाई।
कै तुम जानो कै प्रभु जाने, माया पति रघुराई॥ ४॥
सतगुरु बैठे सैन बतावे, शूरा लड़त लड़ाई।
भेरी शंख नगारा बाजे, वीर चले हरषाई॥ ५॥
बयरी घात करे छिप छिप कर, प्रगट न देत दिखाई।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, हारो तो रामदुहाई॥ ६॥

(१८२)

प्याला प्रेम का हो कोई पीवे साधु सुजान।
भर भर प्याला छक छक पीवे, ऐसा राम रसान॥टेर॥
नारद पीयो शारद पीयो, शुक पीयो भर प्रान।
सनकादिक ब्रह्मादिक पीयो, पवन पुत्र हनुमान॥ १॥
ध्रुव पीयो प्रहलाद ने पीयो, पियो विभीषण दास।
शंकर पियो गोपिका पीयो, बालमीक बेदव्यास॥ २॥
अरजुन पीयो सुदामा पीयो, चन्द्रहास हरिदास।
अम्बरीष रूकमाँगद पीयो, भयो अमरपुर वास॥ ३॥
पियो सुधनवा भक्त मोरध्वज रन्तिदेव हरिचन्द।
शिवि दधीचि बलि भीष्म विदुर अरु पियो जसोदा नन्द॥ ४॥
नामदेव रामानँद पीयो, और पियो रैदास।
कबिरा पीयत ना छक्यो कोइ और पिवन की आस॥ ५॥

(१८३)

म्हारा साहिब है रँगरेज, चुनर मेरी रँग डारी॥ टेर॥
स्याही रंग छुडाय के रे, दियो मजीठी रंग।
धोये से छूटे नहीं रे, दिन दिन होत सुरंग॥ १॥
नेह का जल अरु भाव की कूंडी, प्रेम रंग दइ बोर।
माया मैल छुड़ाय के रे, खूब रँगी है झकझोर॥ २॥

साहिबने चुनरी रँगी रे, प्रीतम चतुर सुजान।
सब कुछ उनपर वार दूँ रे, तन मन धन अरु प्रान॥ ३॥
कह कबीर रँगरेज पियारे, हमपर हुये दयाल।
सुरँग चूनरी रँगी हमारी, भइ हौं ओढ़ निहाल॥ ४॥

(१८४)

चलो मन गंगा यमुना तीर।
गंगा यमुना निरमल पानी, सीतल होत सरीर।
बंसी बजावत गावत कान्हो, संग लिये बलबीर॥
मोर मुकुट पीताम्बर सोहे, कुण्डल झलकत हीर।
मीराके प्रभु गिरधर नागर चरणकँवलपर सीर॥

(१८५)

सो लीला तेरी अजब निराली है॥ टेर॥
तूँ अजर अमर है निराकार भगतोंके कारज देह धरे।
बिन पैर चले बिन कान सुने बिन हात करोड़ों काम करे॥
सब जगहँ विश्वमें वास तेरा हो महाप्रलय फिर भी न मरे।
तूँ पिता है सबही पुत्र तेरे भोजन दे सबका पेट भरे॥
हाकिम तूँ सारी दुनियाँका तेरा हुकम किसीसे नहीं टरे।
जिसकी भी तुमसे लगन लगी सुख दे उसका दुख दूर करे॥
डर तेरा है वह निडर हुआ दुनियाँसे बिलकुल नहीं डरे।
हे दीनबंधु तेरी याद करे वह पलभरमें भव सिन्धु तरे॥
सारे जगत फूलबगियाका तूँ ही माली है॥ १॥
तेरे किसी पेड़पर फल लटके अरु किसी पेड़पर लगी फरी।
कहिं घनी बस्ति कहिं है उजाड़ कहिं खुश्की है कहिं तरी तरी॥
कहिं खाख उड़े है धुआँधोर कहिं घास खड़ी है हरी हरी।
कहिं ऊँचे टीले चमक रहे कहिं नीची धर करतार करी॥

कहिं वाह वाह कहिं हाय हाय कहिं खैर खुशी कहिं मरी मरी।
कहिं जन्मघड़ी कहिं ब्याह लगन कहिं हवन होय कहिं चिता जरी॥
कहिं द्वार पै नोपत बाज रही कहिं रोय रोय अखियाँ नीर भरी।
किस तौर करूँ गुनगान तेरा है धन्य धन्य तेरी कारीगरी॥
माया तेरी रिषि मुनियोंको मोहनहारी है॥ २॥

कहिं रुपियोंका है ढेर लगा कहिं टुकड़े माँगे दर दर के।
कोइ बना हुआ है बादशाह कोइ वक्त गुजारे डर डर के॥
कोइ हुकुम चलावे लाखोंपर कोइ जीवे खटनी कर कर के।
कोइ मौज करे कोइ पेट भरे अपने सिर बोझा धर धर के॥
कोइ देख किसीको मगन होय कोइ मिला खाखमें जर जर के।
कोइ हँसे टहाका मार मार कोइ रोवे आँसू भर भर के॥
कोइ है गोरा किसीकी काया बिलकुल काली है॥ ३॥

कोइ चले नहीं बिन मोटर के कोइ नंगे पैरों भाग रहा।
कहिं ढेर पड़ा जर जेवरका कोइ करज किसीसे माँग रहा॥
कोइ शांत सबूरी कर बैठा कोइ सिकल बिकल हो भाग रहा।
कोइ किसीका दुश्मन बन बैठा कोइ प्रेम किसीसे पाग रहा॥
कोइ भोग वासनाका गुलाम कोइ हरि भगतीमें लाग रहा।
कोइ सुखकी निंदियाँ सोय रहा कोइ पड़ा फिकरमें जाग रहा॥
कोइ दुष्टोंके कुसंगमें रहकर जीवन अपना दाग रहा।
कोइ संतनकी संगत करके तेरी भगतीमें लाग रहा॥
अपने भगतोंकी तूँ करता नित रखवाली है॥ ४॥

(१८६)

जगा दो भारत को भगवान्॥टेर॥
बिहार जागे उत्कल जागे, जागे बँग आसाम।
करनाटक गुजरात मराठा, जागे राजस्थान॥ १॥

बालक ध्रुव प्रह्लाद से होवे, धरें तुम्हारा ध्यान।
वीर हकीकतराय से होवे, धरम हेतु बलिदान॥ २॥
सीता सावित्री दमयंती, फिरसे प्रगटे आन।
दुर्गावति लक्ष्मीबाई की, चमके चपल कृपान॥ ३॥
ब्राह्मण हो तेजस्वी त्यागी, गौतम कपिल समान।
तन्मय होकर स्वरसे गावे, सामवेद का गान॥ ४॥
क्षत्रिय हो विक्रम प्रतापसे, रणरंगी बलवान।
करें देश हित जान न्योछावर, हँस हँस दे निज प्रान॥ ५॥
वैश्य होइ भामासा जैसा, करें देश हित दान।
शूद्र होय रविदास भक्त सा, कबीर सा मतिमान॥ ६॥

(१८७)

जिनके हियमें श्रीराम बसे तिन साधन और कियो न कियो।
जिन संत चरणरज को परसा तिन तीरथ नीर पियो न पियो॥
सब भूत दया जिनके चितमें उन कोटिन दान दियो न दियो।
जेहि ध्यान निरंतर है प्रभुको मुखसे तिन नाम लियो न लियो॥
जो भर प्याला हरिरस चाख्यो वह तो रस और पियो न पियो।
जिन श्रवनन को प्रिय राम कथा चित और कथामें दियो न दियो॥
जिन नैनन सुन्दर श्याम बसे तिन और को दरस कियो न कियो।
कबिरा जब मैंपन छाँड़ि दिया सो मरो तो मरो वा जियो तो जियो॥

(१८८)

राम नाम पूँजी पल्ले बाँधो रे मना।
बाँधो पल्ले बाँधो पल्ले बाँधो रे मना॥टेर॥
ध्रुव बाँधी प्रहलाद ने बाँधी, बाँधी जाट धना।
मीराँ बाँधी वर पायो है, नन्दनन्दना॥ १॥

पींपा अरु रैदास बाँधी, शबरी सदना।
दास तो कबीरे बाँधी, ताना रे बाना॥ २॥
बाल पने का मित्र जो, सुदामा ब्रह्मना।
ताको सब दारिद्र खोयो, रच दी रचना॥ ३॥
गनिका गीध अजामिल तारे, तारे अधम जना।
'सूर' के स्वामी अंतरजामी, माफ करो गुनाह॥ ४॥

(१८९)

कोइ पीवे राम रस प्यासा रे।
गगन मँडल में अमरित बरसे, पी लो सांसम सांसा रे॥
ऐसा महँगा अमृत बिकता, छह रितु बारह मासा रे॥
जो पीवे सोइ जुग जुग जीवे, कबहु न होइ विनासा रे॥
एहि कारन राजा भये जोगी, छोड़ा भोग विलासा रे॥
सहज ही राज सिंघासन त्यागे, भसम लगाय उदासा रे॥
गोपीचन्द भरथरी रसिया, और कबिर रैदासा रे॥
गुरु दादू परसाद पाइ कै, पीवे 'सुन्दरदासा' रे॥

(१९०)

राम कहो राम कहो राम कहो बावरे।
अवसर न चूक भोदू पायो भलो दाँव रे॥टेर॥
जिन तोकूँ तन दीनो, ताको ना भजन कीनो,
जनम सिरानो जात, लोहे कैसो ताव रे॥ १॥
रामजी को गाय गाय, राम को रिझाव रे।
रामजी के चरन कमल, चित माहीं लाव रे॥ २॥
कहत मलूकदास, छोड़ दे पराई आस।
आनँद मगन होय हरि गुन गाव रे॥ ३॥

(१९१)

अब कैसे छूटे राम रट लागी॥ टेर॥

प्रभुजी तुम चंदन हम पानी, जाकी अँग अँग बास समानी॥

प्रभुजी तुम घन हम बन मोरा, जैसे चितवत चंद चकोरा॥

प्रभुजी तुम दीपक हम बाती, जाकी जोति जगे दिन राती॥

प्रभुजी तुम मोती हम धागा, जैसे सोनहि मिलत सुहागा॥

प्रभुजी तुम स्वामी हम दासा, ऐसी भगति करे रैदासा॥

(१९२)

दुनियाँ से नेह लगाय के, मत भूले नाम हरी का॥ टेर॥

नव दस मास गरभ में झूल्यो, भजन करन को बचन कबूल्यो,
बाहर आय सबहि सुध भूल्यो, मन्दिर महल चिनाय के,
सुख भोगे सदा परी का॥ १॥

मात पिता भ्राता सुत नारी, मतलब की सब नातेदारी,
ऊपर बाजे काल कटारी, दूर सभी भग जायँगे,
कोइ संगी ना बिगड़ी का॥ २॥

क्या करता मन मेरी मेरी, साढ़े तीन हात नहिं तेरी,
काल लगाय रया चहुँ फेरी, प्राण तजे मुख बाय के,
ज्यों हाल होय बकरी का॥ ३॥

जग सुपना है रैन बसेरा, बिन भगवान कोई नहिं तेरा,
सुखीराम समझो मन मेरा, तिर गये हरिगुण गाय के,
डर रहा न जम नगरी का॥ ४॥

(१९३)

जगत माहीं बहुत बड़ी सतसंगा॥ टेर॥

जे कोइ साँची संगति पावे, दुख में होत निसंगा॥ १॥

जैसे परिक्षित पार उतर गये, सुण सुण कथा प्रसंगा॥ २॥

जनम जनम की भूल मिटी है, जीवन हो गया चंगा॥ ३॥
सबद का बाण लगा घट भीतर, उड़ गया भरम पतंगा॥ ४॥
जैसे लोहा कंचन होवे, कर पारस का संगा॥ ५॥
जैसे नदियाँ मिली गंग में, सब मिल हो गइ गंगा॥ ६॥
बेद पुराणन में यह गावे, होत कीट से भृंगा॥ ७॥
कह सुकदेव सुणो परिक्षित लागत है हरि रंगा॥ ८॥

(१९४)

सुख कयो न जाय सतसंगनो रे, अँग आठों ही सीतल थाय।
अड़सट तीरथ घर आँगणें रे, त्याँ हरिजन हरिजस गाय।
सुख ब्रह्मलोक थी है घणों रे, बैकुण्ठ थी बढ़तो ही जाय।
ए तो काम क्रोध लोभ मद ईरषा रे, सतसंग थी अलगा ही जाय।
दास रतनो कहे सतसंग थी रे, भय लख चौरासी नो जाय।

(१९५)

सतसंग के परताप से दुख दरिद सारा टल गया।
अगनित जनम के पाप का, कूड़ा भरा वह जल गया॥टेर॥
कहते हैं कोई क्या मिला, समझा उसे सकते नहीं।
बिछुड़ा न पलभर भी कभी था, मिला सोइहि मिल गया॥ १॥
फूला हुआ फिरता सदा निज मूर्खता अभिमान में।
भइ संत चरनन की कृपा, अहँकार असुर निकल गया॥ २॥
बेहोश रहता था सदा सुख भोग की आसक्ति में।
प्रगटत ही ग्यान प्रकाश के, मुरझा पड़ा वह खिल गया॥ ३॥
परमातमा परिपूर्ण है, सब देशमें सब कालमें।
परिछिन्नता का भान वो, घनश्याम रँगमें घुल गया॥ ४॥

(१९६)

क्या देख दिवाना हुआ रे॥ टेर॥
यो संसार सार की सूली नारी नरक का कुआ रे॥ १॥

हाड़ चाम का बना पींजरा, भीतर मनवा सुआ रे॥ २॥
काल चक्र तेरे सिरपर डोले, ज्यों मंजारी चुहा रे॥ ३॥
काकी मामी और भतीजी, बहन भानजी भुवा रे॥ ४॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो, हार चल्यो जैसे जुआ रे॥ ५॥

(१९७)

रे मन मूरख जनम गमायो।
कर अभिमान विषय सौं राच्यो, श्याम शरण नहिं आयो॥ १॥
यह संसार फूल सेमर को, सुन्दर देखि लुभायो।
चाखन लग्यो रुई उड़ गई, हाथ कछू नहिं आयो॥ २॥
कहा भयो अबके मन सोच्यो, पहले नाहिं कमायो।
सूरदास हरि नाम भजन बिनु, सिर धुनि धुनि पछितायो॥ ३॥

(१९८)

नर तैं जनम पाइ कहा कीनो।
उदर भर्‌यो कूकर सूकर ज्यों, हरि को नाम न लीनो॥टेर॥
श्री भागवत सुनी नहिं श्रवननि, गुरु गोविंद नहिं चीनो।
भाव भक्ति कछु हृदय न उपजी, मन विषयन महँ दीनो॥ १॥
झूठो सुख अपनो करि जान्यो, परस प्रिया कै भीनो।
अघ को मेरु बढ़ाय अधम तूँ अंत भयो बल हीनो॥ २ ॥
लख चौरासी जौनिं भरम के, फिर वाही मन दीनो।
सूरदास भगवंत भजन बिनु, ज्यों अंजलि जल छीनो॥ ३॥

(१९९)

दोय दिन का जगमें मेला, सब चला चली का खेला॥ टेर॥
कोइ चला गया कोइ जावे, कोइ गठरी बाँध सिधावे,
कोइ खड़ा तैयार अकेला॥ १॥

कर पाप कपट छल माया, धन लाख करोड़ कमाया,
सँग चले न एक अधेला॥ २॥
सुत नार मातु पितु भाई, कोइ अंत सहायक नाहीं,
क्यों भरे पाप का ठेला॥ ३॥
यह नश्वर सब संसारा, कर भजन प्रभू का प्यारा,
ब्रह्मानंद कहे सुन चेला॥ ४॥

(२००)

चलो चलो सखी अब जाना, पिया भेज दिया परवाना॥टेर॥
एक दूत जबर चल आया, सब लशकर संग सजाया,
किया बीच नगर के थाना॥ १॥
गढ़ कोट किला गिरवाया, सब द्वार बंध करवाया,
अब किस विध होय रहाना॥ २॥
जब दूत महल में आवे, वे तुरत पकड़ ले जावे,
तेरा चले न एक बहाना॥ ३॥
वह पंथ कठिन है भारी, कर सँग सामान तैयारी,
ब्रह्मानंद फेर नहिं आना॥ ४॥

(२०१)

आराम के हैं सब सँग साथी, जब वक्त पड़ा तब कोइ नहीं।
यहाँ मतलब के हैं लोग सभी, दुनियाँ में किसीका कोइ नहीं॥टेर॥
जब टिकट मिला है जाने का, तब डेरा किया मसाणो में।
वहाँ जलाने वाले लाखों थे, पर जलने वाला कोइ नहीं॥ १॥
जब बाग हरा था फूलों से, इठलाती थी कलियाँ बाँकी।
वो बिखर गई क्या फिकर करें, वहाँ रहने वाला कोइ नहीं॥ २॥
दरदी दिन रात रुला करते, बेदरदी हँसते ओर खिलते।
वहाँ सुनने वाले लाखों थे, समझाने वाला कोइ नहीं॥ ३॥
यह ख्याल जगत कैसा है, ओर यार सभी का पैसा है।
आतम का कहना ऐसा है, समझाता सुनता कोइ नहीं॥ ४॥

(२०२)

इक दिन है मरना, है मरना, कोइ राग द्वेष मत करना॥टेर॥
कृपा करी मानुष तन दीन्हो, ताको नहीं बिसरना।
अंतर द्वार उनगनी साधो, सिरजन हार सुमरना॥ १ ॥
काम क्रोध मद लोभ ईरषा, इनका सँग परहरना।
होय हुँसियार हरी को सुमिरो, निसदिन पार उतरना॥ २ ॥
मेरो कयो मान मन मूरख, गुरु गोविन्द से डरना।
इक दिन उनसे काम पड़ेगा, पकड़ उसीका सरना॥ ३ ॥
मरने का भय पैंड पैंड पर, समझ समझ पग धरना।
भक्त भारतीं गुरू कृपाते, भवसागर से तरना॥ ४ ॥

(२०३)

तूँ चेत मुसाफिर अब तो गाड़ी चलने वाली है।
चलने वाली है, राम घर चलने वाली है॥टेर॥
बिस्तर गोल करो जलदी अब टिकटें कटती है।
सींगल तो नीचे गेर दिया, अब घंटी बजती है॥ १ ॥
राम नाम का टिकट साथमें, लेकर चलना है।
भाइ बिना टिकट तो धक्का खाकर बाहर टलना है॥ २ ॥
तोड़ जगत के बंधन सारे, करो पयाना है।
रहो सदा अमरापुर में, वापिस नहिं आना है॥ ३ ॥

(२०४)

उमर सब गफलत में खोई, किया शुभ करम नहीं कोई॥ टेर॥
फिरा स्वारथ में दिवाना, नहीं परमारथ पहिचाना,
खेलना खाना अभिमाना, काम क्रीड़ा में सुख माना,
जग धंधे में खो दिया सारा समय अमूल।
रैन गमाई सोयके रे जीवन गयो समूल।
बेल तैं पापों की बोई॥ १ ॥

बिमुख हो निज प्रभु से प्यारे, किये दुरगुण भारे भारे,
हजारौं बे गुनाह मारे, दीन अरु दुखिया नहिं टारे,
तब क्या उत्तर देयगा न्यायाधीश दरबार।
जहाँ नहीं है झूठे साक्षी नहिं वकील मुखत्यार।
चले फिर वहाँ न बदगोई॥ २॥
समझ मन अब तो सैलानी, छोड़ दे जगत बेईमानी,
चले गये लाखों अभिमानी, तूँ है किस गिनती में प्रानी,
हरि सुमिरन कर जीव जड़ तुझे कहूँ हरबार।
स्वारथ में सब नर तन खोयो, रे मतिमंद गँवार।
बेग उठ बहुत लिया सोई॥ ३॥
सुहृद सुत पितु कुटुम्ब दारा, हुआ क्यों धन पर मतवारा,
मौत का आवे हलकारा, छुटेगा इक दिन संसारा,
सपने सो हो जावसी सुत कुटुम्ब धन धाम।
हो सचेत बलदेव नींद से जप ईश्वर का नाम।
मनुष तन फिर फिर नहिं होई॥ ४॥

(२०५)

रामजी को राख भरौसो भाई।
जे तूँ राखे राम भरौसो, कमी नहीं राखे काही॥टेर॥
कीड़ी को कण देत रामैयो, हाथी मण भर खाई।
अनड़पंख आकाश उड़त है, ताको चूण चुगाई॥ १ ॥
अजगर उड़त न चलत धरनिपर, चोंच मोड़ नहिं खाई।
ताको भरण करे भूधरियो, पलक नहीं बिसराई॥ २॥
जम के द्वारे मैं नहिं जाऊँ, यह मेरे मन भाई।
हरिजी को छोड़ जगत ने जाचे, लाजे त्रिभुवन राई॥ ३॥
पूरत राम उदर भर सबको, यामें फरक न राई।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, हरिजी ने लाज बड़ाई॥ ४॥

(२०६)

वो घर सतगुरु क्यों न वतावो जिन घर से जिव आया है।
काया छाँड चला जब हंसा, कहो जी कहाँ समाया है॥टेर॥
मैं मेरी ममता के कारण, बारमबार ठगाया है।
समझ न पड़ी ग्यान गुरु गम की, फिर तातें भटकाया है॥ १ ॥
रज बीरज दोऊ नहिं होता, जीव कहाँ ठहराया है।
ब्रह्मा विष्णु महेश न होता, आदि न होती माया है॥ २ ॥
चन्द्र न सूर दिवस नहिं रजनी, जहाँ जाय मढ़ छाया है।
सुरत सुहागन पाँव पलूटे, पिव अपणां ही पाया है॥ ३ ॥
मेरी प्रीत पिया सूं लागी, उलट निरंजन ध्याया है।
भणत कबीर सुणो भाइ साधो, अपरंपार बनाया है॥ ४ ॥

(२०७)

छूटे जो अहंकार से है ब्रह्म सच्चिदानंदा॥टेर॥
विषय वासनाओंमें फसकर, जीव भयो मतिमंदा।
जब लगि मोह फास नहिं छूटे, अहंकार है जिन्दा॥ १ ॥
पुन्य पाप का करता माने, भोक्ता सुख दुख द्वंदा।
निज स्वरूप को भूलि पर्‌यो है, जनम मरनके फंदा॥ २ ॥
रहता सभी अवस्था मे जो, निर्विकार निस्पंदा।
अहंकार बिन स्वयं प्रकाशे, जैसे पूरन चंदा॥ ३ ॥
ज्यों निरमल जल मल के सँगमें, मिलकर हो गयो गंदा।
मैं मेरापन मिटते ही वह, ज्यों का त्यों स्वच्छंदा॥ ४ ॥

(२०८)

कछु लेना न देना मगन रहना॥ टेर॥
पाँच तत्व का बना है पींजरा, भीतर बोल रही मैना।
तेरा पिया तेरे घटमें बसत है, देखो री सखी खोल नैना।

गहरी नदियाँ नाव पुरानी, केवटिया से मिल रहना।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, प्रभुके चरन लिपट रहना॥

(२०९)

गुप्त बात गुरुजन से पाई, धारन कर के चुप रहना।
नाशवान का संग छोड़ कर, अविनाशी में थिर रहना॥टेर॥
जो है कभी न घटता बढ़ता, सोइहि रूप तुम्हारा है।
नाम रूप आकार न तेरा, तूँ इन सब से न्यारा है।
कथन मात्र है यह जग सारा, मोह निशा का है सपना॥ १ ॥
बादल गरजे बिजली चमके, बरसत है जलकी धारा।
रहता यह आकाश निरंतर ज्यों का त्यों निरमल सारा।
देह विनाशी तूँ अविनाशी, इनके सँग में मत बहना॥ २ ॥
अनूकूल प्रतिकूल लखे जो, हरष शोकमें मत दहना।
ईश्वर के शरणागत होकर, समता माहिं अटल रहना।
यह अनमोल वचन संतन का, अनधिकारि से मत कहना॥ ३ ॥

(२१०)

सच्चिदानंद तूँ नित्य निर्द्वंद्व तूँ जीव माना।
बन गया देह में तूँ दिवाना॥टेर॥
अपने अग्यान से भरमाया, शेर होकर के मैं मैं मचाया।
मेरा घरबार है मेरा परिवार है ये खजाना॥ बन॥ १ ॥
हो के अविनाशि जनमा मरा है, रज्जु में सर्प देख डरा है।
झूठा भ्रम जाल है ये स्वपन काल है सत्य माना॥ बन॥ २ ॥
तेरी माया ही तुझको नचाती, खेल रचकर के तुमको रिझाती।
खेल में खेलना कष्ट दुख झेलना ना अघाना॥ बन॥ ३ ॥
पाँच तत्वों का देह न तेरा, अब मत मान इसको मैं मेरा।
ग्रन्थी छुट जायगी बेड़ी कट जायगी ले ठिकाना॥ बन॥ ४ ॥

(२११)

ब्रह्म सच्चिदानंदा, भूल कर भयो बंदा॥ टेर॥
आया था तूँ क्या करने को, छेड़ दिया क्या धंधा॥ १॥
बिषय वासनाओं में फसकर, हो गयो मूरख अंधा॥ २॥
जैसे सिंघ भेड़ बन बैठो, चरे बकरी के संगा॥ ३॥
मृग के नाभि बसे कस्तूरी, घास की लेत सुगंधा॥ ४॥
जब अपनो निज रूप सँभार्यो, ज्यों का त्यों स्वच्छंदा॥ ५॥

(२१२)

माया महा ठगनी हम जानी।
निरगुन फास लिये कर डोले, बोले अमरित बानी॥टेर॥
केशव के कमला ह्वै बैठी, शिव के भवन भवानी।
पंडा के मूरति ह्वै बैठी, तीरथ में भइ पानी॥ १॥
जोगी के जोगिन ह्वै बैठी, राजा के घर रानी।
काहू के हीरा ह्वै बैठी, काहू के कौड़ी कानी॥ २॥
भगतन के भगतिन ह्वै बैठी, ब्रह्मा के ब्रह्मानी।
कहत कबीर सुनो हो संतो, यह सब अकथ कहानी॥ ३॥

(२१३)

पानी में मीन पियासी, मोहि देखत आवे हाँसी॥ टेर॥
आतम ग्यान बिना नर भटकत कोइ मथुरा कोइ कासी।
कस्तूरी मृग नाभी अंदर बन बन फिरत उदासी॥ १॥
जल बिच कमल कमल बिच कलियाँ तापर भँवर लुभासी।
विषयन बस तिरलोक भयो सब जती सती संन्यासी॥ २॥
जाको ध्यान धरत बिधि हरि हर मुनि जन सहस अठासी।
सोउ तेरे घट माहीं विराजत परम पुरुष अबिनासी॥ ३॥
भीतर को प्रभु जान्यो नाहीं बाहिर खोजन जासी।
कहत कबीर सुनो भाइ साधो जो खोजे सो पासी॥ ४॥

(२१४)

नजरिया ये जाती जिधर भी हमारी।
उधर देखता हूँ मैं सूरत तुम्हारी॥टेर॥
बना कैसा दुनियाँका सुन्दर बगीचा।
सभी डाल पत्तोंमें तेरी हरारी॥ १॥
करे नाच ज्यों काठ पुतली हजारौं।
कला एक सबहीमें दरशे तिहारी॥ २॥
बदलती है रंगत जगतकी हमेशां।
तूँ हीं सबके अंदरमें है निर्विकारी॥ ३॥
तेरी रोशनीसे चमकता है अंबर।
ब्रह्मानंद घट घट में तेरी उजारी॥ ४॥

(२१५)

मन मगन भया तब क्या बोले॥ टेर॥
सुरत कलाली भइ मतवाली, अमृत पी गइ बिन तोले॥ १॥
रीता है सोइ डगमग डोले, पूरा भया तब क्या बोले॥ २॥
तेरा साईं है तुज माहीं, बाहर नैना क्या खोले॥ ३॥
हंसा पाया मान सरोवर, डाबर डाबर क्या डोले॥ ४॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो, साहिब पाया तृण ओले॥ ५॥

(२१६)

दगा किसीका सगा नहीं है, करके दगा कोइ देख लो रे॥टेर॥
दगा किया था दुशासन ने, द्रौपदी के साथमें रे।
खेंच हारा चीर तब क्या, हाथ लगा कोइ देख लो रे॥ १॥
दगा किया रावण ने सीता, राम की हर ले गया रे।
वंश उसका मिट गया क्या जंग जगा कोइ देख लो रे॥ २॥

कंस ने अक्रूर को भेजा बुलाने कृष्ण को रे।
पकड़ चोटी दे पछाड़ा, मामा सगा कोइ देख लो रे॥ ३॥
बावन बन राजा बलीसे, दगा किया खुद विष्णुने रे।
चार महीने नौकरी का, लाग लगा कोइ देख लो रे॥ ४॥
यारो किसी से दगा न करना, कहत यों दामोदरा रे।
दगा जमी पर जो किया खुद, वही ठगा कोइ देख लो रे॥ ५॥

(२१७)

जागिये हे मातृ शक्ती, नींद में क्यों सो रही।
बंद कर संतान को तुम, क्यों निपूती हो रही॥
जागिये हे हिन्दु जननी, नींद में क्यों सो रही।
वंश अपना नाश कर तुम, क्यों निपूती हो रही॥टेर॥
यह सकल सृष्टि तुम्हारी, तुमहीं पालन हार हो।
नाश अब तुम कर रही, है दुख बड़ा हमको यही॥ १॥
माँ अगर बनती नहीं तुम, हो कहो किस काम की।
छनिक सुख की लालसा से, बीज विष के बो रही॥ २॥
गर्भ पात कराय के तुम, डाकिनी क्यों बन रही।
खा रही बच्चोंको खुद माता की कीरति खो रही॥ ३॥
है भयंकर पाप इसका, ब्रह्महत्या से बड़ा।
करके अपनी दुर्गती क्यों, पाप सिरपर ढो रही॥ ४॥
छोड़ सुख आराम हिन्दू, वंश की रच्छा करो।
अन्न जल भगवान देते, बात सच्ची है सही॥ ५॥

(२१८)

भगतों की मदद भगवान खड़ा सुन भाई।
भगतों का बुरा जो करे कत्ल हो जाई॥ टेर॥
हिरनाकुश नेकी छोड़ बदी पर आया।
प्रहलाद भगत ने राम नाम गुन गाया।

जब किया असुर अति कोप दिया दुख काया।
प्रहलाद भजे मुख राम नहीं घबराया।
हरि चिरी दुष्ट की खाल कागला खाई॥ १॥
रावण के नव ग्रह बँधे खाट के पाया।
दस सीस भुजा थी बीस बड़ी थी काया।
उनके जो भक्त विभीषण छोटा भाया।
वह त्याग दुष्ट को संग राम पै आया।
मारा रावण को राज विभीषण पाई॥ २॥
कौरव कपटी जो लाखा भवन बनाया।
पाँडव थे जिसमें उसमें आग लगाया।
खेंचन द्रौपदिका चीर दुशासन आया।
वह खेंच खेंच थक गया दुष्ट घबराया।
भारत में उसका नाश किया यदुराई॥ ३॥
राणा मीराँ को विष का प्याला पाया।
अमृत प्रभु ने कर दिया भक्त मन भाया।
यों भगतों को भगवान तोल कर ताया।
जब करे भक्त जन याद तुरत उठ आया।
कहे गिरधर प्रभुजी ऐसे हैं सुखदाई॥ ४॥

(२१९)

रघुराज कहें यदुराज कहें तुम रूप अनूप दिखाते हो।
कब धनुषबान धर आते हो, कब वंशी मधुर बजाते हो॥टेर॥
कब तीर चलाते हाथों से, कब नैन के तीर चलाते हो।
कब छाछ माँगते ग्वालिन से, कब शबरी के फल खाते हो॥ १॥
कब राक्षस भील बानरों को तुम अपना सखा बनाते हो।
कब गोप बालकों के सँगमें, तुम बन बन धेनु चराते हो॥ २॥

है वास तुम्हारा घट घट में, सब जग को नाच नचाते हो।
फिर भी जसुदा के हाथों से, तुम ऊँखल से बँध जाते हो॥ ३ ॥
कब मरियादा पुरुषोत्तम की, तुम लीला सरस रचाते हो।
कब सारथि बनकर अरजुन के तुम गीता ग्यान सुनाते हो॥ ४ ॥

(२२०)

प्यारे श्यामसुन्दर, मनमोहन गिरधारी।
कैसी अदभुत वाणी तेरी, गीता प्यारी प्यारी॥टेर॥
स्वारथ में हम हो रहे अंधे, पड़ रहे लोभ मोहके फंदे,
करमयोग दरशाया, सर्व भूत हितकारी॥ १ ॥
हो रहे हम तो देह अभिमानी, झूठे ही हम बन रहे ग्यानी,
अपना बोध कराया, मिट गइ बाधा सारी॥ २ ॥
कलियुग के हम जीव दुखारे, भटक रहे थे मारे मारे,
पाई बड़ी विलच्छन, शरणागती तुम्हारी॥ ३ ॥

(२२१)

यह जग सराय है मुसाफिर है खाना,
तूँ इसमें लुभाने की कोशीष न करना।
तूँ अपना सफर बिस्तरे में बिता ले,
पर कबजा जमाने की कोशीष न करना॥ टेर॥
तेरे से भी पहले अनेकों मुसाफिर,
वे आये कमाये अरु खाये सिधाये।
न वे भी रहे ना गये साथ लेकर,
कि तुम भी ले जाने की कोशीष न करना॥ १ ॥
ये दुनियाँ है दौलत अमानत प्रभुकी,
नहीं है किसीकी न होगी किसीकी।
न पहले किसीकी न अब भी किसीकी,
तूँ अपनी बनाने की कोशीष न करना॥ २ ॥

गर राजा हो रानी बड़ा सेठ दानी,
पैगम्बर हो मुल्ला हो पंडित हो ग्यानी।
जो आया यहाँ उसको जाना पड़ेगा,
तूँ ममता बढ़ाने की कोशीष न करना॥ ३॥
चौरासी के चक्कर में गोते लगाकर,
ये मुस्किल से नर तन का चोला मिला है।
बड़े भाग्य से आज मौका मिला है,
तूँ मौका गमाने की कोशीष न करना॥ ४॥
ये आकाश धरती अगन जल हवा है,
तेरे ही लिये जिसने पैदा किया है।
बाबाजी कहे जिसने सब कुछ दिया है,
तूँ उसको भुलाने की कोशीष न करना॥ ५॥

(२२२)

मुखड़ा क्या देखे दरपन में तेरे दया धरम नहिं मन में॥ टेर॥
कागज की इक नाव बनाई, छोड़ी समँदर जल में।
धरमी धरमी पार उतर गये, पापी डूबे पल में॥ १॥
पेच मार कर पगड़ी बाँधे, तेल डार जुलफन में।
इसी बदन पर दूब उगेगी, गऊ चरेगी बन में॥ २॥
कंगन कड़ा कान की बाली, ले उतार पल छिन में।
काची काया काम न आवे, नंग धरे आँगन में॥ ३॥
घर वाले तो घर में राजी, फक्कड़ राजी वन में।
आम की डार कोयलिया बोले, सूआ बोले बन में॥ ४॥
कौड़ी कौड़ी माया जोड़ी, गाड़ी खोद भवन में।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, रह गई मन की मन में॥ ५॥

(२२३)

दुखों से अगर चोट खाई न होती।
तुम्हारी प्रभो याद आई न होती॥
यदि संग संतन का मिलता न मुजको।
कभी हमसे कोई भलाई न होती॥
कभी जिंदगी में ये आँखे न खुलती।
कुकर्मो की मेरी सफाई न होती॥
कहींपर मुझे चैन मिलती न जगमें।
अगर तेरी सूरत दिखाई न होती॥

(२२४)

ये संसार का चक्र चलता रहेगा।
जमाना भी करवट बदलता रहेगा॥
जो पैदा हुआ है मरेगा वो निश्चित।
ये आवागमन यों ही चलता रहेगा॥
वो बचपन गया दूर आई जवानी।
बुढ़ापा भी पल पल बदलता रहेगा॥
ये दुनियाँ के मेले कभी कम न होंगे।
तूँ कब तक जगत में कुचलता रहेगा॥
उसी को मिलेंगे नारायण के दर्शन।
जो भगती के रस में पिघलता रहेगा॥

(२२५)

अजब रचा यह खेल खिलौना माटी का।
भगवान रचा यह खेल खिलौना माटी का॥टेर॥
संस्कार जीवों का जैसा, फोटो बना दिया है वैसा।
मानुष जनम दुहेल॥ १ ॥

पाँच तत्व का बना खिलौना, शादी करके किया है गौना।
नाक में पड़ी नकेल॥ २॥
दोय चार जब हो गये लड़के, घर की तिरिया कहे अकड़ के।
घर है या कोइ जेल॥ ३॥
पति पतनी में हुई लड़ाई, घर वाली रोटी नहिं खाई।
पापड़ रहि है बेल॥ ४॥
राम नाम मुख से नहिं लीना, नारायन का भजन न कीना।
रहा मुसीबत झेल॥ ५॥
कंचन सी यह काया तेरी, इक दिन हो माटी की ढ़ेरी।
कर ले प्रभु से मेल॥ ६॥

(२२६)

अनमोल तेरा जीवन, यूँ हीं गंवा रहा है।
किस ओर तेरी मंजिल, किस ओर जा रहा है॥टेर॥
सपनों की नींद में ही ये रात ढल ना जाये।
पल भर का क्या भरौसा, क्या जाने कल ना आये।
गिनती की है ये श्वासें, यूँ हीं लुटा रहा है॥ १॥
जायेगा जब यहाँ से, कोई न साथ होगा।
जो कुछ यहाँ किया है, इन्साफ वहाँ पै होगा।
कर्मों की है ये खेती, फल उसका पा रहा है॥ २॥
ममता के बंधनो ने, ले आज तुझको घेरा।
सुख के सभी हैं साथी, दुखमें कोई न तेरा।
तेरा ही मोह तुझको, कबसे रुला रहा है॥ ३॥
जब तक है भेद मनमें, भगवान से जुदा है।
देखे जो दिल का दर्पण, इस दिलमें ही खुदा है।
सुख रूप हो के खुद ही, दुख आज पा रहा है॥ ४॥

(२२७)

भैया मैं मेरीके कारण नैया आय फसी मझधार॥टेर॥
अठ नव मास गरभमें तुमने, वादे किये हजार।
भूल गया उस परमेश्वरको, जो हैं सर्वाधार॥ १॥
बचपन और जवानीमें तूँ, लूँटी मौज अपार।
भाई बन्धू कुटुम्ब कबीला, किया जगतसे प्यार॥ २॥
मेरा कहकर मानत जिन्हको, मतलबके सब यार।
कोई किसीके काम न आवे, देखा नजर पसार॥ ३॥
नारायण सतगुरु है जीवन, नौकाके पतवार।
प्रभुकी कृपादृष्टिसे पलमें, होवे बेड़ा पार॥ ४॥

(२२८)

कर गुजरान गरीबीमें मगरूरी किसपर करता है॥टेर॥
मुल्ला होकर बाँग मचावे, क्या तेरा साहेब बहरा है।
कीड़ीके पग नूपुर बाजे, सो भी साहेब सुनता है॥ १॥
आसन मारे तिलक लगावे, लम्बी माला जपता है।
अंतर तेरे कपट कतरनी, सो भी साहेब लखता है॥ २॥
ऊँचा ऊँचा महल बनाया, गहरी नींव जमाता है।
चलनेका मनसूबा नाही, रहनेको जी चाहता है॥ ३॥
कौड़ी कौड़ी माया जोड़ी, गाड़ जमीमें धरता है।
अंतकाल विच काम न आवे, पापी पच पच मरता है॥ ४॥
हीरा पाय परख नहिं जाने, परखत कौड़ी पैसा है।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, हरि जैसे को तैसा है॥ ५॥

(२२९)

विनती सुन लो हे भगवान्, प्रार्थना सुन लो हे भगवान्,
हम तो बालक हैं नादान॥ टेर॥
भाषाका कछु ग्यान नहीं है, जप सेवा अरु ध्यान नहीं है,
ना तुम्हरी पहिचान॥ १॥

निर्बल हैं कछु शक्ति नहीं है, भाव नहीं है भक्ति नहीं है,
ना हममें कछु ग्यान॥ २॥
शुद्ध नहीं है बुद्धि हमारी, कैसे पावें भक्ति तुम्हारी,
छाया हिय अग्यान॥ ३॥
कौन भाँति हम तुम्हें रिझावें, किस प्रकार हम दर्शन पावें,
करो आप कल्याण॥ ४॥
ग्यान भक्ति की ज्योति जगा दो, अहंकारको दूर भगा दो,
आप भानुके भान॥ ५॥
तुमहीं माता पिता हमारे, सुहृद बंधु गुरु सखा हमारे,
हम तुम्हरी संतान॥ ६॥

(२३०)

बचाओ प्रभु अब तो जल्दी बचाओ।
ये संसारके सुख की आशा छुटाओ॥ टेर॥
ये घाटी कठिन है करूँ पार कैसे।
बताओ मैं आऊँ तेरे द्वार कैसे।
मुझे अपनी भगतीका मारग दिखाओ॥ १॥
क्यों देरी करो ये समझमें न आता।
कुकर्मोंका मेरा उठा दो ये खाता।
वे अपराध मेरे सभी भूल जाओ॥ २॥
पड़ा हूँ शरण नाथ तुमहीं सँभारो।
करो मेहरबानी कृपादृष्टि डारो।
जैसे चाहो वैसे ही मुजको नचाओ॥ ३॥
मेरे और कोई ना दूजा सहारा।
बिना आपके है ना कोई हमारा।
बचाओ बचाओ बचाओ बचाओ॥ ४॥

(२३१)

मेरी बन जायेगी राम गुन गाये से॥ टेर ॥

ध्रुव की बनि प्रहलादकी बन गई,
द्रौपदी की बन गई चीरके बढ़ाये से॥ १ ॥

व्यास की बनि शुकदेवकी बन गई,
नारद की बन गई वीणाके बजाये से॥ २ ॥

व्याध की बनी निषाद की बन गई,
बालमिककी बन गई मरा मरा गायेसे॥ ३ ॥

शबरी की बन गई अहिल्या की बन गई,
विभीषण की बन गई शरणमें आये से॥ ४ ॥

गज की बन गई गीधकी बन गई,
केवट की बन गई नावमें बिठाये से॥ ५ ॥

भीषम की बनि हनुमान की बन गई,
अर्जुन की बन गई गीता ग्यान पाये से॥ ६ ॥

विदुर की बन गई सुदामाकी बन गई,
मोरध्वज की बन गई आराके चलाये से॥ ७ ॥

गनिका की बन गई पूतना की बन गई,
करमा की बन गई, खीचड़ा खवाये से॥ ८ ॥

अजामील की बन गई रैदास की बन गई,
सदना की बन गई हरि मन भाये से॥ ९ ॥

धन्ना की बन गई सेना की बन गई,
नामदेव की बन गई छानके छवाये से॥ १० ॥

रंका की बन गई बंका की बन गई,
नरसी की बन गई भातके भराये से॥ ११ ॥

तुलसी सूर कबीर की बन गई
मीराँबाई की बन गई गोविन्द रिझाये से॥ १२ ॥

दास अज्ञात राम गुन गावे,
सबकी बनेगी प्रभु शरणमें आये से॥ १३ ॥

(२३२)

आँख खोल देखो बंदा प्रभुका कमाल है॥टेर॥
सारे विश्वमें है वास, रोम रोममें निवास।
सूर्य चन्द्रमें प्रकाश, बड़ा ही विशाल है॥ १ ॥
कैसा है वो जादूगर, सबमें सभीसे पर।
जगसे असंग है वो, बड़ा ही दयालु है॥ २ ॥
फूलोंमें है मंद मंद, भरी है कैसी सुगंध।
करे सबका प्रबंध, बड़ा महीपाल है॥ ३ ॥
सुख इंद्रियोंका छोड़ो, नाता दुनियाँसे तोड़ो।
नारायणसे प्रीती जोड़ो, रहो खुशहाल है॥ ४ ॥

(२३३)

प्रभु तुम साँचे मनके मीता॥टेर॥
कब शबरी काशी कर आई, कब पढ़ आई गीता।
जूठे बेर बिसंभर चाखे, कीन्ही प्रेम पुनीता॥ १ ॥
यज्ञ दान गणिका कब कीन्ही, कब तीरथ जल पीता।
बाँह पकड़ हरि पार उतारी, मनहीके परतीता॥ २ ॥
कब करमा बाइ भोर सुमरिया, जप तप संजम कीता।
नंदलाल गोपाल प्रभूको खिचड़ी भोग धरीता॥ ३ ॥
साँच समान और जग नाहीं, जुग जुग संत भणीता।
कहत कबीर सांच घट जाके, सकल जगत तिन्ह जीता॥ ४ ॥

(२३४)

तेरी महरबानी का भार प्रभु इतना।
मैं तो उठाने के काबिल नहीं हूँ॥
मेरी हरकतें सब तुम्हीं जानते हो।
कहीं मुँह दिखाने के काबिल नहीं हूँ॥टेर॥

बिषयों की गंदगी में ऐसा लुभाया।
तेरा नाम मेरी जुबां पै न आया॥
गुनाहगार होकर हाजिर खड़ा हूँ।
कुछ भी तो कहने के काबिल नहीं हूँ॥ १ ॥
कृपा करके दी तुमने मुझे जिन्दगानी।
मगर तेरी महिमा कुछ भी न जानी॥
करजदार तेरा जनमजात हूँ मैं।
करजा चुकाने के काबिल नहीं हूँ॥ २ ॥
सबसे बड़े तुम हो दाता जगत के।
देते ही देते अघाते नहीं हो॥
मेरा जगत में कुछ भी नहीं है।
कुछ भी मैं देने के काबिल नहीं हूँ॥ ३ ॥
यह जान तेरी शरणमें आया।
पल भर भी मुझको कभी ना भुलाना।
सिवा आँसुओं के हे मेरे प्यारे।
कुछ भी चढ़ाने के काबिल नहीं हूँ॥ ४ ॥

॥ श्रीहरिः ॥

चेतावनीपद-संग्रह

भाग—२

(राजस्थानी बोलीमें)

श्रीगनपति-वंदना-प्रार्थना

(१)

गननायक गौरी-पुत्र गजानन देवा।
मैं विनय करूँ कर जोड़ अरज सुनि लेवा॥टेर॥
थाँरी जगदम्बा जग-जननी पार्वती माता।
थाँरा सब देवन का स्वामि षडानन भ्राता॥
थाँरा पिता है भोलेनाथ देवन के देवा॥१॥
थाँरी ओछी पिन्डल्याँ दुन्द बड़ी अति सोहे।
थाँरो गज-मुख सुन्दर देखि देखि मन मोहे॥
थाँरे लागे मोदक भोग चढ़े अरु मेवा॥२॥
थे राम-नाम की अद्भुत महिमा जानी।
थे ऋद्धि सिद्धि का दाता हो बड़ दानी॥
अब पार लगावो भव-सागर से खेवा॥३॥
कोई थाँ बिन मंगल काज न जगमें होवे।
जो प्रथम मनावे सिद्ध काज सब होवे॥
हरि-चरणन में निष्काम भक्ति मोहि देवा॥४॥

प्रार्थना

(२)

गिरिजा सुत प्यारा, मूसापर चढ़कर बेगा आई ज्यो।
गनदेवा थाँरी, रिध सिध नार्‍याँ ने साथे ल्याई ज्यो॥ टेर॥
रणत भँवर के राजा, सारो काजा, गनपति श्री महाराजा।
आकर के मोदक भोग लगाई ज्यो॥ १॥
भाल त्रिपुंड विशाला, मोतियन माला, अँगपर पीत दुशाला,
जरकस जरियन का साज सजाई ज्यो॥ २॥
कर में परसा धारो, बिघन बिडारो, कुमति निवारो प्रभुजी।
किरपा कर भगती रस बरषाई ज्यो॥ ३॥
करो आपकी मरजी, कीन्ही अरजी, गावे नाथू दरजी।
छोटी सी अरजी पेश चढ़ाई ज्यो॥ ४॥

श्रीहनुमत्-वन्दना

(३)

बालाजीरी क्याँसूँ करूँ खातरी,
रामजी रा प्यारा थाँरे कमी काँई बातरी।
अँजनी रा लाला थाँरे कमी काँई बातरी॥टेर॥
जहँ जहँ सीताराम विराजे सँगमें दरशण थाँरा हो, सँगमें०॥
गाँव शहर जंगल बस्ती में अगणित मन्दिर न्यारा हो, अग०॥
करो निरन्तर रघुवरजी री चाकरी॥ रामजी०॥ १॥
जितरा जगमें राम-भक्त है महिमा अधिक तुम्हारी हो, महिमा०॥
जैनी और सनातन धरमी, ध्यावे सब नर नारी हो, ध्यावे०॥
दूर-दूर से आवे थाँरे जातरी॥ रामजी०॥ २॥
दाल चूरमा लाडू पेड़ा श्रीफल भोग लगावे हो, श्रीफल०॥
सवामणी जो करे प्रेमसे ब्राह्मण नूत जिमावे हो, ब्राह्मण०॥
राम-भजन में जागे सारी रातरी॥ रामजी०॥ ३॥

'दास' करे बिनती कर जोड़े, अब तो मत तरसावो हो, अब० ॥
सीताराम जुगल चरणन में नित नव प्रेम बढ़ावो हो, नित० ॥
धरद्यो सिर पर पाँचों अँगुली हातरी ॥ रामजी० ॥ ४ ॥

अंजनी माताको पुत्रस्नेह

(४)

बालाजी ने लाड लडावे माता अँजनी ॥टेर॥
स्नान कराय वस्त्र पहिरावे,
केशर तिलक लगावे माता० ॥ १ ॥
आओ हनुमन्ता खेलो परबत पर,
रामजी को नाम पढ़ावे माता० ॥ २ ॥
सवा मन रोटा घिरत गाय को,
चूर के चूरमो जिमावे माता० ॥ ३ ॥
हात झुंझुनियाँ पाँव पैंजनियाँ,
मन्दिर में नाच नचावे माता० ॥ ४ ॥
महादेव प्रभु संकट मोचन
रामजी का भगत बनावे माता० ॥ ५ ॥

कोटि-कोटि प्रणाम

(५)

पाये लागूँ महाराज विरद बंका।
विरद बंका हो गढ़ तोड़ी लंका ॥टेर॥
कुण थाँरी माता, कूण पिता है,
कुण थाँरो नाम धर्‌यो है हनुमन्ता ॥ १ ॥
अँजनी म्हारी माता पवन पिता है,
ब्रह्मा म्हारो नाम धर्‌यो है हनुमन्ता ॥ २ ॥
कुन्याँ जी रे सत सूँ सागर उतर्‌या,
कुन्याँ जी रे बल तोड़ी गढ़ लंका ॥ ३ ॥

सियाजी रे सत सूँ सागर उतर्‌या,
रामजी रे बल तोड़ी गढ़ लंका॥ ४॥
रावण मार अहिरावण मार्‌यो,
कुम्भकरण पर बाजे डंका॥ ५॥
'तुलसीदास' आस रघुवर की,
असुर मारकर मेटी संका॥ ६॥

नित्य सम्बन्ध

(६)

काईं गुणगान करूँ हरि थाँरो, थाँबिन जगमें कोई नहिं म्हारो॥टेर॥
थे प्रभु गंगा में थाँरी मीना, थाँ बिछड़्याँ म्हारा होय नहीं जीना॥ १॥
थे प्रभु समँदर मैं थाँरी लहरी, थाँरी म्हारी प्रीतड़ली गहरी॥ २॥
थे प्रभु बादल मैं हूँ पपैयो, अपनो समझ मोहि भूल न जैयो॥ ३॥
थे प्रभु गैया मैं थाँरो बाछो, दौड़ उछल कर आऊँ मैं पाछो॥ ४॥
थे म्हारी जननी मैं थाँरो जायो, राखो सदा हिवड़े लिपटायो॥ ५॥

मैं आपको हूँ

(७)

मैं थाँरो थाँरो थाँरो, प्रभु थे मत मोहि बिसारो॥टेर॥
मैं भूखो हूँ तो थाँरो, मैं प्यासो हूँ तो थाँरो।
मैं निकमू हूँ तो थाँरो, कछु काज करूँ तो थाँरो॥ १॥
मैं खड़्यो रहूँ तो थाँरो, मैं पड़्यो रहूँ तो थाँरो।
मैं फिकर करूँ तो थाँरो, अलमस्त रहूँ तो थाँरो॥ २॥
मैं रोगी हूँ तो थाँरो, रसभोगी हूँ तो थाँरो।
मैं चुप रहवूँ तो थाँरो, बढ़कर बोलूँ तो थाँरो॥ ३॥
स्विकार करो तो थाँरो, इनकार करो तो थाँरो।
ठौकर मारो तो थाँरो, अति प्यार करो तो थाँरो॥ ४॥

आप म्हारा हो

(८)

मैं थाँरो मैं थाँरो मैं थाँरो हूँ राम।
थे म्हारा थे म्हारा थे म्हारा हो राम॥ टेर॥
थे म्हारा मालिक हो, थे म्हारा दाता।
थे हो पिता म्हारा, थे म्हारी माता॥
थे म्हानें लागो हो प्यारा हो राम॥ थे॥ १॥
थे हो सखा म्हारा थे म्हारा नाती।
थे म्हारा संगी हो थे म्हारा साथी॥
थाँरा ही मोटा सहारा हो राम॥ थे॥ २॥
तन भी है थाँरो यो मन भी है थाँरो।
जो कुछ जगतमें है सबही है थाँरो॥
थे म्हाँसूँ कबहूँ न न्यारा हो राम॥ थे॥ ३॥

पूर्ण शरणागति

(९)

म्हारा नटराजा, थाँरे नचायो नाचूँ॥टेर॥
थाँरे घरमें रहूँ निरन्तर थाँरी हाट चलाऊँ।
थाँरे धनसे थाँरा जनकी, सेवा टहल बजाऊँ॥ म्हा०॥ १॥
ज्याँ रँगरा कपड़ा पहिरावे, वैसो स्वाँग बणाऊँ।
जैसा बोल बुलाबे मुखसूँ, वैसी बात सुणाऊँ॥ म्हा०॥ २॥
रूखा सूका जो कुछ देवे, थाँरे भोग लगाऊँ।
खीर परुस या छाछ राबड़ी, सबड़ प्रेमसे पाऊँ॥ म्हा०॥ ३॥
घरका प्राणी कयो न माने, मन मन खुशी मनाऊँ।
थाँरे इण मंगल विधानमें, मैं क्यूँ टाँग अड़ाऊँ॥ म्हा०॥ ४॥
जो तूँ ठौकर मार गिरावे, लकड़ी ज्यूँ गिरज्याऊँ।
जो तूँ माथे उपर बिठावे, तो भी न शरमाऊँ॥ म्हा०॥ ५॥

कौस हजार पकड़ ले जावे, दौड़्यो दौड़्यो जाऊँ।
जो तूँ आसण मार बिठावे, गोडो नाँय हिलाऊँ॥ म्हा० ॥ ६ ॥
जो तूँ तनके रोग लगावे, ओढ़ सिरख सो जाऊँ।
जो तूँ कालरूप बण आवे, लपक गोदमें आऊँ॥ म्हा० ॥ ७ ॥
उलटो सुलटो जो कुछ कर ले, मंगलरूप लखाऊँ।
थाँरी मनचाहीमें प्यारा, अपनी चाह मिलाऊँ॥ म्हा० ॥ ८ ॥

एक आसरो

(१०)

म्हारो थाँपर दारमदार, म्हारो थाँपर दारमदार।
मैं तो थाँरो खेल खिलौनूँ, थे हो खेलनहार॥टेर॥
मैं तो थाँरी रामफिरकली, थे हो फेरनहार।
उलटी फेरो सुलटी फेरो, करूँ नहीं इनकार॥ १ ॥
मैं तो थाँरो झुणझुणियों हूँ, आप बजावण हार।
हरदम पकड़ हातमें राखो, छोड़ो मत सरकार॥ २ ॥
मैं तो थाँरी कठपुतली हूँ, आप नचावण हार।
थिरक थिरक कर खूब नचावो, डोरी हात तिहार॥ ३ ॥
मैं तो थाँरी गेंद हातरी, थे ही चतुर खिलार।
युगल चरण की ठौकर मारो, कर दो भवसे पार॥ ४ ॥
सब पुरुषाँ में थे पुरुषोत्तम, मैं हूँ मुरख गँवार।
अपणू समझ निभायाँ सरसी, दीज्यो मती बिसार॥ ५ ॥

प्रभुजी री पूजा

(११)

तर्ज—म्हारा चारभुजारा नाथ

म्हारे ठाकुरजीरी पूजा हरदम करता रहस्याँ जी।
म्हारे साँवरियारी पूजा हरदम करता रहस्याँ जी॥टेर॥

सुख दुख भेजो तो नाथ, राजी होता रहस्याँ जी।
तनसे सेवा मनसे सुमिरन मुखसे नाम लेस्याँ जी॥ १॥
म्हाँने मिलिया जिण करमाँसूँ, थाँरी अरचा करस्याँ जी।
थाँरे भगतांमें बैठ थाँरी, चरचा करस्याँ जी॥ २॥
थाँरे सन्तांरी संगत म्हेतो, करता रहस्याँ जी।
थाँरी गीता रामायण चितमें, धरता रहस्याँ जी॥ ३॥
थाँरा दर्शणरी बाटड़ली म्हे जोता रहस्याँ जी।
थाँरे चरणांने आँसूड़ासूँ धोता रहस्याँ जी॥ ४॥

बड़ी अचरजकी बात

(१२)

अचरज आवे जी, बड़ो अचम्भो आवे जी।
म्हारे प्रभु की किरपा देख म्हाँने अचरज आवे जी॥ टेर॥
भूल्या भटक्या फिरे जीव दारुन दुख पावे जी।
तब बिनु कारन किरपा कर वाँने मिनख बनावे जी॥ १॥
पापी घोर कुकरमी भी जब शरनें आवे जी।
हर लेवे वाँरा पाप ताप सब सन्त बनावे जी॥ २॥
और आसरो छोड़ लच्छमी पति ने ध्यावे जी।
सब ढोवे उनको भार साँवरो, ना शरमावे जी॥ ३॥
अन्त समय भी नाम लेत बन्धन कट जावे जी।
है कुन ऐसा दातार जगत में कोई बतावे जी॥ ४॥

बड़ी शरमकी बात

(१३)

लाज मराँछाँ जी, प्रभु म्हे शरम मराँछाँ जी।
थाँरी किरपा म्हारा करतब देख्याँ लाज मराँछाँ जी॥ टेर॥
खोटा खोटा करम कमाकर गरब कराँछाँ जी।
थे भेज्या ऊँचा चढ़बाने नीचा उतराँछाँ जी॥ १॥

सत पुरुषाँ रो संग छोड़ उलटा बिचराँछाँ जी।
खोटा करमाँ रो कूड़ो भीतर मायँ भराँछाँ जी॥ २॥
बिगड़्या सो तो बिगड़ गया, थाँरा बिगड़्या छाँ जी।
अब कृपा करो हे नाथ, आपकी शरण पड़्या छाँ जी॥ ३॥

प्रभु-कृपाकी वर्षा

(१४)

म्हारे प्रभुकी बड़ी अपार, किरपा बरष रही जी बरष रही।
समझे तो बेड़ा पार, किरपा बरष रही जी बरष रही॥टेर॥
पहली किरपा मिनख बणाया, संताँ निकट लाय बैठाया।
हरिका मारग सुगम बताया, खोल दिया भंडार॥ १॥
पापी अरु मूरख नर नारी, हरि भगतीका सब अधिकारी।
कोइ नहिं यामें हलका भारी, दाता बड़ा उदार॥ २॥
सुख दुख घाटो नफो बिमारी, है साधन सामगरी सारी।
हरि मिलनेंरी हो रहि त्यारी, मूँडो मती बिगाड़॥ ३॥
म्हे म्हारा संकल्प मिटावाँ, क्यूँ म्हे झूठी अकल लगावाँ।
हरि सुमिराँ हरिका गुण गावाँ, राख धणीं पर भार॥ ४॥

प्रभुसे प्रार्थना

(१५)

नाथ थाँरे शरण पड़ी दासी।
मोय भवसागर से त्यार काटद्यो जनम मरण फाँसी॥
नाथ मैं भोत कष्ट पाई।
भटक भटक चौरासी जूणी मिनख देह पाई। मिटाद्यो दुखाँ की रासी॥
नाथ मैं पाप भोत कीन्हा।
संसारी भोगाँ की आसा दु:ख भोत दीन्हा। कामना है सत्यानासी॥
नाथ मैं भगती नहिं कीन्ही।
झूठा भोगाँ की तृसनामें ऊमर खो दीन्ही। दु:ख अब मेटो अविनासी॥

नाथ अब सब आसा टूटी।
थाँरे श्री चरणाँ री भगति एक है संजीवनि बूँटी। रहूँ नित दरसण की प्यासी॥

शरणागति

(१६)

नाथ थाँरे शरणे आयो जी!
जचे जिसतराँ खेल खिलाओ, थे मनचायो जी॥
बोझो सभी ऊतर्‌यो मन को, दुख बिनसायो जी।
चिन्ता मिटी बड़े चरणाँ को, सहारो पायो जी॥
सोच फिकर अब सारो थाँरे ऊपर आयो जी।
मैं तो अब निश्चिन्त हुयो अंतर हरषायो जी॥
जस अपजस सब थाँरो मैं तो दास कुहायो जी।
मन भँवरो थाँरे चरन कमल में जा लिपटायो जी॥

पूर्ण समर्पण

(१७)

नाथ मैं थाँरो जी थाँरो।
चोखो बुरो कुटिल अरु कामी जो कुछ हूँ सो थाँरो॥ टेर॥
बिगड़्यो हूँ तो थाँरो बिगड़्यो, थे ही मने सुधारो।
सुधर्‌यो तो प्रभु सुधर्‌यो थाँरो, थाँ सूँ कदे न न्यारो॥ १॥
बुरो बुरो मैं भोत बुरो हूँ, आखिर टाबर थाँरो।
बुरो कहाकर मैं रह जास्यूँ नाम बिगड़सी थाँरो॥ २॥
थाँरो हूँ थाँरो ही बाजूँ, रहस्यूँ थाँरो थाँरो।
आँगलियाँ नुँह परे न होवे, या तो आप बिचारो॥ ३॥
मेरी बात जाय तो जावो, सोच नहीं कछु म्हारो।
म्हारे सोच बड़ो यो लाग्यो, बिरद लाजसी थाँरो॥ ४॥
जचे जिसतराँ करो नाथ अब, मारो चाहे त्यारो।
जाँघ उघाड़्याँ लाज मरोला, ऊँडी बात विचारो॥ ५॥

प्रभुको आश्वासन

(१८)

तूँ भाई म्हारो रे म्हारो!

तूँ म्हारो तेरो सब म्हारो, जग सारो ही म्हारो॥टेर॥
मनमें सदा दूसरो समझे, ऊपर से कहे थाँरो।
म्हारो होताँ साताँ भी वो, रहे म्हारे से न्यारो॥ १ ॥
एक बार जो कपट छोड़कर, कहे नाथ मैं थाँरो।
सो म्हारे सगला पुतराँ में, अधिक लाडलो प्यारो॥ २ ॥
सदा पातकी सदा कुकरमी, बिषयाँ में मतवारो।
मैं थाँरो यूँ साँचे मनसे, कहताँ ही हो म्हारो॥ ३ ॥
झटपट पुन्यवान सो होवे, पापाँ से छुटकारो।
म्हारो म्हारी गोद विराजे, कदे न म्हाँसूँ न्यारो॥ ४ ॥
तन मन बाणी से जो म्हारो, सो निश्चय ही म्हारो।
कदे न लाज्यो, कदे न लाजे नाम बिड़द जस म्हारो॥ ५ ॥

प्रियता

(१९)

म्हाँने तो म्हारा रामजी सुहावे, दूजो म्हारे दाय कोनी आवे हे माय।
दाय कोनी आवे म्हारे मन नहिं भावे,
म्हारो देखत जियो घबरावे हे माय॥टेर॥
मीराँ मगन होय गुन गावे, हरिजी में सुरता समावे हे माय।
राणोजी बिष का प्याला भेज्या, बिषड़े ने अमृत बनावे हे माय॥ १ ॥
नामदेव की छाँन छवाई, कबिरे के बालद लावे हे माय।
सेन भगत रा साँसा मेट्या, धन्ने को खेत निपजावे हे माय॥ २ ॥
भिलनी रा बेर सुदामा रा तन्दुल, करमाँ रो खीचड़ खावे हे माय।
दुरियोधन रा मेवा त्याग्या, साग विदुर घर पावे हे माय॥ ३ ॥
जहँ जहँ भीड़ पड़े भगतन में, तहँ तहँ दौड़्या आवे हे माय।
जल डूबत गजराज उबार्‌यो, जल माहीं चक्र चलावे हे माय॥ ४ ॥
काईं कहूँ म्हारे प्रभुजी री महिमा, बेद पार नहिं पावे हे माय।
नरसीले रो सेठ साँवलियो, भगताँ रो मान बढ़ावे हे माय॥ ५ ॥

इमरत-बूँटी

(२०)

पीवो गीता इमरत बूँटी यह संजीवनी जी॥टेर॥
पढ़ पढ़ नया नया उपन्यास,
कर लियो जीवन सत्यानाश,
फिर भी होज्यो मती निराश,
लज्या राखण वाला गिरधारी मोटा घणीं जी॥ १ ॥
गीता पाठ करो नित नेमा,
छोड़ो टी० वी० खेल सिनेमा,
पावो भगती प्रभु की प्रेमा,
ऐसी मिले न बारम्बार मौज मिनखा तणीं जी॥ २ ॥
जागो रैण पड़्याँ जब सोवो
गीता दरपण में मुख जोवो
पातक जनम जनम रा खोवो
बरसे ठाकुरजी री संताँरी किरपा घणीं जी॥ ३ ॥
पढ़कर देखो निजर पसार
भरिया भाव अनन्त अपार
प्रभु की शरणागति है सार
सारी भव बाधा मेटण की यह चिन्तामणीं जी॥ ४ ॥

प्रार्थना

(२१)

गोविन्द म्हाँने गीता ग्यान सुनाओ म्हारा श्याम।
परमेश्वर म्हारी नैया पार लगाओ म्हारा श्याम॥
बसुदेवजी रा हो लाडला॥ टेर॥
दीन्ही प्रभु के हात में, बागडोर पकड़ाय।
रथ हाँकन लाग्या हरी, अरजुन यूँ बतलाय॥
नारायण रथ ने सेना बिच ठहराओ म्हारा श्याम॥ १ ॥

रनभूमी के बीच में, उपज्यो कुटुम्ब सनेह।
सस्त्र हात से छुट रया थर थर काँपे देह॥
केशव जी म्हाँसू क्यूँ थे जुद्ध कराओ म्हारा श्याम॥ २॥
बाणाँ री बोछाड़ सूँ खप जासी सब वीर।
कुटुम्ब आपणों है सभी, किस बिध छोड़ूँ तीर॥
पुरुषोत्तम म्हारी ममता मोह छुटाओ म्हारा श्याम॥ ३॥
रथ के पीछे बैठग्या, तज्या धनुष अरु बाण।
शरनागत अरजुन हुया, करो प्रभो कल्याण॥
नारायण म्हारे दिल की जलन मिटाओ म्हारा श्याम॥ ४॥
मैं शरनागत शिष्य हूँ थे गुरुदेव हमार।
करनूँ कछु जानू नहीं, धरम अधरम विचार॥
माधव जी म्हाँने हित की बात बताओ म्हारा श्याम॥ ५॥
जगत गुरु श्री कृष्ण जी, सबका जीवन प्रान।
मँगसर सुद एकादसी, प्रगट्या गीता ग्यान॥
मनमोहन म्हाँने वो ही इमरत प्यावो म्हारा श्याम॥ ६॥

उपदेश

(२२)

सुन अरजुन प्यारा क्यूँ इतना घबराओ म्हारा तात।
कुन्ती सुत प्यारा कायरता मत लाओ म्हारा तात॥
कुन्ती भुआजी का हो लाडला॥टेर॥
जिन्ह की तूँ चिन्ता करे, मरे न कोई वीर।
अजर अमर है आतमा, मरसी सकल शरीर॥
सुन पारथ प्यारा सबसे मोह हटाओ म्हारा तात॥ १॥
शोक करन लायक नहीं, तूँ छत्रिय रनधीर।
धरम जुद्ध है सामने, ताँण धनुष पर तीर॥
पांडव सुत प्यारा क्षत्रिय धरम निभाओ म्हारा तात॥ २॥

जीत होय या हार हो, नफो होय नुकशान।
सुख बरषे या दुख पड़े, सबमें रहो समान॥
सुन अरजुन प्यारा मोमहँ चित्त लगाओ म्हारा तात॥ ३॥
मोर आसरे रहो सदा, करम करो निसकाम।
कृपा है म्हारी सहज ही, नाशे बिघन तमाम॥
कुन्ती सुत प्यारा बेगा धनुष उठाओ म्हारा तात॥ ४॥
तज निरनय सब धर्म को, सरन एक रहु मोर।
मुक्त करूँ सब पाप से, चिन्ता मत कर ओर॥
पांडव सुत प्यारा यह इमरत पी जाओ म्हारा तात॥ ५॥

प्रभुको निज स्थान

(२३)

गीता निज घर म्हारो रे।
गीता ग्यान प्रचारक म्हारो, प्रियतम प्यारो रे॥ टेर॥
गीता म्हारे मुख की बानी, गीता म्हारो ग्यान।
गीता मन अरु बुद्धि म्हारी, गीता म्हारा प्रान।
रहूँ मैं किस बिध न्यारो रे॥ १॥
गीता म्हारो सरूप है रे, गीता म्हारा स्वास।
गीता म्हारे धन की कुँजी, राखूँ हरदम पास।
करूँ जगमें उजियारो रे॥ २॥
गीता कोरी पुस्तक नाहीं, सब धरमाँ रो सार।
गीता धारन करे उनाके, चालूँ हरदम लार।
ढ़ोय सिर ऊपर भारो रे॥ ३॥
गीता ग्यान प्रचार करण नें, मिनख भेष में आऊँ।
मुकती रो भंडार खोलकर, सबने नूत जिमाऊँ।
होय कोई जिम्मण हारो रे॥ ४॥
गीता सों सृष्टी रच सारी, पालन करूँ हमेश।
चारौं बेद पुरान शास्त्र में, गीता ग्यान विशेष।
लखे कोई जानन हारो रे॥ ५॥

गीता बिन रीता

(२४)

समझ मन गीता नहि गासी।
पढ़ पढ़ बाताँ घणीं सीख ले, रीता रह जासी॥टेर॥
कूड़ कपट कर माया जोड़े, संग न कछु जासी।
लड़ आपस में माध्या भाई, खोस खोस खासी॥ १ ॥
सुख सुविधा में गयो जमारो, काल करे हाँसी।
दुरलभ मिनखा जनम बिगाड़्यो, भुगतो चौरासी॥ २ ॥
कान खोल सुन ले रे मनवा, नहिं तो पछितासी।
संत सुजाण मार रया हेला, फेर कुण समझासी॥ ३ ॥
तूँ ईश्वर को अंश जीवड़ा, अमरापुर बासी।
थारो जनम मरन नहिं होवे, तूँ है अबिनाशी॥ ४ ॥

नीचा मत उतरो

(२५)

जीव क्यूँ हेटो उतर्‌याँ जावे रे, नेड़ो म्हारे आव।
नेड़ो म्हारे आव थोड़ो पास म्हारे आव॥टेर॥
मैं तो तन्ने भेज्यो जिवड़ा, मिनखा देही मायँ।
फेर क्यूँ चौरासी में जावे रे, नेड़ो म्हारे आव॥ १ ॥
मैं तो तन्ने भेज्यो जिवड़ा, सत पुरुषाँ रे पास।
फेर क्यूँ खोटे सँग में जावे रे, नेड़ो म्हारे आव॥ २ ॥
मैं तो तन्ने भेज्यो जिवड़ा, कर ले म्हाँसूँ प्रेम।
फेर क्यूँ भोगा में लिपटावे रे, नेड़ो म्हारे आव॥ ३ ॥
मैं तो तन्ने भेज्यो जिवड़ा, जग सेवा रे काज।
फेर क्यूँ निरबल जीव सतावे रे, नेड़ो म्हारे आव॥ ४ ॥
मैं तो तन्ने भेज्यो जिवड़ा, बणबा ने दातार।
फेर क्यूँ खोस खोस कर खावे रे, नेड़ो म्हारे आव॥ ५ ॥

मैं तो तन्ने भेज्यो जिवड़ा, कर ले अपनीं खोज।
फेर क्यूँ दुरगुण खोजन जावे रे, नेड़ो म्हारे आव॥ ६॥
मैं तो तन्ने भेज्यो जिवड़ा, निरमल होज्या जाय।
फेर क्यूँ ममता मैल लगावे रे, नेड़ो म्हारे आव॥ ७॥
मैं तो तन्ने भेज्यो जिवड़ा, ऊँचो चढ़ज्या आय।
फेर तूँ दल दल में मत जावे रे, नेड़ो म्हारे आव॥ ८॥

बुलाओ

(२६)

आओ रे भाईड़ा आपाँ हरि गुण गावाँ
कलजुग में सतजुग ल्यावाँ॥ टेर॥
भाई बंधु रूठे चाहे रूठे जग सारो,
एक नहीं रूठे प्यारो साँवरियो हमारो,
भव सागर में गोता नहीं खावाँ॥ १॥
आड़ोसी पाड़ोसी ने भी संग लेता चालो जी,
बैरी भी होवे तो वाँने गले से लगा लो जी,
हिल मिल चाल्याँ घणाँ सुख पावाँ॥ २॥
नींदड़ली फिरे है आडी करेली बिगाड़ो,
खेंचे सुख भोग तो भी पाछा ना पधारो,
पाछा फिर्याँ सूँ घणाँ पछितावाँ॥ ३॥
माता बहना भाई जठे राम धुन गावे,
रामजीरा घणाँ प्यारा संत बठे आवे,
जाकी किरपा सूँ आपाँ तिरजावाँ॥ ४॥

संत-मिलनकी उत्कंठा

(२७)

मैं निशदिन रहूँ उदासी, म्हारो वो शुभ दिन कब आसी॥टेर॥
म्हारी आँख फरूखे माई, कोई सन्त मिलेला काईं।
म्हारो रोम रोम हरषावे, म्हारो हियो उछाला खावे॥ १॥

कोई महापुरुष अब आवे, मोहि डूबत आन बचावे।
ज्याँरा बचन बाण ज्यूँ लागे, म्हारा भाग्य पुरबला जागे॥ २॥
मैं ब्राह्मण नूत जिमावूँ शिवजीरो ध्यान लगावूँ।
देहली पर दिवलो जोवूँ, हरि चरणाँ में चित पोवूँ॥ ३॥
कोई है अवधूत विरागी, आशा तृष्णाँ रा त्यागी।
कहसी सो हुकुम बजास्याँ, म्हे फेर जनम नहि पास्याँ॥ ४॥

संत-मिलन

(२८)

म्हारे आया आया आया, म्हारे संत पाहुणा आया॥टेर॥
मैं बाँटूँ आज बधाई, म्हारे घर पर गंगा आई।
म्हारी बढ़ गई बेल सवाई, म्हारी हो गई सुफल कमाई॥ १ ॥
ऊपर चढ़ मारूँ हेलो, मैं कर ल्यूँ सब जग भेलो।
कोई आवो रे भाई आवो, थे जीवन सफल बणावो॥ २ ॥
म्हारी रग रग भीतर नाचे, म्हारो आँगण जगमग राचे।
मैं इत आऊँ उत जाऊँ, जाँ री किस बिध टहल बजाऊँ॥ ३॥
ए तो रस बरषावण आया, सँग हरि-भगतांने लाया।
म्हारी कंचन कर दी काया, सूतांने आन जगाया॥ ४॥

(२९)

चाल रे, चाल रे, चाल रे, तन्ने मिनख बणायल्याउँ चाल रे॥टेर॥
बिन सतसंग न मिनख कहावे, काले माथे रो कंकाल रे॥ १॥
सतसंगतकी गोठ लगी है, उड़ रया मालामाल रे॥ २॥
निरधन आवे धनपति होवे, खुली पड़ी है टकसाल रे॥ ३॥
कलजुगमाहीं सतजुग ल्याया, धन धन संत दयाल रे॥ ४॥
छोड़ जगतका गोरखधंधा, यो अवसर मत टाल रे॥ ५॥
महापुरुषाँरा दरशण दुरलभ, पड़रयो जगमें काल रे॥ ६॥
जो संतनकी सीख न माने, जमड़ा कूटे थारी खाल रे॥ ७॥
दास अग्यात करो सतसंगत, हो जाओ सबहि निहाल रे॥ ८॥

(३०)

म्हारो दुखड़ा सूँ पिन्ड छुटावण दे, सतसंगतमें जावण दे।
म्हारो आवागवन मिटावण दे, सतसंगतमें जावण दे॥टेर॥
ना मैं माँगू माल मलीदा, मोठ बाजरी तो खावण दे॥ १॥
ना मैं देखूँ नाटक सिनेमा, प्रभुजीको ध्यान लगावण दे॥ २॥
मैं म्हारे प्रभुका गुण गाऊँ, और गीत मत गावण दे॥ ३॥
निन्दा चुगली करे करणियाँ, मन्ने तो हरिगुण गावण दे॥ ४॥
आज बणी है म्हारे राम रसोई, ठाकुरजीके भोग लगावण दे॥ ५॥
आज म्हारे तो घर संत पधार्‌या, रामजीको रँग बरसावण दे॥ ६॥
शुकसागर रामायण गीता, रस भरी कथा सुणावण दे॥ ७॥
चाहे तूँ मन्ने मार कूटले, चाहे तो रोटी मत खावण दे॥ ८॥
चालो जी पियाजी बैकुण्ठ ले ज्याऊँ, परमानन्द सुख पावण दे॥ ९॥

सत्संगमें लावो

(३१)

अकेला काईं आवो रे सतसंगत में भाई।
औराँ ने साथे ल्यावो रे सतसंगत में भाई॥
घरकाँ ने साथे ल्यावो रे सतसंगत में भाई॥टेर॥
मात पिता भायाँ ने ल्यावो, ल्यावो चाची ताई।
बेटा और बहू ने ल्यावो, बेटी संग जँवाई॥ १॥
सासू ने सुसराँ ने ल्यावो, सालाँ ने समझाई।
समधी ने समधणनें ल्यावो खातिर करो सवाई॥ २॥
जाती ने न्याती ने ल्यावो, ल्यावो घर को नाई।
बहन भाणजी भूवा ने ल्यावो, बाँटो आज बधाई॥ ३॥
बैरी ने दुशमण नें ल्यावो, दीज्यो बैर हटाई।
पास-पड़ौसी सबनें ल्यावो, सबकी करो भलाई॥ ४॥
गाँव-शहर की गली-गली में, हेलो द्यो फिर वाई।
परमेश्वर ने अपना मानो, या ही बड़ी कमाई॥ ५॥

जनताको सौभाग्य

(३२)

मौको लाग्यो रे (बीकाणाँ) (जैपुरिया) (बम्बइकाँ) (कलकत्ता)।
थाँरो भाग जाग्यो रे, मौका लाग्यो रे॥टेर॥
गली गली हरि-चरचा होवे, जाणें सत् जुग आग्यो रे।
मुकतीरो दरवाजो खुलग्यो, कलजुग भाग्यो रे॥ १ ॥
दूर दूर सूँ सन्त पधार्‌या, वाँरो मेलो लाग्यो रे।
मरू भूमि पर इमरत बरषे, आनन्द छाग्यो रे॥ २ ॥
भूल्यो भटक्यो जीव-जन्तु जो, इण अवसर में आग्यो रे।
तीरथ सारा कर लीन्हा वो, गंगा न्हाग्यो रे॥ ३ ॥
ऐसो अवसर बार बार फेर, नहीं मिले लो माँग्यो रे।
धरमराज ऊपरसूँ आकर, ढोल घुराग्यो रे॥ ४ ॥

(३३)

आज सखी धन्य भाग्य है म्हारा,
आँगण आया प्रभुजी का प्यारा॥टेर॥
हरिजी का प्यारा जगत सूँ है न्यारा,
म्हाँने तो लागे वे प्राणा सूँ प्यारा॥ १ ॥
हरिजी का प्यारा हरि सूँ मिलावे,
सुख का भोगी नरक ले जावे॥ २ ॥
समता साँच सील व्रत धारी,
दैवी संपति का अधिकारी॥ ३ ॥
हरिजी का प्यारा ने हरिजी ही जाणे,
पापी पामर नहिं पहचाणे॥ ४ ॥
बिनती करूँ प्रभु घट घट बासी,
करज्यो हरि भक्तन की दासी॥ ५ ॥

धन्य भाग्य

(३४)

तर्ज—गोपीचन्द लड़का

धन्य भाग है म्हारा, हरिजी रा प्यारा आया गाँवमें।
धन्य भाग है म्हारा, प्रभुजी रा प्यारा आया गाँवमें॥टेर॥
दर्शण सूँ अँखिया ठरे रे, परसत पुलके अंग।
आज्ञा पालन जो करे रे, चढ़े भक्ति को रंग जी॥ १ ॥
गंगा तट पर जो बसे रे, लागत ठंडी बाल।
ज्यों संताँरे, संगसूँ रे, तपत बुझे ततकाल जी॥ २ ॥
जनम दुखी कोई जीवड़ो रे, लिख्या विधाता लेख।
मारग बहताँ संत मिले तो, मिटे करम री रेख जी॥ ३ ॥
गंगा जमुना सरस्वती रे, तीरथ चारौं धाम।
आन मिलें सब साथ में रे, सन्त बसे जेहि गाँव जी॥ ४ ॥
रीझो चाहे खीजो प्रभुजी, दीजो मती बिसार।
संता सूँ बिछुड़न मत कीज्यो, पल पल अरज हमार जी॥ ५ ॥

सत्संग करनेंरी प्रेरणा

(३५)

आवो रे साथीड़ाँ आपाँ सतसंगतमें जावाँला॥टेर॥
सतसंगतमें जावाँला म्हे जीवन सफल बनावाँला।
कलजुगमें सतसंगत करके, सत् जुग कर दिखलावाँला॥ १ ॥
पास पड़ौसी कुटुम्ब कबीलो, सबनें नूत बुलावाँला।
गाँव शहर और गली गली में, हेलो आज फिरावाँला॥ २ ॥
ऐसो मौको फिर नहिं लागे, कुण जाणे कित जावाँला।
दुर्लभ है संताँरा दर्शण, फेर दर्शण कब पावाँला॥ ३ ॥
भीड़ होय तो सरक सरक कर, भेलासा होज्यावाँला।
आवणियाँ नें आदर देस्याँ, कर सत्कार बिठावाँला॥ ४ ॥

चुप होकर के सुणाँ ध्यानसूँ, बाताँ नहीं बनावाँला।
औराँ रे सुणणेंमे म्हेतो, बाधा ना पहुँचावाँला॥ ५॥
महापुरुषाँरी चुग चुग बाताँ, हिरदे माँय बिठावाँला।
अवगुण सारा तज कर म्हेतो, हरि-चरणाँ चित लावाँला॥ ६॥

रामजी री किरपा

(३६)

मौको रामजी मिलायो, दुर्लभ मिनखा देही पायो,
जिवड़ा सत्संगत में चाल, थारो काई बिगड़े॥टेर॥
सामो पुरुस्योड़ो है थाल, चौड़े जीमो मालामाल,
काटो चौरासी रो काल, थारो काई बिगड़े॥ १॥
गाय पावसियोड़ी त्यार, झर-झर बहवे दूधाँधार,
होज्या पीवणने तैयार थारो काई बिगड़े॥ २॥
सबकी कर सेवा उपकार, मुखसों हरि हरि नाम उचार,
झठ हो ज्यावे बेड़ापार, थारो काई बिगड़े॥ ३॥

हर-नगरी

(३७)

तर्ज—केवट तूँ कर दे पार

बीरा गंगा के तटपर चाल, दिखऊँ तन्नें हर नगरी।
बीरा संताँरा दरशन होय, भीड़ हरि भगतन्ह री।
बीरा मिलै न बारमबार, मौज मिनखा तन री।
बीरा अमरित भरिया होद, बहत नदियाँ धन री।
बीरा होले तो होले मत चाल, करो न देरी पल छिन री।
बीरा जनम सुफल होय जाय, मिटे दुबिधा मन री।

सत्संग करने री जिग्यासा

(३८)

म्हाँने सतसंगतरो कोड, लावो म्हे लेस्याँ जी म्हे लेस्याँ।
म्हाँने हरि मिलणरो चाव, लावो म्हे लेस्याँ जी म्हे लेस्याँ॥टेर॥

आज अकेला म्हे नहिं आवाँ सबनें नूतो देय बुलावाँ।
आदरसूँ आगे बैठावाँ जीवणरा दिन चार॥ लावो०॥ १॥
पहले तो म्हे दर दर भटक्या औराँरे दिलमाहीं खटक्या।
ममता मोह लोभ में अटक्या, कर भीतर छुटकार॥ लावो०॥ २॥
पग धरणेंरी आश नहीं है भजनकी पूँजी पास नहीं है।
स्वासाँ रो विसवास नहीं है, कब निकले फूंकार॥ लावो०॥ ३॥
सुण बाताँ हिरदेमें धरस्याँ, मिल आपसमें चरचा करस्याँ।
खोटा काम करणसूँ डरस्याँ, हरि-भज उतराँ पार॥ लावो०॥ ४॥

सत्संगसे ग्यान

(३९)

जासूँ प्रगटेलो हियेमाहीं ज्ञान, संगत कर ले सन्तन की॥टेर॥
सन्तन का सँग जो करे रे, बगुला हंस हो जाय।
कूड़ा करकट छोड़के रे, मोतीड़ा चुग-चुग खाय॥ १॥
संत मिलन को चालिये रे, तज ममता अभिमान।
ज्यों-ज्यों पग आगे धरे रे, कौटिन यज्ञ समान॥ २॥
संत हमारे मात पिता हैं, सन्त है भाई बन्ध।
संत मिलावे रामसों रे, काटेहै जमकेरो फन्द॥ ३॥
सन्त हमारी आतमा रे, हम सन्तन की देह।
रोम रोम में रमरया रे, जैसे बादल बिच मेह॥ ४॥

(४०)

सतसँग माहिं पधारिया जी संताँ राम राम जी।
भूल चूक की जो माफ, घणा घणा राम राम जी॥टेक॥
बिरछ लगायो सतसंग रो जी संताँ राम राम जी।
सींचत रहिज्यो आप, घणा घणा राम राम जी॥ १॥
दे दरशण म्हांने धन्य कियाजी संताँ राम राम जी।
मेट्या भव दुख संताप, घणा घणा राम राम जी॥ २॥

नित म्हांने रहज्यो सँभालता जी संताँ राम रामजी।
आप हो गुरु माँ बाप, घणा घणा राम रामजी॥ ३ ॥
गुण नहिं भूलाँ आपरो जी संताँ राम रामजी।
पल पल सीस नवाय, घणा संताँ राम रामजी॥ ४ ॥
तागो हुवे तो तोड़ ल्यूँ जी संताँ राम रामजी।
प्रीति न तोड़ी जाय, घणा घणा राम रामजी॥ ५ ॥
कागद हुवे तो बाँच ल्यूँ जी संताँ राम रामजी।
करम न बाँच्यो जाय, घणा घणा राम रामजी॥ ६ ॥
कुओ हुवे तो डाक ल्यूँ जी संताँ राम रामजी।
समँदर डाक्यो न जाय, घणा घणा राम रामजी॥ ७ ॥
वस्तु हुवे तो परख ल्यूँ जी संताँ राम रामजी।
किस्मत परखी न जाय, घणा घणा राम रामजी॥ ८ ॥
रामजी मिलावे तो फेर मिलां जी संताँ राम रामजी।
कराँ मिल हरि गुण गान, घणा घणा राम रामजी॥ ९ ॥
प्रभु म्हारा दीनदयाल है जी संताँ राम रामजी।
दीन्हा अस जोग मिलाय, घणा घणा राम रामजी॥ १० ॥

(४१)

प्यारा लागो जी, प्रभुजी म्हाँने प्यारा लागो जी।
ओजी म्हारे और कछू नहीं चाह॥ प्रभु०॥ १ ॥
घरमें राखो जी, प्रभुजी चाहे बाहर राखो जी।
ओजी म्हाँरी डोरी थाँरे हात॥ प्रभु०॥ २ ॥
दुख सूँ राखो जी, प्रभुजी चाहे सुख सूं राखोजी।
ओजी म्हाँने राखो संतन साथ॥ प्रभु०॥ ३ ॥
और न कोई जी, प्रभुजी म्हारे दूजो न कोई जी।
ओजी म्हारा अंतरजामी आप॥ प्रभु०॥ ४ ॥
मत बिसराओजी, प्रभुजी म्हाँने क्यूँ बिसराओ जी।
ओजी थाँरे शरण पड़ी म्हारा श्याम॥ प्रभु०॥ ५ ॥

भगवानद्वारा भगताँ री महिमा

(४२)

म्हारा भगत जगत् में थोड़ा सा,
ज्याँरी महिमा वरणी नाँ जाय,
सुन रे उद्धव म्हाँने भगत बिना नहिं आवड़े॥टेर॥
म्हेतो अन्न जल पावाँ भगताँ रे,
म्हाँनें औराँरो अन्न नहिं भाय॥ सुन०॥ १॥
म्हारा भगत है सिरका सेहरा,
म्हारा भगत है जीवन प्राण॥ सुन०॥ २॥
जठे चरण टिके म्हारे भगताँरा,
बठे धर देवाँ दोन्यू हाथ॥ सुन०॥ ३॥
म्हारे लिछमी सी सुन्दर घर वारी,
म्हारे ब्रह्मा सरिसा पूत॥ सुन०॥ ४॥
धारूँ भगताँरे कारज नर-देही,
लेवूँ जुग जुग में अवतार॥ सुन०॥ ५॥
मैं तो भगताँरे चरणाँरी रज पावूँ,
फिरतो रहवूँ मैं हरदम लार॥ सुन०॥ ६॥
म्हारे भगताँरी चरचा सुणबानें,
चल्यो, जाऊँ मैं कोस हजार॥ सुन०॥ ७॥

प्रभुजीसे प्रार्थना

(४३)

प्रभु थाँरा दरशण किस बिध पाऊँ,
मन विषयनमें फँस गयो मेरो,
कहो कैसे सुलझाऊँ॥टेर॥
कुटुम्ब कबीलो सुत दारा सँग, रहकर अलग ना पाऊँ।
हुकुम करो तो पिन्ड छटाऊँ, जंगलमें बस जाऊँ॥ १॥

पाप करम कर पेट भरनकी, जहँ-तहँ शिक्षा पाऊँ।
भजन करनकी कोई नहिं कहवे, कररया खाऊँ खाऊँ॥ २॥
मान बड़ाई सुण सुण मनमें, फूल्यो नाँय समाऊँ।
ऊपर ऊपर हरिगुण गाऊँ, भीतर लोग रिझाऊँ॥ ३॥
म्हारे हियेमें ठौर तिहारी, बस गया आन बटाऊ।
बिड़द रखो तो बेगि बचावो, चलत न मोर उपाऊ॥ ४॥

अवसरको लाभ

(४४)

अवसर मत चूको मत चूको, भाई पावो प्रेम प्रभू को॥टेर॥
भोगाँरी या चमक दमक पर फिदा होय मत सूको।
मिले जिस्या ही खाय ढोकला, हरिको नाम धड़ूको॥ १॥
लाख काम तजि आतुर होके, सतसंगत में ढूको।
काम क्रोध मद लोभ मोह को, ज्ञान अगनि से फूँको॥ २॥
करम करो निषकाम भाव से, मारग में मत रूको।
कर अरपन सब प्रभु चरणा में, दास भाव से झूको॥ ३॥
बैठ एकान्त हरी के सनमुख फाड़ कलेजो कूको।
सटके अरजी सुणे साँवरो, असल प्रेमको भूको॥ ४॥
जा पहुँचो बैकुंठ धाम, कलजुग के मार घमूको।
फेर जनम नहिं होय जगत में इमरत सें क्यूँ ऊको॥ ५॥

मातृदेवो भव, पितृदेवो भव

(४५)

थे भूलज्यो सब कुछ मगर माँ बाप नें मत भूलज्यो।
करजो घणूँ माँ बाप को सिर पर चढ्यो मत भूलज्यो॥टेर॥
मुखड़ो तो थारो देखणें हित, देवता पूज्या घणाँ।
जलम्या जणाँ हरख्या घणाँ, इण बातनें मत भूलज्यो॥ १॥
चढ़ डागले थाली बजा, सगलो कुटुम्ब भेलो कियो।
गुड़ गाँव में घर-घर बँटायो, लाड यो मत भूलज्यो॥ २॥

माँ बाप का कपड़ा करया, मल मूतस्यूँ थे सूगला।
धो पूँछ कर छाती लगाया, प्यार यो मत भूलज्यो॥ ३ ॥
थे चूँगता रोगी हुया, खाई दवाई मावड़ी।
टूणाँ कर्‌या निजराँ उतारी, वा वखत मत भूलज्यो॥ ४ ॥
जद रुत सियाली रात आधी, मूत गुदड़ा गालता।
तब साफ कर सूखे सुवाती, वा घड़ी मत भूलज्यो॥ ५ ॥
अति गन्दगी में आँगल्याँ भर, थे लकीराँ माँडता।
तब हाय छी! छी! कर नहलाया, वा घड़ी मत भूलज्यो॥ ६ ॥
माता सिखायो बैठणूँ तो, थे गुड़क गिर जावता।
फिर बोलणूँ चलणूँ सिखायो, वे दिवस मत भूलज्यो॥ ७ ॥
टुक तोड़ मुख को गासियो, गोडे बिठा मुखमें दियो।
थे उगल पाछा थूक भरता, वे दिवस मत भूलज्यो॥ ८ ॥
अब तो बडी बाताँ बणावो, (या) देण सब माँ बाप की।
थे छेद मत करज्यो कलेजे, जुग जुगाँ मत भूलज्यो॥ ९ ॥
खुद थे कमायो घन घणूँ, माँ बाप ने ठार्‌या नहीं।
या धूल है ऐसी कमाई, बात या मत भूलज्यो॥ १० ॥
थे अगर निज संतान सूँ, सुख मिलन की आशा करो।
खुश हो सदा माँ बाप की, सेवा करो मत भूलज्यो॥ ११ ॥
धन खरचताँ मिलसी सभी, माता पिता मिलसी नहीं।
थे नित नवावो सीस चरणन्ह में जरा मत भूलज्यो॥ १२ ॥
थी मात कैकई पिता दशरथ, बचन प्रभु टाल्या नहीं।
श्रीराम जीत्या लंकनें, सिया राम नें मत भूलज्यो॥ १३ ॥

लोक-रुचिकी लापरवाही

(४६)

भाई रे कर ली साँवरियाजीसूँ यारी,
तो दुनियाँदारी कुछ भी कहो॥ टेर॥

कोई कहे धुरत पाखंडी कोई कहे अनाड़ी।
कोई कहे मतलबरो पक्को कपट करण हुँसियारी॥ रे० ॥ १ ॥
कोई कहे फिरे मोडाँमें छोड़ी दुकानदारी।
कोई कहे बन्यो निरमोही दुख पावे है घरकी नारी॥ २ ॥
कोई कहे मुफतको खावे इज्जत गमायी सारी।
कोई कहे अचम्भो आवे पार पड़ेली कैयाँ थारी॥ ३ ॥
कोई कहे भगत बण बेठ्यो कोई कहे संसारी।
आदर मान करे बड़ कोई कोई तो देवे मुख गारी॥ ४ ॥
तज मन सोच-फिकर बड़भागी भज ले श्याम मुरारी।
डूबत नैया पार लगावै नखपर गिरिवर धारी॥ ५ ॥

मातावाँ भक्त संतान पैदा करें

(४७)

पुत्र जनो हरि भक्त जनो थे, सुनज्यो मायाँ बायाँ हे।
करो बडो उपकार जगत को, सुफल होत यह काया हे॥टेर॥
जैसे मात कयाधू ने प्रह्लाद भक्त को जाया हे।
खम्भे माँय प्रगट कर प्रभु को, घट-घट में दरशाया हे॥ १ ॥
मात सुनीती आज्ञा दीन्ही, ध्रुव तप करन सिधाया हे।
मदालसा ने लोरी देके, सुत को ज्ञान सिखाया हे॥ २ ॥
साठ हजार सगर के बेटा, कोई न गंगा लाया हे।
कुल में इक भागीरथ जनम्यो सबने मुकत कराया हे॥ ३ ॥
मात सुमित्रा लखनलाल को, राम के संग पठाया हे।
कर सेवा प्रभु की कीरति का, झंडा जग फहराया हे॥ ४ ॥
मात अंजनी हनुमत जाया, सुवरण लंक जलाया हे।
सुध ले जब सीता की आया, रघुवर ॠणी कहाया हे॥ ५ ॥
हुलसी माता तुलसी जाया, मानस ग्रन्थ रचाया हे।
मैणावति ने गोपीचन्द को, जोगी अमर बणाया हे॥ ६ ॥

भगतांरी महिमा निज मुखसूँ गीता में प्रभु गाया हे।
धन! धन! वा बडभागण माता, भक्त को गोद खिलाया हे॥ ७॥

गोपीचन्द

[माँ मैणावतीको रोती हुई देखकर गोपीचन्द रोनेका कारण पूछ रहा है।]

(४८)

मैणावती माता नीर भर्‌यो ऐ थाँरे नैणमें।
गोपीचन्द लड़का बादल बरसे रे कंचन महलमें॥ टेर ॥
क्यों तूँ माता उणमणी ऐ! नित की रहे उदास।
जो कोई कहवे जीभ कटावूँ, करूँ दुश्मन को नाश ऐ॥ मै० १॥
ना मैं बेटा उणमणी रे, ना मैं रहूँ उदास।
रितु पलटी बादल चढ्या रे, अब बरषण की आस रे॥ गो० २॥
ना बादल ना बिजली ऐ! ना कोइ बाजे बाव।
थाँरे मन चिन्ता घणी ऐ, म्हाने साँची खोल बताय ऐ॥ मै० ३॥
साँच कहूँ तो डर लगे रे, झूठ कह्याँ पत जाय।
जहाज पड़ी दरियावमें रे, अधबिच गोता खाय रे॥ गो० ४॥
जहाज पड़ी दरियावमें ऐ, कर दूँ परली पार।
मार हटावूँ दुश्मन को ऐ, ले नंगी तलवार ऐ॥ मै० ५॥
म्यान धरो तलवारने रे, धरो जमी पर ढ़ाल।
कायागढ़ सूनो पड्यो रे, अपनो विरद सँभाल रे॥ गो० ६॥
मेरा विरद बसे मन तेरे, जो कोइ आज्ञा पावूँ।
बचन चूककर फिरूँ न पाछो, तुरतहि हुकम उठाऊँ ऐ॥ मै० ७॥
मुझे भरौसा पुत्र तुम्हारा, तुम हो आज्ञाकार।
राज पाट स्वपने की माया, सब झूठा संसार रे॥ गो० ८॥

[इसपर गोपीचन्द माँसे प्रार्थना करता है]

(४९)

मने राज करन दे, जोगी मत कर ऐ माँ मैणावती।
गोपीचन्द लड़का, जोगी हो जा रे चेला नाथ का॥टेर॥

बारह बरष की ऊमर माता, मैं क्या जानूँ जोग।
चरचा करे मुलकके माहीं, हँसे शहर का लोग ऐ॥ मने० १॥
मेरा बचन फिरे नहिं पीछा, यह पुरुषों का बाक।
तेरिसि सुरत तेरे बापकी रे, जल बल हो गई खाख रे॥ गोपी० २॥
तेरा बचन फिरे नहिं पीछा, जाँ घर पूत सपूत।
दो जुग राज करन दे माता, फिर जोगी अवधूत ऐ॥ मने० ३॥
पाव पलक का नहीं भरौसा, करे काल्ह की बात।
क्या जाने क्या होवसी रे, दिन ऊगे परभात रे॥ गोपी० ४॥
दिन ऊगे दाँतन करूँ ऐ, नित को देऊँ दान।
षट् दरसण को भाव रखूँ मैं, विप्र बधाऊँ मान ऐ॥ मने० ५॥
दान दिये फल होवसी रे, धन दौलत अरु माया।
असल फकीरी ले ले बेटा, अमर हो जावे, काया रे॥ गोपी० ६॥
काया अमर करूँ इक छिनमें, कितियक लागे बार।
परथम परन्या पदमणी ऐ, बिलखे राजकुमार ऐ॥ मने० ७॥
तिरिया जात जगतमें झूठी, सुन रे गोपीचन्द।
जनम-मरण से हो जा न्यारा, कटे चोरासी फन्द रे॥ गोपी० ८॥
कटे चोरासी फन्द जु मेरा, जा में निपजे सार।
सत्तर लाख फौजदल प्यादा, उभा करे पुकार ऐ॥ मने० ९॥
करे पुकार कोई नहिं तेरा, अपने अपने काज।
मामा तेरा देख भरथरी, तज्यो उजीणी राज रे॥ गोपी० १०॥
तजी उजीणी भरथरी ऐ, आया गोरखनाथ।
पहले राज कियो पृथवी पर, गया गुरूके साथ ऐ॥ मने० ११॥
गुरु देवन का देव है रे, धरो उसीका ध्यान।
आप तिरे फिर तुझे तिरावे, गावे वेद पुराण रे॥ गोपी० १२॥

[माँकी आज्ञासे गोपीचन्द साधु होकर रनिवासमें अपनी रानियोंको माता कहकर भिक्षा माँगता है। फिर अपनी बहिन चन्द्रावलीके घरपर भिक्षाके लिये पहुँचता है।]

(५०)

सुन बहन सयानी, भिक्षा घालोनी ऊभो बारणें।
गोपीचन्द बीरा, जोगी हुयो रे काईं कारणें॥ टेर ॥
कहाँसे लीन्ही सैली सींगी, कहाँ फड़ाया कान।
बारह बरस की ऊमर तेरी, तूँ लड़का नादान रे॥ गोपी० १ ॥
जनम दियो मैणावती ऐ, मैं किस विधि करूँ पुकार।
मूँड मुँडायो महलमें ऐ, मने कियो गुरू के लार ऐ॥ सुन० २ ॥
मरज्यो माँ मैणावती रे, तुझे सिखायो ज्ञान।
दूजा मरज्यो सत्‌गुरु थारा, फाड़्या छुरीसे कान रे॥ गोपी० ३ ॥
कान फड़ाया मुदरा डाली, कर कर भगवाँ भेष।
माता गुरुने दोष नहीं है, लिख्या विधाता लेख ऐ॥ सुन० ४ ॥
क्या विधाता लिख दई रे, संगति का उपदेश।
शहर बंगालो सभी डुबोयो, कर कर भगवाँ भेष रे॥ गोपी० ५ ॥
भगवाँ में भगवान् बसे ऐ, गुरु देवनके देव।
आप तिरे और तुझे तिरावे, करूँ उसीकी सेव ऐ॥ सुन० ६ ॥
तेरे गुरू के आग लगाऊँ, उलटी दीन्ही सीख।
राज छोड़कर भयो मसाणी, घर घर माँगे भीख रे॥ गोपी० ७ ॥
माँगी भीख बारणें तेरे, दिवी गुरूनें गाल।
फिर नहिं आवूँ द्वारे तेरे, उठे बदनमें झाल ऐ॥ सुन० ८ ॥

शिक्षाप्रद लोकगीत

(५१)

ससुरजी ने तीरथ मान लो ये हरिकी प्यारी।
थाँरी सासूजी ने गंगा समान समझ हरिकी प्यारी,
जासौं मुकती होय थाँरी॥ टेर ॥

जेठ पिता सम मान लो ये हरिकी प्यारी।
थाँरी जिठाणी मात समान समझ हरिकी प्यारी॥ जासौं॥ १॥
पति परमेश्वर मान लो ये हरिकी प्यारी।
वाँरो हुकम सीसपर राख समझ हरिकी प्यारी॥ जासौं॥ २॥
देवर पुत्र ज्यों मान लो ये हरिकी प्यारी।
थाँरी देवरानी बहन समान समझ हरिकी प्यारी॥ जासौं॥ ३॥
नणदी रो आदर राखज्यो ये हरिकी प्यारी।
वाँरो करो सदा सम्मान समझ हरिकी प्यारी॥ जासौं॥ ४॥
लाज सरम मत छोड़ज्यो ये हरिकी प्यारी।
थे तो करज्यो मत अभिमान समझ हरिकी प्यारी॥ जासौं॥ ५॥
घरको कारज खुद करो ये हरिकी प्यारी।
थे तो छोड़ो सुख आराम समझ हरिकी प्यारी॥ जासौं॥ ६॥
निंदा चुगली मत करो ये हरिकी प्यारी।
थे तो करज्यो हरि गुणगान समझ हरिकी प्यारी॥ जासौं॥ ७॥
गीता रामायण बाँचल्यो ये हरिकी प्यारी।
थे तो जपो सदा हरि नाम समझ हरिकी प्यारी॥ जासौं॥ ८॥
दोय दोय कुलने तारज्यो ये हरिकी प्यारी।
थे तो जास्यो प्रभुके धाम समझ हरिकी प्यारी॥ जासौं॥ ९॥

पतिव्रत धर्म

(५२)

सुनो ग्यान बड़े कुल वाली ये, थे धरम सनातन पाल ज्यो॥टेर॥
बहनाँ सति अनसूया बन ज्यो, अतिथी ने भीच्छा घाल ज्यो॥ १॥
बहनाँ सीता सतवन्ती बन ज्यो, दुरजन पर धूली डाल ज्यो॥ २॥
बहनाँ सति सावित्री बन ज्यो, पिव की जम बाधा टाल ज्यो॥ ३॥
बहनाँ सति दमयन्ती बन ज्यो, आपत में शील सँभाल ज्यो॥ ४॥
बहनाँ सति पारबती बन ज्यो, अपनो प्रन कर मत टाल ज्यो॥ ५॥
बहनाँ दरजी नाथू गावे, पिव की आग्या में चाल ज्यो॥ ६॥

बहनाने चेतावणी

(५३)

बहनाँ सुणो तो सरी हे बहनाँ सुणो तो सरी।
रामजी दयालजी ने क्यूँ बिसरी॥टेर॥
घर में बाताँ बाहर बाताँ, बाताँ पाणी जाताँ।
आँ बाताँ में नफो नहीं है जम मारे ला लाताँ॥ १ ॥
खावणने खाथी घणी थे, राम भजन में माठी।
जँवायाँरा गीत गावती फिरो शहर में नाठी॥ २ ॥
पाँच सात तो भाई भेला कैसा लागे प्यारा।
जे बायाँरो सारो होवे, कर दे न्यारा न्यारा॥ ३ ॥
परमारथने पतली पोवे, घरका ताईं जाडी।
सायबके दरबार में थाँरी, कैयाँ आसी आडी॥ ४ ॥
चोखा चावल मोठ बाजरी, घर में आघा मेले।
सुलियो धान घणाँ काँकरा, माँगणियाँ ने ठेले॥ ५ ॥
ओढ़ पहर कर एडी निरखे, कुण बायाँरी पड़ दे।
जे बायाँरो हुकम चले तो, चोटी फुर्र फुर्र कर दे॥ ६ ॥
बाँयाँरी निन्दा मत कर ज्यो, बायाँ सबकी मायाँ।
अमर भई है मीराँ बाई, गिरधर का गुण गायाँ॥ ७ ॥

क्रूर स्वभावकी फूहड़ नारी

(५४)

घर भून्डो लागे फूहड़ नारी फिरे आँगणे॥ टेर॥
साँझ सबेरे झगड़ो करती दोफाराँ लग सोती।
बासी मुँडे करे कलेवो, पीछें मुखड़ो धोती॥ १ ॥
कर तकरार पती पर कड़के, जैसे काली नागण।
सीख न किसकी सुणे शंखणी, ऐसी है मँद भागण॥ २ ॥

बड़ी कठोर दया नहिं मनमें, रहे न किसके सारे।
रोटी करती टाबरियाँ ने, पटक पटक कर मारे॥ ३॥
घर में बैठ्याँ मन नहिं लागे, दिन भर करे हताई।
बास गल्याँ मे फिरे भटकती, निन्दा करे पराई॥ ४॥
दोउ हाथाँ सू माथो कुचरे, चट चट जूँवाँ मारे।
ओढ़णियूँ लटकायाँ चाले, फिरती डगर बुहारे॥ ५॥
हरदम मुँह फुलायो राखे, कदे न मीठी बोले।
बड़े बुढ़े की काँण न माने, बदन उघाड़्याँ डोले॥ ६॥
रोवे तो सब गाँव सुणावे, हड़ हड़ हड़ हड़ हाँसे।
मैली घणीं कुचैली रहवे, तनका कपड़ा बाँसे॥ ७॥
ऐसी नार मिले कोई नरनें, हरिने तुरत पुकारो।
दीनानाथ दया कर म्हारो, बेड़ो पार उतारो॥ ८॥

अशिक्षित फूहड़ नारी

(५५)

फूहड़ आई घर में नार, धन्य भाग थारा भरतार॥
घर की नहिं है सार सँभाल पड़्या उघाड़ा सारा माल॥
बिखर्‌या बरतण बिखरी दाल, प्रिन्डे आगें जूठा थाल॥
उड़ उड़ काग बखेरे जूठ, हान्डी घड़ा रया सब फूट॥
उलटो पीढ़ो आँगण बीच, च्यारूँ कूँटाँ मचरयो कीच॥
फिर फिर चूसा आटो खाय, पापड़ बड़ी पगाँ में आय॥
हरदम घर का खुला किंवाड़ कुत्ता बिल्ली करे बिगाड़॥
फूहड़ आँगण रही बुहार, कीड़्याँ मारे बेसुमार॥
इतको कूड़ो इत उड़ आय, घर ही को घर में रह जाय॥
फूहड़ पीसे आटो दाल, ईल्याँ घुन को आयो काल॥
अध छाण्यो ही, आटो घोल, आधो दियो जमीं पर ढोल॥
फूहड़ चूल्हो रही जलाय, लकड़ी पहली ना झड़काय॥

चूल्हे माँही दे सरकाय, जीव जन्तु सारा जल जाय॥
रोटी देर लगाय करी, अध कच्ची अध जली धरी॥
मुख में ले तो किर किर आय, खावणियूँ रीसाँ बल जाय॥
फूहड़ तूँ हरि नाम पुकार, थाँरी आदत तुहीं सुधार॥
तिरज्यासी थाँरो भरतार, तिरज्यासी सारो परिवार॥

(५६)

म्हारा भाइ रे मालक जी ने भूलो मती रे॥टेर॥
लाधग्यो कलजुग रो मोको, ओ अवसर मिलग्यो है चोखो,
फेर रह ज्यावे लो धोखो, छोड़द्यो चिलम बिड़ी होको,
बीरा खोटाँ की संगत कबूलो मती रे॥ १ ॥
कहावो बड़ा धराँरा पूत, बिगड़ग्या कर खोटी करतूत,
बणोला आं लखणा सूँ भूत, पड़ेला जम राजा का जूत,
बीरा लख चौरासी में झूलो मती रे॥ २ ॥
चढ़ाकर दारूड़ी की घूँट, बण्योड़ा मतवाला ज्यूँ ऊँट,
हाँडता फिर रया च्यारूँ कूँट, जाण कर हिया गया क्यूँ फूट,
बीरा खोटा कामण कर फूलो मती रे॥ ३ ॥
एक दिन जास्यो छोड़ मुकाम, छूटसी नेतागिरी तमाम,
न आवे सरपंचाई काम, चालसी संग राम को नाम,
बीरा राम भजन करो रूलो मती रे॥ ४ ॥

बूढ़ापो

(५७)

बूढ़ापा बैरी किस बिध होसी थारो छूटबो॥ टेर ॥
नैणासूँ अब सूझे नाहीं दाँत भया सब खोला।
नाक झरे सुणबा को घाटो ऐ काँई दुखड़ा थोड़ा रे॥ बू० ॥ १ ॥
डगमग डगमग नाड़ी हाले, लेई हाथ में गेडी।
गोडा दुखे चल्यो न जावे, कमर हो गई टेढ़ी रे॥ बू० ॥ २ ॥

ठण्डी रोटी गले न उतरे, नरम खीचड़ी भावे।
खारो खाटो दाय न आवे, मीठा पर मन जावे रे॥ बू० ॥ ३ ॥
बेटा पोता कयो न माने, नार्‌याँ का भरमाया।
घालाँ जी सो खाले डोकरा, काईं कमाकर लाया रे॥ बू० ॥ ४ ॥
बहुवाँ छोड़्यो काँण कायदो, कद मरसी ओ डाकी।
खाय सकाँ नहिं पहर सकाँ नहिं, हीड़ा कर कर थाकी रे॥ बू० ॥ ५ ॥
सन्त सुजाण देत है हेला, सुन लीजो सब लोग।
ओ संसार स्वपन की माया, मिथ्या है सब भोग रे॥ बू० ॥ ६ ॥

ममताको त्याग

(५८)

छोड़ मन तूँ मेरा मेरा, अंतमें कोई नहीं तेरा॥टेर॥
धन कारन भटक्यो फिर्‌यो, रच्या नया नित ढंग।
ढूँढ़ ढूँढ़ कर पाप कमाया, चली न कौड़ी संग।
हो गया मालिक बहुतेरा॥ १ ॥
टेढ़ी बाँधी पागड़ी, बन्यो छबीलो छैल।
धरतीपर पग गिन गिन मेल्या, मौत पड़ी है गैल।
बखेर्‌या हाड हाड तेरा॥ २ ॥
साबुन से नित न्हाइयो, अतर फुलेल लगाय।
सजी सजाई पुतली थारी, पड़ी मसाणाँ जाय।
जलाकर किया भसम ढेरा॥ ३ ॥
मदमातो करड़ो रयो, राता राख्या नैण।
आयाँ ने आदर नहिं दीन्हो, मुख नहिं मीठा बैण।
अंत जमदूत आय घेरा॥ ४ ॥
पर धन पर नारी तकी, पर चरचा सूँ हेत।
पाप पोट माथेपर मेली, मूरख रयो अचेत।
हुया फेर नरकाँ में डेरा॥ ५ ॥

राम नाम लीन्हो नहीं, सतसँग सूँ नहिं नेह।
जहर पियो इमरत ने छोड़्यो, अंत पड़ी मुख खेह।
स्वास सब व्यर्थ गया तेरा॥ ६ ॥
हूँ हूँ करतो ही मर्‍यो, गयो जमारो हार।
दुरलभ मानुष देह गमाई, करम किया बदकार।
पड़्यो फिर जनम मरण फेरा॥ ७ ॥
काम क्रोध मद लोभ ने, तजकर जलदी चेत।
मैं मेरे की छोड़ कलपना, कर ले हरि सूँ हेत।
जनम यह सफल होय तेरा॥ ८ ॥

कलजुग रो प्रभाव

(५९)

तर्ज—धमाल

कलजुग हाका करतो आवे रे, चौड़े धाड़े।
कलजुग ढोल बजातो आवे रे, चौड़े धाड़े॥टेर॥
सतजुग श्रेता द्वापर युगकी, कूच करी ठकुराई।
आँख खोल कर देखो भाइड़ाँ कलजुग की चतुराई॥
सगला एकल कुण्डे न्हावे रे॥ १ ॥
नार्‍याँ को नारी पण उठग्यो, मरदाँकी मरदाई।
हिन्दू बंस मिटावन लाग्या बणे नतीजो काईं॥
सगला होडाहोड मचावे रे॥ २ ॥
छोड़्या च्यारूँ वरण आपरी, रोट्याँ रो रुजगार।
भाषा छोड़ी भेष छोड़्या, बेट्याँ रो व्यवहार॥
सगला भेला मिलकर खावे रे॥ चौड़े० ॥ ३ ॥
चोटी छोड़ी धोती छोड़ी, नेक्टायाँ लटकावे।
खड़्या खड़्या भीताँ पर मूते, जूता पहर्‍याँ खावे॥
पूरब छोड़्यो पश्चिम जावे रे॥ चौड़े० ॥ ४ ॥

आपस में मुंडे नहिं बोले, माँका जाया भाई।
झूठा झूठा करे मुकदमा, राज कचेड़्याँ माही॥
वे तो खुल्ली रिस्वत खावे रे॥ चौड़े० ॥ ५ ॥
बहुराण्याँ बेटाँ रे सँग में, कलबाँ माहीं डोले।
काम काज की कहवे तो सासू से करड़ी बोले॥
बेटो बाप ने धमकावे रे॥ चौड़े० ॥ ६ ॥
कामी चोर लबारी मँगता, कपटी भेष बणावे।
सन्त जाण भोला नर-नारी चुंगुल में फँस ज्यावे।
पैसा खावे धरम गमावे रे॥ चौड़े० ॥
रूपियाँ खातर मुंडो बावे रे॥ चौड़े० ॥ ७ ॥
घर-ग्रस्थी भी चेल्याँ मूँडे, जोगी नाम धरावे।
अपनी ही पूजा करवावे, ईश्वर नाम उठावे॥
दौड़्या नरकाँ माहीं जावे रे॥ चौड़े० ॥ ८ ॥
बड़ो एक गुण कलजुग माहीं, बड़ भागी लख पावे।
राम-नाम जपणे सूँ प्राणी, भव सागर तिरजावे॥
तुलसी रामायण में गावे रे॥ चौड़े० ॥ ९ ॥

नशो करणे सूँ पतन

(६०)

तर्ज—पनजी

नशा-नशा में नसाँ काढ़ली, पूँजी खूटी रे,
लत नहिं छूटी रे॥टेर॥
निकमी बाताँ करे नशे में, बक-बक बोले झूठी रे।
लोग बिगाड़न काज बतावे, शिवजी री बूँटी रे॥ १ ॥
गाँजा चड़स तमाखू बीड़ी, और दारू की घूँटी रे।
लोक-लाज-मरजादा सारी, टाँगी है खूँटी रे॥ २ ॥
जाति-पाँति कुल धरम बिगाड़्यो, इज्जत गई सब लूँटी रे।
कर्‌यो देश को नाश, काँण बड़काँ री टूटी रे॥ ३ ॥

हँसता-हँसता गले बाँध ली, घोर निकम्मी घूँटी रे।
दुख पावे रोवे नहिं छोड़े, पिवे अपूठी रे॥ ४॥
हुयो देश बदनाम नशे सूँ, हाय हिये की फूटी रे।
मोहन कहे सुणे नहिं माने, दुनियाँ झूठी रे॥ ५॥

चाय पीवणी खराब

(६१)

कलजुग आयो कृष्णजी, जीव हुया लाचार,
दूध छोड़ कर चाय की जगत करे मनुहार।
साध पिवे गृस्थी पिवे, ब्राहमण पिवे चमार,
भेड़ चालकी चलणसें भिसल गयो संसार।
च्यारूँ बरण भिसलग्या जगमें सगला ने जूठण खुवाई।
हे चायड़ती जुलमण, कुण तन्ने मूण्डे लगाई॥
कलयुग की घूंटी, कुण तन्ने मुण्डे लगाई॥टेर॥
बोल— सूरज उगताँ छोरा छोरी, कूक रया है चाय चाय,
बुढ़लती दादी गरलावे, हाय मरी रे चाय चाय,
घर को मालिक भी अरड़ावे, वो भी माँगे चाय चाय,
भर भर चीणमटी का भाँडा धरे पेटमें धाँय धाँय,
शिवशंकर कह सुण पारवती, हरिनाम चितार बिसार मती, जी!
हुया नशेड़ी घरका सारा, रामकथा नहीं भाई॥ हे चायड़ती॥ १॥
बोल— घर पर नाई करे हजामत, वो भी कूके चाय चाय,
कपड़ा सींवण दरजी आवे, तो गरलावे चाय चाय,
चिणबानें चेजारो आवे, बाको फाड़े चाय चाय,
जाग्रण जम्मा रातीजोगा, पटकी पड़ गइ चाय चाय,
शिवशंकर कह सुण पारवती, हरिनाम चितार बिसार मती, जी!
गाँवाँरा रजपूत चौधरी, छोड़ी है दूध मलाई॥ हे चायड़ती॥ २॥

बोल— स्टेशन पर गाड़ी में बैठो, शोर मच्यो है चाय चाय,
मोटर के अड्डे पर जावो, तो चिरलावे चाय चाय,
जाय धरमशालामें ठहरो तो गरलावे, चाय चाय,
देश विदेश कमाबा जावो, दे-किलकार्‌याँ चाय चाय,
शिवशंकर कह सुण पारवती, हरिनाम चितार बिसार मती, जी!
हरिचरचा नहिं पड़े कानमें भारी या आफत आई॥ हे चायड़ती॥ ३॥
बोल— घर पर आय बटाऊ ठहरे, लाय उकालो चाय चाय,
छोरा छोरी ने परणावो, तो भी बालो चाय चाय,
ओसर मोसर टाणाँ काढो, लागे चुंगी चाय चाय,
धोली गऊ को दूध बिगाड़्यो गंदलो कर दियो हाय हाय,
शिवशंकर कह सुण पारवती, हरिनाम चितार बिसार मती, जी!
छोड़ो नशा हरी भज लावा लूंटो बहन मेरा भाई, ॥ हे चायड़ती॥ ४॥

तमाखू पीवणूं खराब

(६२)

राम भजनसूँ दूर हटावे, पीढ़्याँ के दाग लगावे रे,
सुण भोला जिवड़ा, क्याँने तमाखूड़ी खावे,
भूल्योड़ा प्राणी क्याने०॥ टेर॥
कोई सुरड़ बिड़ी सिगरेट ढेर कर देवे,
कोइ दाँतण कर कर सूँघ सूँघ सुख लेवे,
कोइ होटाँ तले दबाय थूक भर देवे,
कोइ चिलम चूँसतो धुवाँ धोर कर देवे,
बात करे तो मुंडो बासे, तन माहीं दुरगन्ध आवे रे॥ सुण०॥ १॥
कोई होको लेकर घुरड़ घुरड़ घुरावे,
सुण भला आदमी दूर दूर भग ज्यावे,
कोइ झाड़ चिलमने दूजी और भरावे,
धरणी पर छोटा जीव जन्तु जलज्यावे,
पाप करम पल्ले बँध ज्यावे, नरकाँमें गोता खावे रे॥ सुण०॥ २॥

कोइ लाय तमाखू ऊँखल मायँ कुटावे,
कोइ बिना तमाखू लौट पलेटा खावे,
कोइ भजन गाय गाँजे की लपट लगावे,
टाबरिया बिगड़े वाँरो मन ललचावे,
कून्डा भर भर कफका गेरे, आखी रात दुख पावे रे॥ सुण० ॥ ३ ॥
कोई पान मसालो नाम लेय गटकावे,
मुख ठण्डो देख सुगन्धी में फँस ज्यावे,
केन्सर को रोगी वणे दृष्टि नहिं जावे,
उलटो होवे परिणाम समझ नहीं पावे,
कहवे तो रींसाँ बलज्यावे, भूल्याँने संत समझावे रे॥ सुण० ॥ ४ ॥
दोउ हाथ जोड़कर सेवक अरज सुणावे,
झट छोड़ तमाखू मुक्त हुयो तूँ चावे,
नरलोक बिगाड़े अरु परलोक नशावे,
यो मिनख जमारो बार बार नहिं पावे,
तज दुर्व्यसन भजन कर भाया, जनम सुफल होय ज्यावे रे॥ सुण० ॥ ५ ॥

उठो! जागो!

(६३)

तर्ज—लोक-गीत

उठ जाग मुसाफिर जाग रे, काया नगरी में लागी आग रे॥ १ ॥
तूँ तो सूत्यो है कैयाँ निसंक रे, कोई राजा बच्यो नहिं रंक रे॥ २ ॥
तूँ तो चेत बटाऊड़ा बीर रे, थारो छिन छिन छीजे सरीर रे॥ ३ ॥
थारा गिणती रा आवे है स्वास रे, थारी पल भर की नहिं आस रे॥ ४ ॥
थारा होरया बाल सफेद रे, तन्ने देख्याँ ही आवे है खेद रे॥ ५ ॥
तूँ तो जगतपिता रो है अंस रे, तूँ तो मत बण रावण कंस रे॥ ६ ॥
धन जोड़े है लाख किरोड़ रे, काईं औराँ री कररयो होड़ रे॥ ७ ॥
तूँ तो जावेलो सब कुछ छोड़ रे, थारा जायोड़ा फोड़ेला भोड रे॥ ८ ॥
बेटा पोटा मूँडालेसी मूँछ रे, थोड़ा आँसूड़ा लेसी पूँछ रे॥ ९ ॥

वे तो दिन दस रोवेला रोज रे, पीछे बैठ्या उडासी मौज रे॥ १०॥
घर रोवेली बिधवा नार रे, हरि भजसी तो बेड़ा पार रे॥ ११॥
तूँ तो चेत अज्ञानी जीव रे, तन्ने याद करे थारो पीव रे॥ १२॥
तन्ने हेला मारे है सन्त रे, पढ़ गीता रामायण ग्रन्थ रे॥ १३॥
थारो लोक बणे परलोक रे, सारा मिट ज्यावे दुख शोक रे॥ १४॥
मत होवे तूँ नीत हराम रे, मुख बोल हरीजी रो नाम रे॥ १५॥

चेतावनी

(६४)

भज गोविन्द गोविन्द गोपाला, भज मुरली मनोहर नन्दलाला॥ टेर॥
थारो मुन्डो, थारो मुन्डो, भजन बिना भुन्डो,
बटाउड़ा सुणरे, थारो हरि बिन नेड़ो कुण रे॥ भज॥ १॥
थारी आँख्याँ, थारी आँख्याँ मे, बींठ करसी माख्याँ, बटाउड़ा०॥ २॥
तूँ तो गोरो, तूँ तो गोरो, भजन बिना कोरो, बटाउड़ा०॥ ३॥
तूँ तो मोटो, तूँ तो मोटो, भजन बिना खोटो, ॥ बटाउड़ा०॥ ४॥
थारा बेटा, थारा बेटा, उतारलेसी हेटा, बटाउड़ा०॥ ५॥
थारा पोता, थारा पोता, राखेला तन्ने रोता, बटाउड़ा०॥ ६॥
थारे घरकी, थारे घरकी, मराताहीं दूर सरकी, बटाउड़ा०॥ ७॥
थारी कूंची, थारी कूंची, टांग्योड़ी रहसी ऊँची, बटाउड़ा०॥ ८॥
थारी हेली, थारी हेली, हो ज्यासी सब भेली, बटाउड़ा०॥ ९॥
क्यूँ फूल्यो, क्यूँ फूल्यो, तूँ रामजीने भूल्यो, बटाउड़ा०॥ १०॥
भज गोविन्द गोविन्द गोपाला, भज मुरलीमनोहर नन्दलाला॥

साठी बुद्धि नाठी

(६५)

तर्ज—थारे माथे नगारा बाजे

थारी साठी ऊमर नाठी क्यूँ हुई रे,
नहीं लीन्हो तूँ रामजी रो नाम॥ टेर॥

काईं बोले तूँ मोटा मोटा बोलणाँ रे,
नहीं कीन्हों तू रामजी सूँ प्यार॥ १॥
समझदारी में होयो फीरे बावलो रे,
बाजे लोगाँमें बड़ो हुँसियार॥ २॥
सारो खोयो जमारो सुख भोगमें रे,
क्यूँ बढ़ायो तूँ धरती रो भार॥ ३॥
चोखा लाग्या तन्ने तो रुपिया रोकड़ा रे,
फूटी कौड़ी चलेगी नहीं लार॥ ४॥
बाँध लीन्ही पापाँरी मोटी पोटली रे,
जमरा दूताँरी खाणीं पड़सी मार॥ ५॥
थारा ऊग्या है बालण वाला रूँखड़ा रे,
बाट जोवे उठावण वाला च्यार॥ ६॥
अब तो पूँजी बटोरो हरिके नामकी रे,
थारो मुंडो है मुकती रो द्वार॥ ७॥

कूच करनेकी तैयारी

(६६)

देखाँला भाईड़ा कैयाँ नट ज्यावेलो।
पलमें टिकट थाँरो कट ज्यावेलो॥टेर॥
चाल कथामें कहे काम करूँ, छोरी छोराँरो मैं तो पेट भरूँ।
काल मुन्डो फाड़ राख्यो गिट ज्यावेलो॥ पलमें० ॥
मोटा-मोटा सोटा लेकर आसी जमराज,
रामजी नें भजताँ थाँने पहली आई लाज।
देखाँ अब कैयाँ पाछो हट ज्यावेलो॥ पलमें० ॥
टेढ़ो-मेढ़ो चाले मनमें राखे है मरोड़,
गरीबाँ सूँ बाता करताँ लेवे मुन्डो मोड़।
सारो ही घमण्ड थारो घट ज्यावेलो॥ पलमें० ॥

उठो रे भाईड़ाँ अब तो भजन करो,
रामजीरो नाम थे तो हिरदेमें धरो।
ऐयाँ तो कर्‌याँसूँ सोदो पट ज्यावेलो॥ पलमें० ॥

औराँने मत देखो

(६७)

दूजे की काईं सोचे म्हारा जिवड़ा, क्यूँ नहिं सोचे थारी रे।
क्याँ ताईं रे इण जगमें आयो, क्यूँ तन्नें मिनख बणायो रे॥टेर॥
मोह मायामें आँधो होग्यो, कियाँ थारी पार लगासी रे।
डूंगर ऊपर बलती दीखे, पग बलती नहिं दीखे रे॥ १ ॥
पल छिन की तेरी खबर नहीं है, काईं मनसूबा बाँधे रे।
करणू है सो अबही कर ले काल खड्यो सिर साँधे रे॥ २ ॥
करस्याँ करस्याँ कई नर करग्या, मनड़ेरी मनमें लेग्या रे।
जो करग्या सो तिरग्या प्राणी, मनसोबी तो डूब्या रे॥ ३ ॥
आछा आछा करम कमाले, जीवन सुफल बणाले रे।
नहिं तो थाँरा कुकरम जमड़ा, दे दे जूता मारे रे॥ ४ ॥
ओम की तो याही वीनती, नाम हरीका गाले रे।
वही तुम्हारा जीवन साथी, अमरलोक ले चाले रे॥ ५ ॥

मिनखा जनम

(६८)

मानखो जमारो बन्दा एलो मत खोवे,
सुकरित कर ले जमारामें।
पापी के मुखसूँ राम कोनी निकले,
केसर ढुल गई गारा में॥ टेर॥
भैंस पदमणीनें गहणूँ पहरायो,
काईं जाणें नोसर हाराने।
पहर कोनी जाणे भोली ओढ़ कोनी जाणे,
कूद पूड़ी वा बाड़ा में॥ १ ॥

सोने के थाल में सूरड़ीने पुरस्यो,
काईं जाणे जीमण जिमाराने।
जीम कोनी जाणे वातो स्वाद कोनी जाणे,
जनम गमायो गन्दीवाड़ा में॥ २॥
काँच के महल में कुत्तीने पोढ़ाई,
कांईं जाणे रंग चोबारा नें।
पोढ़ कोनी जाणे वातो सोय कोनी जाणें,
भुसती फिरे गलियाराँ में॥ ३॥
हीरा ले मूरख ने दीन्हा, दलबा लाग्यो साराँने।
हीराँ की पारख जँवरी जाणें,
काईं जाणे मुरख गिंवारा ने॥ ४॥
अमरितनाथ अमर भया जोगी, जार गया काचे पारानें।
भानीनाथ शरण सतगुरु की, जीतो दसूँ दुवाराँ ने॥ ५॥

छल बाजी छोड़ो

(६९)

छल बाजी करणीं छोड़ो जी थे मिनख कहावो मोटा।
कपटाइ करणीं छोड़ो जी थे मिनख कहावो मोटा।
सुणो नहीं संताँरी बाणीं लेवो नींद का झोटा जी॥ छल०॥टेर॥
जो कहवे हरि भजन करन की, भाग्य बताओ खोटा।
पोता पोतीनें परणाद्यूँ टाबर रहग्या छोटा जी॥ छल०॥ १॥
लुक छिप करके पाप कमाओ लेवो धरम का ओटा।
इक दिन फूटे घड़ो पाप रो, सिर पर बाजे सोटा जी॥ छल०॥ २॥
औराँने तो मुरख बताओ, आप अकल रा पोटा।
स्वास स्वास में ऊमर घट रहि, पल पल पड़रया टोटाजी॥ छल०॥ ३॥
तोथी बाताँ करो निकम्मी, झूठ गुड़ावो गोटा।
इण लखणाँ सूँ भला न बाजो, बणे नतीजा खोटा॥ छल०॥ ४॥
सतसंगत कर राम नाम का, भरल्यो भीतर कोठा।
अमरापुर में वास करो थे, फेर न आओ ओठा॥ छल०॥ ५॥

(७०)

ममता करे जगतमें प्राणी, रोवतड़ा मर जावे रे।
वे ही भूत प्रेत बणकर के, पाछा जगमें आवे रे॥टेर॥
आयो आज जनम दिन म्हारो, भोला भाई उछब मनावे रे।
ऊमर का दिन घट गया थारा, हरि गुण क्यूँ नहिं गावे रे॥ १ ॥
जोड़ लिया जो समँद जगत में, पल पल छूट्या जावे रे।
सेवा करे आस नहिं राखे, सहज पिंड छुट जावे रे॥ २ ॥
जबरदस्ती सूँ छूट जाय तो, रोणु हि पाँती आवे रे।
जाण बूझ कर मन सूँ छोड़े, तब ही मुकती पावे रे॥ ३ ॥
सदा रामजी अपणा साथी, वाँने जगत भुलावे रे।
दौड़त रात दिवस धन के हित, दौड़तड़ा गुड़जावे रे॥ ४ ॥
अपणा जगमें और न कोई, साँचा संत बतावे रे।
साँचे मन से सरण होय तो, झटपट पार लगावे॥ ५ ॥

मननें चेतावनी

(७१)

मना तनें मान्याँ सरसी रे।
हरि चरणाँ स्यूँ दूर पड़्यो कबलग दुख भरसी रे॥टेर॥
भटकत भटकत जुग बीत्या, कद चेतो करसी रे।
बिना घणीं रे डाँगर ज्यूँ कितना दिन फिरसी रे॥ १ ॥
किताक दिन खर की ज्यूँ जगमें खोटो चरसी रे।
किताक दिन तूँ मन इन्द्र्याँ रो पानी भरसी रे॥ २ ॥
किताक दिन तूँ भाँत भाँत रा, साँगा सजसी रे।
किताक दिन तू हरिने तज भूताँ ने भजसी रे॥ ३ ॥
किताक दिन तूँ पर सम्पति पर दारा तकसी रे।
किताक दिन छुपकर तूँ खुदनें खुद ही ठगसी रे॥ ४ ॥

राम बिमुख थारा धरम करम सब उलटा पड़सी रे।
पुन्य करताँ थारा पाप न खूटे, दिन दिन बढ़सी रे॥ ५॥
उलटो चाल्याँ गाँव न आवे, छेती पड़सी रे।
पूरब ने तूँ छोड़ पश्चिम जाय उतरसी रे॥ ६॥
घर घर भटक्याँ दाँत दिखायाँ, कुण दुख हरसी रे।
सीता पति रो शरणूँ ले ले, भवसूँ तरसी रे॥ ७॥

यो तन जासी

(७२)

यो तन जासी रे, दमड़ाँरा लोभी, तूँ दुख पासी रे॥टेर॥
कूड़ कपट कर माया जोड़े, कौड़ी ना सँग जासी रे।
आपो आप भुगतनी पड़सी, लख चौरासी रे॥ १॥
तूँ तो चिन्ता करे रात दिन, टाबरिया के खासी रे।
दस दिन शोक मनायाँ पीछे मौज उड़ासी रे॥ २॥
खाय खाय नित पेट बिगाड़े, मारे पड़्यो उबासी रे।
काल बली सिर ऊपर नाचे, कररयो हाँसी रे॥ ३॥
लेज्यासी जमदूत क्रोध कर, घाल गले, बिच फांसी रे।
मार टाटड़ी गंजी करसी, कूण छुटासी रे॥ ४॥
हरि-भगती सत्संगत सेवा, जोड़ असल धनरासी रे।
परमेश्वर ही नैया थारी, पार लगासी रे॥ ५॥

सिरपर मौत

(७३)

सिर मौत खड़ी है, सुमिरन तो करल्यो श्री भगवान को॥टेर॥
जैसे शीशी काँच की भाइ, वैसी नर थारी देह।
जतन करन्ता जावसी कोइ, हरि भज लावा लेह रे॥ १॥
सूतो सूतो क्या करे भाइ, सूताँ आवे नींद।
जम्म सिरहाने यूँ खड़ो ज्यूँ तोरण आयो बीन्द रे॥ २॥

माटी कहे कुम्हार कूँ भाई तूँ क्यूँ रूँधे मोय।
एक दिन ऐसो आवसी जब, मैं रूँधूँगी तोय रे॥ ३॥
चलती चाकी देख के रे, दियो कबीरो रोय।
दोय पाटन के बीच में भाई साबत रयो न कोय रे॥ ४॥
संतदास संसार में रे, कइ गूधू कइ डोड।
डूबण को साँसो नहीं रे, नहीं तिरण को कोड रे॥ ५॥
कबिरा नोपत आपणी भाइ, दिन दस लेहु बजाय।
यह पुर पट्टन यह गली कोइ, बहुरि न देखो आय रे॥ ६॥
क्या कहूँ कितनी कहूँ रे, कहा बजाऊँ ढोल।
स्वासा बीती जात है कोइ, तीन लोक रो मोल रे॥ ७॥

जनम सी सोई मरसी

(७४)

जनम लियो वाने मरणो पडसी मौत नगारो सिर कूटे रे।
लाख उपाय करो मन कितना, बिना भजन नहिं छूटे रे॥ टेक॥
जमराजा रो आयो झूलरो, प्राण पलक में छूटे रे।
हिचकी हाल हचीड़ो लागे नाड़ियाँ तड़ातड़ तूटे रे॥ १ ॥
भाई बन्धु कुटुम्ब कबीलो रामजी रुठ्याँ सब रुठे रे।
एक पलक में प्रलय हो जासी, घाल रथी में तन कूटे रे॥ २ ॥
जीवड़ा ने लेय जमड़ा जब चाले, क्रोध कर कर कूटे रे।
गुरजाँरी घमसाण मचावे, तुरत तालवो फूटे रे॥ ३ ॥
जीवड़ा ने जमड़ा नरक में डाले, कीड़ा कागला चूंटे रे।
भुगतेलो जीव भजन बिना भाई, जमड़ा जुगो जुग कूटे रे॥ ४ ॥
थारी चतुरायाँ में धूल पड़ेली करमड़ा काठा थारा फूटे रे।
करमां रो हींण कीचड़ में कलियो, बिना भजन नहिं छूटे रे॥ ५ ॥
राम सुमरि ले सुकरत कर ले, मोह बंधन तब टूटे रे।
कहत कबिर सुख चावे रे जीव तूँ राम नाम धन लूंटे रे॥ ६ ॥

हरि गुण गाओ

(७५)

हरिका गुण गाय ले रे, जोगिया जब लग सुखी शरीर।
पीछें याद न आवसी रे, पींजर व्यापे पीर॥टेर॥
भाग्य बड़ा म्हानें सन्त मिल्यारे, पड़्यो समँदमें सीर।
हंसा होय चुग लीजिये रे, नाम अमोलक हीर॥ १ ॥
अवसर दिन दिन बीत रयो रे ज्यूँ अँजलीको नीर।
फेर न हंसो आवसी रे, मानसरोवर तीर॥ २ ॥
जोबन थकाँ भज लीजिये रे, देर न कीजे बीर।
चाल बुढ़ापो आवसी रे, रहे ना मनमें धीर॥ ३ ॥
सब देवन को देव रामजी, सब पीरन को पीर।
सहजराम भज लीजिये रे, हरि है सुखकी सीर॥ ४ ॥

भजन बिना मुक्ति नहीं

(७६)

भजन बिना मुकती नहिं पासी,
तूँ ले ले हरिको नाम जनम तेरो सुफल होय जासी॥ टेर॥
भाग्य से मिनखाँ देह पाई,
तूँ चेते है तो चेत फेर वा चौरासी आई॥ १ ॥
भजन को लाध गयो मौको,
तूँ चेतो कर सुरज्ञान अन्तमें रह जाय लो धोको॥ २ ॥
छोड़ दे झूठ कपट फन्दा,
तूँ काम क्रोध मद लोभ मोहमें मत होवे अन्धा॥ ३ ॥
समझ ले थोड़ी में सारी,
यो मतलब को संसार राम बिन कोई न हितकारी॥ ४ ॥

गोविन्दजीको स्मरण

(७७)

कर ले कर ले रे गोबिन्दाजीने याद, जिन्होंने थारी देह रची।
कर ले कर ले रे साँवरियाजीने याद, जिन्होंने थारी देह रची॥टेर॥

भाई रे पाणी और पवनरो परकाश, भीतरमें अन्नकी जोत बनी।
भाई रे नखशिख दिया रे बणाय, मुखड़ेरे भीतर जीभ धरी॥ १॥
भाई रे इतनू काईं गरभ्यो रे गींवार, मायारी बाड़ी देख हरी।
भाई रे लाग्या लाग्या पान पान में फूल,
कुम्हलाताँ लागे एक घड़ी॥ २॥
भाई रे ऐरटियो तो चाले बारह मास,
इन्दरकी लागे एक झड़ी।
भाई रे चाले चाले बाल सुबाल,
झोलेकी चाले एक घड़ी॥ ३॥
भाई रे इतनूँ काँईं सूत्यो खूँटी ताँण,
सिरहानें जमकी फौज खड़ी।
भाई रे भैरूँ भाटी माला री अरदास,
आज्यो जी म्हामें भीड़ पड़ी॥ ४॥

बड़ो भाग्य

(७८)

भाग्य बड़ा मिनखा तन पायो, हरि भज अवसर बीते रे॥टेर॥
दिन रजनीं पखवाड़ो बीते, बरष महीनाँ बीते रे।
मिन्ट सेकिन्ड घड़ी पल बीते, आठ पहर यूँ बीते रे॥ १॥
बचपन बीत जवानी बीते, वृद्ध अवस्था बीते रे।
ग्रह नक्षत्र वार तिथि बीते, जोग लगन सब बीते रे॥ २॥
वरषा बीत शरद रितु बीते, ग्रीषम की रितु बीते रे।
होली बीत दिवाली बीते, पल पल ऊमर बीते रे॥ ३॥
बीतत बीतत बीत जायगी, रह जावोगे रीते रे।
फिर कब दाँव लगेगो प्राणी, बाजी क्यूँ नहिं जीते रे॥ ४॥

चोलो बिगड़ जासी

(७९)

मत लेय भजन में ओला, तेरा बिगड़ जायगा चोला॥टेर॥
छोड़ चल्या थाँरा संग साथी घटग्या तेल बुझी ज्यों बाती।
तूँ काईं लिख दी ताम्बा पाती, स्वास जाय अनमोला॥ १ ॥
देखत सारो जगत नशावे, हेला मार सन्त समझावे।
जांण बूझ तूँ होश भुलावे कान हुया क्यूँ बोला॥ २ ॥
रात दिवस खच्चर ज्यूँ दौड़्यो, नातो नहीं हरीसूँ जोड़्यो।
दिन छिपियाँ हो ज्यासी मोड़ो, केश होरया धोला॥ ३ ॥
मास दिवस बीते पखवाड़ो, बरषा बीत बीतरयो जाड़ो।
एक दिन काल मारसी धाड़ो, राम-भजन कर भोला॥ ४ ॥

बटाऊड़ो

(८०)

म्हाँने अबके बचा ले मेरी माय, बटाउड़ो आयो लेवणने॥टेर॥
पाँच कोटड़ी दस दरवाजा, इण मन्दिरिये माँय।
लुकती छिपती मैं फिरूँ रे, किण बिध छोड़े बैरी नाँय॥ १ ॥
हाथ जोड़ कन्या कहे रे, सुण मायड़ मेरी बात।
अबकि बटाउ ने पाछो कर दे, फेर चालूँगी वाँरे साथ॥ २ ॥
हाथ जोड़ बुढ़िया कहे रे, सुणो बटाउ म्हारी बात।
म्हारी कन्या भोली भाली, अबके तो करद्यो गुनाह माफ॥ ३ ॥
सावणरा दिन सतरह बीत्या, आई तीज परभात।
रमण खेलणरी मन में रहगी, गुटियाँ सहेलड़्याँ रे साथ॥ ४ ॥
मात पिता अरु कुटुम कबीलो, फेर्‌यो सिर पर हाथ।
सात भायाँरी बहन लाडली, कोई न चाल्यो वाँरे साथ॥ ५ ॥

पिहरियेमें डेरा

(८१)

सुरता दिन दस पीहरिये में आय बालम ने कैयाँ भूल गई॥टेर॥
सदा सँगाती ना रहे रे पीहरियेरा लोग।
पूरबली पुन्याई सेती, आन मिलायो है संजोग॥ बा० १ ॥

पीहरियो मतलब रो गरजी, स्वारथ रो संसार।
ना कोइ तेरा ना तूँ किसकी, झूठो क्यों कर रही प्यार॥ बा० २॥
गुरु गम गहणूँ पहर सुहागण, सज सोलह सिणगार।
बण ठण कर जब चलो ठाठ से, मिल ज्यासी थारो भरतार॥ बा० ३॥
होय अधीन मिलो प्रीतम से, धरो चरण में शीश।
'बालू' बालम समरथ तेरो, गुनाह करेगो बखशीश॥ बा० ४॥

जगत्-पिताकी विस्मृति

(८२)

जगत-पिता ने भूलग्या रे।
थारा जनम जनमरा साथी रे भाईड़ो।
परमपिताने भूलग्या रे॥ टेर॥
पारस पड़ियो आँगणे रे,
कोई आँधो ठौकर खावे रे भाईड़ो॥ जग० १॥
कस्तूरी मृग पासमें रे,
वो तो घास सूँघतो हाँडेरे भाईड़ो॥ जग० २॥
छणिक विषय-सुख कारणे रे,
वो तो कौटी जनम दुख भोगे रे भाईड़ो॥ जग० ३॥
जलमाहीं प्यासी माछली रे,
ज्याँने सुण सुण अचरज आवे रे भाईड़ो॥ जग० ४॥

जीवण जेवड़ी

(८३)

जीवण जेवड़ी रा सुख दुख आँटा, आयो ऊमर वालो नाको,
रे जिवड़ा दिन दिन होरयो पाको॥ टेर॥
बेटो कहायो बाप कहायो, और कहायो काको।
बाप कहा ले चाहे दादोजी कहा ले, बिगड़े एक दिन खाखो॥ १॥
तरुण भयो जब नारि पुरुष को बंधण जोड़्यो आखो।
घर ग्रस्थी की गाडी लगाय दी, दिन आँथे बेगा हाँको॥ २॥

सुख भोगे जद अकल सराहवे, म्हे ही धिकावाँ धाको।
दुख पावे जद राम के ऊपर, झूठो लगावे लाको॥ ३॥
रूपिया घणाँ कमाकर लावे, बेटो सुपातर म्हाँको।
हाँण हट्याँ मुण्डे नहिं बोले, दरड़े रे माहीं नाखो॥ ४॥
सुख दुख का दोय आँटा खोलो, एक तार कर राखो।
माधो कहे समता में रहकर, राम नाम मुख भाखो॥ ५॥

(८४)

हरि ही म्हारा हीरा पन्ना हरि ही माणक मोती॥टेर॥
हरि ही मालक हरि ही पालक हरि ही घाले रोटी।
और आस सब झूठी जग की हरि की आसा मोटी॥ १॥
हरि का भजन करे सोइ जागे सारी दुनियाँ सोती।
हरि बिन मृतक समान जीव सब हरि ही जीवन जोती॥ २॥
हरि चरचा बिन और जगत की दूजी चरचा खोटी।
हरी भजन बिन सांति नहीं है जतन करो चाहे कोटी॥ ३॥
हरि ही मात पिता गुरु बंधू हरि ही नाती गोती।
ऊठत बैठत जागत सोवत हरि की सुरता होती॥ ४॥

नेकी करो

(८५)

हरि भज हरि भज हरि भज प्रानी, एक दिन पिंजरो पड़जासी।
नेकी करो बदी मत करना, घनी अनीती नहिं आछी॥टेर॥
बागाँ बैठी मालिन बोली, योही बाग मेरो थिर रहसी।
हरि हरि कलियाँ चुन ले हे मालिन, फेर चुनणनें कब आसी॥ १॥
राज्य करन्तो राजा बोले, योही राज्य मेरो थिर रहसी।
न्याय नीति से चालो रे राजा फेर करणनें कब आसी॥ २॥
हाट्या बैठ्यो बनियूँ बोल्यो, याही हाट मेरी थिर रहसी।
पूरो पूरो तोल रे बणियाँ, फेर तोलणनें कब आसी॥ ३॥
वेद पढ़न्तो ब्राह्मण बोल्यो, यो पढ़णूँ मेरो थिर रहसी।
न्याय नीति से बांचो रे पन्डित, फेर बांचणने कब आसी॥ ४॥

क्या ले आयो क्या ले जासी, नेकी बदी तेरे सँग जासी।
रामानन्द का भणे रे कबीरा, खाली हाथाँ उठ जासी॥ ५॥

पशु-समान जीवन

(८६)

रामजी ने मुखाँ न गायो है, हरीजी ने हिये न भायो है।
सो नर पशू समान जिणाँरो बुरो जमारो है॥टेर॥
हाथ से फेरी नहिं माला रे, हाथ से फेरी नहिं माला।
उस नर का वे हाथ कहीजे, बिरछन रा डाला॥ १॥
नैण से निरख्या नहिं नंदा रे, नैण से निरख्या नहिं नन्दा।
उस नरका वे नैण कहीजे, मौर पाँख चन्दा॥ २॥
कान से सुण्या न गुण कैसा रे, कान से सुण्या न गुण कैसा।
उस नर का वे कान कहीजे, कीड़ी बिल जैसा॥ ३॥
पाँव से गयो न गुरु पासा रे, पाँव से गयो न गुरु पासा।
उस नर का वे पाँव कहीजे, लकड़ दोय खासा॥ ४॥
रामजी रो सुमिरन नहिं करता रे, रामजी रो सुमिरन नहिं करता।
'रामदास' वह जीव जगत में, मुरदा सा फिरता॥ ५॥

सतगुरुका हेला

(८७)

राम सुमर ले रे मन गैला, एजी तनें सतगुरु देवे हेला॥ टेर ॥
मोह माया में बिलम रह्यो है, मनमें बण रह्यो छेला।
सुख में तो थारे साथी घणाँ है, दुख में याद करे ला॥ राम० १॥
लोभ मोह की नदी चलत है, तामें फिसल पड़े ला।
भवसागर में बह्यो जात है, आपहि आप अकेला॥ राम० २॥
जैसे पत्र वृक्ष से टूटा, मिलना फेर दुहेला।
क्या जानूँ कहाँ जाय पड़ेगा, लगे पवन का झेला॥ राम० ३॥
जैसे नाव समुद्र के ऊपर, दैव योग भया भेला।
मात पिता सुत कुटुम्ब कबीलो, तीरथ का सा मेला॥ राम० ४॥
सुकरित सौदा कर ले प्राणी, यह तेरे संग चले ला।
भज भगवान महा सुख पावे, माधव होय उजेला॥ राम० ५॥

राम-नामामृत

(८८)

रामजी रो नाम म्हाँने, मीठो घणूँ लागे रे॥टेर॥
रामजी रा मूँग चावल, रामजी री बाजरी।
रामजी रे घरको धन्धो, रामजी री हाजरी॥
रामजी री परसादी सूँ, पाप सारा भागे रे॥ १ ॥
भाई बन्धु टाबर टोली, रामजी रा छोकरा।
माय बाप दादा दादी, रामजी रा डोकरा॥
सगला मिलकर रहवाँ म्हे तो, रामजी रे सागे रे॥ २ ॥
रामजी रा हेली नोहरा, रामजी रा झूँपड़ा।
रामजी रे खेत माहीं, रामजी रा रूँखड़ा॥
रामजी है पीछें म्हारे, रामजी है आगें रे॥ ३ ॥
रामजी रे घरकी पूँजी, रामजी लगावणियाँ।
रामजी रो लेणूँ देणूँ, रामजी चुकावणियाँ॥
शरणागत की चिन्ता सारी, रामजीनें लागे रे॥ ४ ॥
रामजी री लीला गावाँ, रामजी री कीरती।
बोले चाले दीखे सोई, रामजी री मूरती॥
रामजी रा सन्त आयाँ, भाग म्हारा जागे रे॥ ५ ॥

जीभड़ली

(८९)

तर्ज—धमाल

जुलमण जीभड़ली तूँ राम-नामसूँ क्यूँ उकतावे हे।
हात पगाँ सूँ काम कराँ म्हे, भोजन दाँत चबावे हे।
तूँ तो बाइसा मुखमें बैठी, हुकम चलावे हे॥ जु० १ ॥
लपर छपर बढ़-बढ़कर बोले, बिरथा बात बणावे हे।
कर चुगली औराँरे घरमें, फूट घलावे हे॥ जु० २ ॥
सासू बहू जिठाण्या अरु देवराण्यांने झगड़ावे हे।
पिता पुत्र भायाँ-भायाँ में, राड़ करावे हे॥ जु० ३ ॥

झूठ कपट छल पर निन्दा कर, क्यूँ तूँ पाप कमावे हे।
इमरत नाम छोड़ कर प्रभु को, क्यूँ विष खावे हे॥ जु० ४॥
तूँ ले ज्यावे जनम-मरण में, तूँ ही मुकत करावे हे।
भजन कर्‌याँ सूँ अमरलोक में, तूँ पहुँचावे हे॥ जु० ५॥

जीभकी सफलता

(९०)

तेरे हाथों का धन्धा है हजार जीभ्यासे क्या काम करे॥टेर॥
जीभ्या पूछे जीवसे रे क्या क्या करता काम।
मानव जनम वृथा क्यों खोवे, सुमिरन कर हरिका नाम॥ १॥
जीभ्यामें अमरित बसे रे जीभ्या ही में जहर।
जीभ करावे मित्रता रे जीभ करावे है बैर॥ २॥
जीभ्यामें रस भोग है रे, जीभ्या ही में जोग।
जीभ करे आरोग्यता रे, जीभ बढ़ावे है रोग॥ ३॥
सब रस है इस जीभ में रे, झूठा सकल शरीर।
जीभ मिलावे रामसूँ रे, कह गए दास कबीर॥ ४॥

हरीको नाम

(९१)

सुवा भज ले हरिको नाम, नाम से तिर जासी।
सुवा जीवत आवे काम, मर्‌याँ रे थारे सँग जासी॥टेर॥
सुवा कुण थारा माय र बाप, कूण थारो सँग साथी।
भाई धरती हमारी मात, धरम म्हारो सँग साथी॥ १॥
सुवा छोड़्या माय र बाप, छोड़ दिया सँग साथी।
भाई आयो हँस लो एक, अकेलो उड़ जासी॥ २॥
सुवा सत्‌गुरु देवे ज्ञान, कटे जमकी फाँसी।
भाई गावे दास कबीर, जनम थारो रँग जासी॥ ३॥

मीराँबाईजी

प्रार्थना

(९२)

प्रभु सुन लीज्यो बिनती मोरी, मैं शरण गहूँ प्रभु तोरी॥टेर॥
तुम पतित अनेक उधारे, भवसागर पार उतारे।
मैं सबका नाम न जाणूँ, पण कोइ कोइ नाम बखाणूँ॥ १ ॥
अम्बरीष सुदामा नामा, तुम पहुँचाये निज धामा।
प्रह्लाद टेक तुम राखी, सब वेद पुराणाँ साखी॥ २ ॥
ध्रुव पाँच बरषका बाला, तुम दरश दियो गोपाला।
अजामिलसे पापी भारी, तुम नारि अहिल्या तारी॥ ३ ॥
द्रौपदिकी लाज बचाई, पांडवनकी करी सहाई।
तुम गणिका पार लगाई, करमाँकी खिचड़ी खाई॥ ४ ॥
नृप मोरध्वज हरिचन्दा, काट्या सबका दुख फन्दा।
तुम ग्राह हत्यो गज राख्यो, तुम अरजुनको रथ हाँक्यो॥ ५ ॥
तुम धनाका खेत निपाया, बिन बीज अन्न उपजाया।
कुबजा तुमरे रंग भीनी, नरसीकी हुण्डी लीन्ही॥ ६ ॥
सैना सदना रैदासा, तुम सबकी पूरी आशा।
शबरीके फल तुम खाये, तुम साग विदुर घर पाये॥ ७ ॥
रंका बंका बाजिन्दा, नानक दादू-सा बन्दा।
जन तुलसी सूर कबीरा, तुम हरी सकलकी पीरा॥ ८ ॥
रिषि मुनि तुमरो यश गावें, भक्तवत्सल नाम धरावें।
जन मीराकी अब बारी, थे कठे रुक्या गिरधारी॥ ९ ॥

(९३)

मन वृन्दावन चाल बसो रे,
मान घटो चाहे लोग हँसो रे॥टेर॥
गुरु बिन ज्ञान गंगा बिन तीरथ,
एकादशी बिन बरत किसो रे॥ १ ॥

बालूकी भींत अटारी पै चढबो,
ओछेकी प्रीत कटारीको मरबो॥ २॥
मन ना मिल्यो वासूँ मिलबो किसो रे,
प्रीत लगी वासूँ पड़दो किसो रे॥ ३॥
मीराँके प्रभु गिरधरनागर,
नन्द को छबीलो मेरे हिरदे बस्यो रे॥ ४॥

(९४)

थाँरे मुखड़ेरी माया लागी रे मोहन प्यारा
नटवर प्यारा, गिरधर प्यारा॥ टेर॥
मुखड़ो मैं जोयो थाँरो, मनड़ो म्हारो हो गयो न्यारो,
यो जग म्हाने लागे खारो, म्हारी सोई सुरता जागी रे,
मोहन प्यारा, म्हारो मनड़ो भयो बैरागी रे मोहन प्यारा,
नटवर प्यारा गिरधर प्यारा॥ मुखड़ेरी० ॥ १ ॥
संसारीरो सुख झूठो, दुख बणकर आवे पूठो
थे प्रभुजी म्हाँपर टूठो, प्रभु थाँ बिन नहिं निसतारो रे,
मोहन प्यारा स्वारथ रो सब संसारो रे मोहन प्यारा,
गिरधर प्यारा, नटवर प्यारा॥ मुखड़ेरी० ॥ २ ॥
नटवर नागर नन्दलाला, गिरधर गोविन्द गोपाला,
भगताँरा थे रखवाला, म्हारे हिवड़ेरा उजियाला रे,
मोहन प्यारा, मैं जपूँ तिहारी माला रे मोहन प्यारा,
गिरधर प्यारा नटवर प्यारा॥ मुखड़ेरी० ॥ ३ ॥
मीराँ दासी बड़ भागी, थाँरे चरणामें लागी
झूठी जग माया त्यागी, प्रभु थे म्हारा प्राण अधारा रे,
मोहन प्यारा, मोहि एक भरौसा थाँरा रे मोहन प्यारा,
गिरधर प्यारा, नटवर प्यारा॥ मुखड़ेरी० ॥ ४ ॥

(९५)

नहिं भावे थाँरो देसड़लो रँगरुड़ो॥टेर॥
थाँरे देशामें राणा साध नहीं छे, लोग बसे सब कूड़ो॥ १ ॥

गहणाँ गाँठा राणा हम सब त्याग्या, त्याग्यो है हाथाँरो चूड़ो॥ २ ॥
काजल टीकी राणा हम सब त्याग्या, त्याग्यो है बाँधण जूड़ो॥ ३ ॥
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, वर पायो छे म्हे तो रूड़ो॥ ४ ॥

(९६)

रे साँवलिया, साँवलिया, म्हारे आज रंगीली गणगौर छे जी॥टेर॥
काली पीली झुकी बादली, मेघ घटा घनघोर छे जी॥ १ ॥
दादुर मोर पपैया बोले, कोयल कर रही शोर छे जी॥ २ ॥
रात अँधेरी डर म्हाँने लागे, चहुँ दिशि उठरया लोर छे जी॥ ३ ॥
दूरछे नगरियाँ सांकड़ी डगरियाँ बीच में घणाँ ठगचोर छे जी॥ ४ ॥
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर चरणकमल में जोर छे जी॥ ५ ॥

(९७)

मन सौं नाहीं बिसारूँ थाँने हरी।
चितसौं नाहीं उतारूँ थाँने हरी॥टेर॥
आवताँ जावताँ बिच मारगमें मिली अमोलख जड़ी॥ १ ॥
जल जमुना पाणीने जाताँ सिर पर मटकी धरी॥ २ ॥
आवताँ जावताँ बिनराबनमें चरण तुम्हारे पड़ी॥ ३ ॥
मोर मुकुट कुन्डल काननमें मुखपर मुरली धरी॥ ४ ॥
पीत पीताम्बर जरकस जामा करधनि रतनजड़ी॥ ५ ॥
मीराँके प्रभु गिरधर नागर विट्ठल वर नें वरी॥ ६ ॥

(९८)

बाला मैं बैरागण हूँगी।
जिण भेषाँ म्हारो सायब रीझे, सोई भेष धरूँगी॥टेर॥
शील संतोष धरूँ घट भीतर समता पकड़ रहूँगी।
जाको नाम निरंजन कहिये, ताको ध्यान धरूँगी॥ १ ॥
गुरु के ज्ञान रँगूँ तन कपड़ा मन मुदरा पहनूँगी।
प्रेम प्रीतिसौं हरि गुण गावूँ चरणन लिपट रहूँगी॥ २ ॥
या तनकी मैं करूँ कींगरी, रसना नाम गहूँगी।
मीराँके प्रभु गिरधरनागर, साधाँ संग रहूँगी॥ ३ ॥

(९९)

रमैया बिन यो जिवड़ो दुख पावे।
कहो कुण धीर बँधावे॥ रमैया०॥ टेर॥
यो संसार कुबधरो भाँडो, साध सँगत नहिं भावे।
रामनामकी निन्दा ठाणे, करम हीं करम कमावे॥ १॥
राम नाम बिन मुकति न पावे, फिर चौरासी आवे।
भव-भव माहीं फिरे भटकतो, जमपुर बाँध्यो जावे॥ २॥
सत संगतिमें कबहुँ न जावे, मूरख जनम गमावे।
मीराँ प्रभु गिरधरके शरणे, आय परमसुख पावे॥ ३॥

(१००)

बोल सूवा राम राम, बलि बलि जाऊँ रे॥ टेर॥
सोने केरी तार सूवा, पींजरो बणाऊँ रे,
पींजरे रे मोतीडाँरी, झालरी लगाऊँ रे॥ १॥
घिरत मिठाई मेवा, लापसी जिमाऊँ रे,
आँवलेरो रस तन्नें, घोल घोल पावूँ रे॥ २॥
चम्पा केरी डाल सूवा, हिंडोलो धलाऊँ रे,
हिंडोले बिठाके तोहे, हातसूँ झुलाऊँ रे॥ ३॥
पगल्याँ रे माहीं थारे, पैंजण्याँ पहनाऊँ रे,
मीराँ प्रभु गिरधर के शरणे, आयाँ सुख पावूँ रे॥ ४॥

(१०१)

बोल मती बोल मती बोल मती रे,
हरि-नाम छोड़ दूजो नाम बोल मती रे॥ टेर॥
कन्द मिसरीरे स्वादने तजकर, नीमड़ेरो कड़वो रस घोल मती रे,
भाई तूमड़ेरो कड़वो रस घोल मती रे॥ १॥
हीरा मोती माणक तज कर, रतनाँ रे साथे चिरमी तोल मती रे॥ २॥
चान्द सूरजरे तेजने तजकर, जुगनूरे साथे प्रीति जोड़ मती रे॥ ३॥
मीराँ के प्रभु गिरधर भजताँ, मनड़ा सैलानी म्हारा डोल मती रे॥ ४॥

(१०२)

आवोने पधारो जोशी आँगणियें विराजो,
खोल दिखावो थाँरी पोथी जी॥ टेर॥
सोना रूपा रो थानें पाटड़लो बिछाऊँ,
हीरा जड़ाऊँ थाँरी पोथी जी॥ १॥
खीर खाँडरा भोजन जिमाऊँ,
नूत जिमाऊँ थाँरा गोती जी॥ २॥
जरि कुँजरीरा बस्तर सिंवाऊँ,
दिखणाँ दिराऊँ थाँने मोती जी॥ ३॥
मीराँके प्रभु गिरधर नागर,
राम मिलन कब होसी जी॥ ४॥

(१०३)

मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई॥टेर॥
जाके सिर मौर मुकुट मेरो पति सोई।
तात मात भ्रात बंधु आपणू न कोई॥ १॥
छाँड़ दई कुल की काण कहा करैगो कोई।
संतन ढ़िग बैठि बैठि लोक लाज खोई॥ २॥
चूनड़ी के टूक किये ओढ़ लीन्ही लोई।
मोती मूँगे उतार तुलसि माल पोई॥ ३॥
अँसुवन जल सींच सींच प्रेम बेलि बोई।
अब तो वेलि फैल गई आनँद फल होई॥ ४॥
दूध की मथनियाँ मैं प्रेमसे बिलोई।
माखन माखन काढ़ लीन्हो छाछ पीवो कोई॥ ५॥
भगत देख राजी हुई जगत देख रोई।
मीरा के गिरधर प्रभु तारो अब मोही॥ ६॥

(१०४)

कब आवोला साँवरिया म्हारे द्वार,
ऊभी जोऊँ बाटड़ली॥ टेर॥

मन मंदिरमें ग्यान बुहारी, देलीनी भरपूर।
पापको कचरो सोर बगायो, कर दीनो छे दूर॥
धोयो आँगणिये ने आँसूड़ा बहाय॥ १ ॥
पलकाँपर पग मेलता प्रभु आज्यो हिवड़े बीच।
दरसण करस्याँ भोग लगास्याँ दोन्यू आँख्याँ मीच॥
थाँरी खूब करूँगी मनुहार॥ २ ॥
हिवड़े के सिंघासन ऊपर ध्यान बिछायो चीर।
सूनो आसन देखकर छूटेछे म्हारो धीर॥
थाँरो चोखोसो करूँगी सिणगार॥ ३ ॥
भोली सूरत साँवरी जी घूँघर वाला केस।
जादूगारी बाँसुरी जी नटवर थाँरो भेष॥
बेगा आवो जी ग्वालाँरा सिरदार॥ ४ ॥
मैं छूँ दासी आपकी जी राधा मेरो नाम।
रोम रोम थाँरे अरपण है जी सुन लीज्यो घनश्याम॥
बेगा आवो जी मीराँरा भरतार॥ ५ ॥

(१०५)

थाँरी साँवरी सूरत वालो भेष, बंशीवाला आज्यो म्हारे देश॥टेर॥
आवन सावन कह गया जी कर गया कौल अनेक।
गिणताँ गिणताँ घस गई म्हारी आँगलियाँ री रेख॥ १॥
कागज नाहीं स्याही नाहीं लेखन नहिं इण देश।
पंछीको परवेस नहीं मैं तो किणबिध लिखूँ संदेश॥ २॥
साँवरे ने ढूँढण मैं गई जी कर जोगन को भेष।
ढूँढत ढूँढत जुग गया म्हारा धोला हो गया केश॥ ३॥
मोर मुकुट कटि काछनी जी घूँघर वाला केश।
मीराँ ने गिरधर मिल्या जी कर नटवर को भेष॥ ४॥

(१०६)

राणाँजी म्हाँने या बदनामी लागे मीठी॥टेर॥
थाँरे शहरको राणा लोग निमाणों, बात करेछे अणदीठी॥ १॥

हरि मंदिर को नेम है म्हारो, दुरजन लोगाँ म्हाँने दीठी॥ २॥
सास नणद म्हारी दोराणी जिठाणी, जल बल हो गइ अँगीठी॥ ३॥
थाँरो साँवरियो मीराँ म्हाँने बताओ, नहिं तो प्रीत थाँरी झूठी॥ ४॥
म्हारो साँवरियो राणा घट घट व्यापक, थाँरे हिये री काईं फूटी॥ ५॥
साँकड़ी सेर्‍याँमें म्हारा सतगुरु मिलिया, किण बिध फिरूँ मैं अपूठी॥ ६॥
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, चढ़ गयो चोल मजीठी॥ ७॥

(१०७)

हे री मैं तो राम दिवानी मेरो दरद न जाने कोय।
दरद की मारी बन बन डोलूँ बैद मिल्यो नहिं कोय॥
सूली ऊपर सेज हमारी सोवणा किस बिध होय॥
गगन मँडल में सेज पिया की मिलणा किस बिध होय॥
घायल की गति घायल जाणे के जिण घायल होय॥
जोंहरी की गति जोंहरी जाणे के जिण जोंहरी होय॥
दरद की मारी बन बन डोलूँ बैद मिल्यो नहिं कोय॥
मीरा की प्रभु पीड़ मिटेगी, बैद साँवलियो होय॥

(१०८)

स्याम मने चाकर राखो जी।
चाकर रहसूँ बाग लगासूँ नित उठ दरसण पासूँ।
वृन्दावन की कुंज गलिन में, थाँरी लीला गासूँ॥ १॥
चाकरी में दरसण पाऊँ सुमिरण पाऊँ खरची।
भाव भक्ति जागीरी पाऊँ तीनूं बातां सरसी॥ २॥
मोर मुकुट पीताम्बर सोहे गल वैजन्ती माला।
वृन्दावन में धेनु चरावे मोहन मुरलीवाला॥ ३॥
हरा हरा नित बाग लगाऊँ बिच बिच राखूँ क्यारी।
साँवरिया का दरसण पाऊँ पहर कसूमल सारी॥ ४॥
जोगी आया जोग करण कूँ तप करणें संन्यासी।
हरी भजन कूँ साधू आया वृन्दावन के बासी॥ ५॥
मीरा के प्रभु गहिर गँभीरा सदा रहो जी धीरा।
आधी रात प्रभु दरसण दीन्हे प्रेम नदी के तीरा॥ ६॥

(१०९)

नातो नाम को जी म्हाँसूँ तनक न तोड़्यो जाय॥टेर॥
पाना ज्यूँ पीली पड़ी रे लोग कहे पिंड रोग।
छानें लाँघण म्हे किया रे राम मिलन के जोग॥ १ ॥
बाबल बैद बुलाइया रे पकड़ दिखाइ म्हारी बाँह।
मूरख बैद मरम नहिं जाणे कसक कलेजे माहँ॥ २ ॥
जा बैदा घर आपणे रे म्हारो नाम न लेय।
मैं तो दाझी बिरह की रे क्यूँ तूँ दारू देय॥ ३ ॥
माँस गल गल छीजिया रे करक रया गल आहि।
आँगलियाँ री मूँदड़ी म्हारे आवण लागी बाँहि॥ ४ ॥
रह रह पापी पपीहरा रे पिव को नाम न लेय।
जे कोइ बिरहण सामले तो पिव कारण जिव देय॥ ५ ॥
खिण मंदिर खिण आँगणे रे खिण खिण ठाड़ी होय।
घायल ज्यूँ घूमू फिरूँ म्हारी बिद्या न बूझे कोय॥ ६ ॥
काढ़ कलेजो मैं धरूँ रे कागा तूँ ले जाय।
ज्याँ देसाँ म्हारो पिव बसे रे वाँ देख्याँ तूँ खाय॥ ७ ॥
म्हारे नातो नाम को रे और न नातो कोय।
मीरा व्याकुल बिरहणी प्रभु दरसण दीजो मोय॥ ८ ॥

(११०)

मंदिर जाती मीरा ने साँवरियो मिल गयो रे,
मोहन जादू कर गयो रे॥टेर॥
राणू मीरा ने बतलावे, के होग्यो थारे क्यूँ न बतावे।
फीका पड़ ग्या नैण फरक बोली में पड़ गयो रे॥ १ ॥
राणू मीरा ने समझावे, बड़ा घरा की बात बतावे।
कुल के लागे दाग पती जीवत ड़ो मर गयो रे॥ २ ॥
मन मोहन है पती हमारो सारे जगको है रखवारो।
कहता राधेश्याम मीरा ने मोहन मिल गयो रे॥ ३ ॥

मीराँजीने समझावणी

(१११)

थाँने बरज-बरज मैं हारी, भावज मानो बात हमारी ॥टेर॥
मीराँजी थे चलो महल में, थाँने सौगन म्हारी।
कुल बहु राज घरानें की थे, आ काईं बात बिचारी ॥ १ ॥
राणों रोष कियो थाँ ऊपर, साधाँ मे मत जारी।
कुल के दाग लगे छे भाभी, निन्दा होत अपारी ॥ २ ॥
साधाँ रे सँग बन-बन भटको, लाज गमावो सारी।
बड़ा घराँ में जनम लिया थे, नाचो दे-दे तारी ॥ ३ ॥
वर पायो हिंदवाणों सूरज, थे काँईं मनधारी।
भाभी मीराँ साध-संग तज चलो हमारी लारी ॥ ४ ॥

मीराँजीको उत्तर

(११२)

उदाँबाई समझो सुघड़ सयानी, जगमें बात नहीं अब छानी ॥टेर॥
साधू मात-पिता कुल मेरे, सजन सनेही ज्ञानी।
सन्त-चरण को लियो आसरो, साँच कहूँ यह बानी ॥ १ ॥
राणाँ ने समझावो जावो, मैं तो बात न मानी।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, सन्ताँ हाथ बिकानी ॥ २ ॥

निर्भयता

(११३)

म्हारे सिरपर सालिगराम राणोंजी म्हारो काईं करसी।
म्हारे सिरपै साँवरिया रो हाथ,
राणोंजी म्हारो काईं करसी ॥टेर॥
राणूँ मीराँ ने यूँ कहे रे, सुण मीराँ म्हारी बात।
साधाँ री संगत छोड़ दे हे थाँरी सखियाँ सब सकुचात ॥ १ ॥
मीराँ राणाँ ने यूँ कहे रे, सुण राणाँ म्हारी बात।
साधू तो माई बाप म्हारे, सखियाँ क्यूँ घबरात ॥ २ ॥

जहर को प्यालो भेजियो रे, दी ज्यो मीराँ रे हाथ।
कर चरणाँमृत पी गई मैं तो, भली करे दीनानाथ॥ ३॥
प्यालो तो मीराँ पी गई रे, बोली दोउ कर जोर।
थे तो मारण की करी म्हाँने राखण वालो है और॥ ४॥
राणूजी टांडो लादियो रे, हरिजी सूँ नायँ पिछाण।
कुल तारण मीराँ एकली रे, चाली तीरथ न्हाण॥ ५॥

उत्कण्ठा

(११४)

नींदड़ली नहिं आवे सारी रात।
अब किण बिध हो परभात॥ टेर॥
सपने माहिं श्याम संग फूली, जागत चमक उठी सुध भूली।
(अब) चन्द्रकला न सोहात॥ १॥
तड़फ-तड़फ जिव जाय हमारो, पड़त न दृष्टी प्राण पियारो।
(म्हारी) सुध ल्यो दीनानाथ॥ २॥
कुण्ठित बुद्धि भई अब म्हारी, थाँ बिन म्हारा श्याम बिहारी।
(अब) लखे है कुण म्हारी बात॥ ३॥
'मीराँ' कहे बीति सोइ जाने, मन हठि पड्यो सीख नहिं माने।
(अब) मरण जीवन हरि-हाथ॥ ४॥

विरह

(११५)

मैं जान्यो नाहीं हरि से मिलन कैसे होय॥टेर॥
आये मेरे सजना फिर गये अँगना, मैं अभागण रही सोय॥ १॥
फाड़ूँगी चीर करूँ गल कन्था, रहूँगी बैरागण होय॥ २॥
चुड़ियाँ फोड़ूँ माँग बखेरूँ, कजरा ने डारूँगी धोय॥ ३॥
निसि बासर मोहि बिरहा सतावे, कल ना पड़त पल मोय॥ ४॥
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, मिल बिछुड़ो मति कोय॥ ५॥

(११६)

माई मैं तो लीन्हो गोबिन्दो मोल,
कोई कहे ओले कोई कहे छांने, लीन्हो बाजन्ताँ ढोल॥ १॥
कोई कहे मँहगो कोई कहे सस्तो, लीन्हो प्रेम के मोल॥ २॥
कोई कहे कालो, कोई कहे गोरो, लीन्हो घूँघट पट खोल॥ ३॥
कोई कहे घरमें कोई कहे बनमें, राधाके संग किलोल॥ ४॥
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, पुरब जनमरो कोल॥ ५॥

मीराँजीकी टेक

(११७)

राणाँजी म्हारी रेख पूरबली म्हे काईं कराँ।
राणाँ जी म्हारी प्रीत पूरबली म्हे काईं कराँ॥टेर॥
राम बिना नहीं आवड़े म्हारो हिवड़ो झोका खाय।
भोजनियाँ नहि भावे हो म्हाँने नींदड़ली नहिं आय॥ १॥
विषका प्याला भेजिया थे, ले जाओ मीराँ रे पास॥ बेगा........
कर चरणाँमृत पी गई रे, गोबिन्द रे बिसवास॥ म्हारे० २॥
राठौडाँ री डीकरी रे आई सिसोद्याँ री पोल॥ राणाँ........
थाँरी मारी ना मरूँ रे राखण वालो है और॥ म्हारो० ३॥
पेट्याँ बासक भेजियो रे, कह फुलड़ाँ रो हार म्हाँने.......
खोल पिटारी देखियो जब, महलाँ भयो उजियार॥ म्हारे० ४॥
मैं तो दीवानी राम की रे, थाँरो म्हारो काँईं साथ॥ कोई........
ले जाती बैकुन्ठ में रे, नेक न मानी बात॥ म्हारी० ५॥
मैं तो प्रभु चरणाँ री दासी, प्रभु गरीब निवाज॥ म्हारा.......
जन मीराँ की राखज्यो हरि, बाँह गहे की लाज॥ राखो० ६॥

नित्य-साथी

(११८)

म्हारे जनम मरण रा साथी, थाँने नहिं बिसरूँ दिन राती॥टेर॥
थाँ देख्याँ बिन कल ना पड़त है, जाणत मेरी छाती।
ऊँची चढ़ चढ़ पन्थ निहारूँ, रोय रोय अँखियाँ राती॥ १॥

यो संसार सकल जग झूठो, झूठा कुल रा नाती।
दोउ कर जोड़्याँ अरज करूँ छूँ, सुन लीज्यो मेरी बाती॥ २॥
ओ मन मेरो बड़ो हरामी, ज्यों मद मातो हाथी।
सतगुरु हाथ धर्‍यो सिर ऊपर, अंकुस दे समझाती॥ ३॥
पल पल प्रभु को रूप निहारूँ निरख निरख सुख पाती।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, चरण कमल रँग राती॥ ४॥

कृष्ण-दर्शन-लालसा

(११९)

कुंजन वन छाँडी रे माधो, मेरी कौन गुनाह तकसीर॥टेर॥
जो मैं होती जल की मछलियाँ, तुम करते असनान,
चरण छुहि लेती रे माधो॥ १॥
जो मैं होती बन की कोयलियाँ, गैया चरावन जात,
बोल सुख देती रे माधो॥ २॥
जो मैं होती मौर की पंखियाँ, तुम करते शृंगार,
मुकुट चढ़ रहती रे माधो॥ ३॥
जो मैं होती बाँस बाँसुरियाँ, करती मुख पर वास,
अधर रस पीती रे माधो॥ ४॥
जो तुम चाहो मिलन हमारो, मीराँ के घनश्याम,
दरस बिन ब्याकुल रे माधो॥ ५॥

कृष्ण-दर्शन

(१२०)

आज मैं देख्या गिरधारी,
कौटिक मदन बदन की शोभा, चितवन अनियारी॥
बजावत बन्शी कुंजन में,
गावत ताल तरंग रंग धुनि, नाचत ग्वालन में॥
माधुरी मूरति वह प्यारी,
बसी रहे दिन रात हिये बिच टरत नहीं टारी॥

श्याम पर तन मन है वारी,
वह मोहनी मूरत निरखत ही सब लोक लाज डारी॥
तुलसि वन कुंजन संचारी,
गिरधरलाल नवल नट नागर, मीराँ बलिहारी॥

बड़े घर मैं सम्बन्ध

(१२१)

बड़े घर ताली लागी रे, मना थारी ऊणत भागी रे॥टेर॥
ताली लागी नामसूँ रे, पड़ियो समँद में सीर।
मीठा मेवा त्याग के म्हारे, कुण पीवे कड़वो नीर॥ १ ॥
छीलरिये न्हाऊँ नहीं रे, समँदरिये कुण जाय।
न्हासाँ गंगा गोमती, म्हारे पाप सरीराँ रा जाय॥ २ ॥
काँच कथिर बिणजूँ नहीं रे, लोहा मरे कुण भार।
सोना रुपा सूँ काम नहीं रे, म्हारे हीराँ रो बोपार॥ ३ ॥
हाली-माली जाचूँ नहीं रे, ना जाचूँ सिरदार।
कामदाराँ सूँ काम नहीं रे, मैं तो जाय मिलूँ दरबार॥ ४ ॥
पींपा ने प्रभु परचो दीन्हो, दीन्हा खजाना पूर।
'मीरा' के प्रभु गिरधर नागर, धणीं म्हाँने मिलिया हजूर॥ ५ ॥

हरि-संग

(१२२)

मीराँ लाग्यो रंग हरी, और रंग सब अटक परी॥टेर॥
गिरधर गास्याँ सती न होस्याँ, मन बसिया बहुनामी।
जेठ बहू को नातो नाहीं, हम सेवक तुम स्वामी॥ १ ॥
चुड़लो म्हारे कण्ठी माला, साँच सील सिणगारो।
और कछू नहिं भावे हो म्हाँने, ओ गुरु-ज्ञान हमारो॥ २ ॥
कोई निन्दो कोई बन्दो, म्हे गोविन्द गुण गास्याँ।
जिण मारग म्हारा राम पधार्‌या, उण मारग म्हे जास्याँ॥ ३ ॥

चोरी न करस्याँ जीव न सतास्याँ के करसी म्हारो कोई।
गज सूँ उतर म्हे खर नहिं चढ़स्याँ, उलटी बात न होई॥ ४॥
गिरधर धणीं कुटुम्बी गिरधर, मात-पिता सुत भाई।
थे थाँ रे म्हे म्हारे हो राणाँ, गावे मीराँबाई॥ ५॥

जूनो देवल

(१२३)

जूनो हुयो रे देवल जूनो हुयो।
म्हारो हँसलो तो नान्हों देवल जूनो हुयो॥ टेर॥
आ रे काया रे हँसला डोलन लागी रे।
पड़ गया दाँत माँयलो साँचो रयो॥ म्हा० १॥
थाँरे तो म्हारे हंसा प्रीत पुराणी रे।
एकलड़ी छोड़ म्हाँने उड़ क्यूँ गयो॥ म्हा० २॥
बाई मीराँ के प्रभु गिरधर नागर
प्रेम को प्यालो प्रभुजी प्याऊँ पीवो॥ म्हा० ३॥

राम-नाम लेनेमें लज्जा

(१२४)

लोकड़ियाँ तो लाज मरेछे लेताँ हरिको नाम रे।
हरि मन्दिर जाताँ पग दूखे, भटके आखो गाम रे॥टेर॥
परमारथ में पाँव धरे तो, आवे बड़ी थकान रे।
राड़ झगड़ मैं दौड़्या जावे, तज सगला घर काम रे॥ १॥
भाँड भँडैया गणिका नाचे, वहाँ जागे चहुँ जाम रे।
हरि चरचा में आलस लागे, आवे नींद निकाम रे॥ २॥
जगत कथा क्यूँ मीठी लागे, भगत कथा क्यूँ खारी रे।
हरि बिन तेरो कूण सहाई, ज्याँ दिन मचसी ध्यारी रे॥ ३॥
सगो सनेही एक साँवरो, अबिनाशी हरि राम रे।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, चरण कँवल सुख धाम रे॥ ४॥

हरि-दर्शन-लालसा

(१२५)

आओ पधारो म्हारा साँवरिया, मीराँ भई रे बावरिया॥ टेर॥
मनड़े रो मोर थाँरा दरशण खातर तरसे रे,
आँखड़ियाँ रा आँसू सावण भादवा ज्यूँ बरसे रे
टप्प टप्प पलकाँ सूँ जल भरिया॥ १॥
घरका तो लोग मनें बावली बतावे रे,
सँग री सहेल्याँ म्हाँ पर आँगली उठावे रे,
हाँसी ऊड़ावे सारा टाबरिया॥ २॥
सारा सुख छोड्या मैं तो मोहन थाँरे कारणैं,
भगवाँ सा भेष धार्‌या आई थाँरे बारणें,
छोड्या पीहर ओर सासरिया॥ ३॥
चाहे जिनतों कष्ट देवे चाहे ज्यूँ परख ले,
तूँ है म्हारो एक बात गाँठ बाँध रख ले,
तूँ है मोहन मैं हूँ मोहनियाँ॥ ४॥

मीराँजीकी प्रार्थना

(१२६)

साँवरिया अरज मीरा की सुण रे।
मैं नुगरी म्हारो सुगरो साँवरियो अवगुण गारी रो कुण रे॥टेर॥
राणा विष का प्याला भेज्या चरणाँमृत रो प्रण रे।
तारण वारो म्हारो श्याम धणी है मारण वारो कुण रे॥ १॥
निसदिन बैठी पंथ निहारूँ व्याकुल भयो म्हारो मन रे।
म्हारे तो मन में ऐसी आवे जाय बसूँ माधोवन रे॥ २॥
निसदिन मोहे बिरह सतावे लकड़ी में लाग्यो घुण रे।
जैसे जल बिनु मछली तड़फे ऐसे ही म्हारो मन रे॥ ३॥
राम सभा म्हारो स्याम विराजे जा पै वारूँ तन मन रे।
मीरा कूँ प्रभु गिरधर मिलिया औराँ ने ध्यावे कुण रे॥ ४॥

(१२७)

पिया बिनु सूनो छे म्हारो देस॥टेर॥
ऐसो है कोइ पीव मिलावे, तन मन वारौं सेस॥ १ ॥
तुमरे कारन बन बन डोलूँ, कर जोगन को भेस॥ २ ॥
प्रीतम प्यारा दरस दिखाओ, तुम बिनु बहुत कलेस॥ ३ ॥
अवधी बीती अजहुँ न आये, रूपा हो गया केस॥ ४ ॥
'मीराँ' के प्रभु कब रे मिलोगे, तज दियो नगर नरेस॥ ५ ॥

(१२८)

नाड़ी ना जाने बेद निपट अनाड़ी है॥टेर॥
पीली पीली पान जैसी, पलँग पोढ़ाई एसी।
तुम घर जाओ बेदा, मेरे रोग भारी है॥ १ ॥
पीर तो कलेजे माहीं, मूरख टटोले बाहीं।
जबसे सिधारे श्याम, बिरह बान मारी है॥ २ ॥
जड़ी सब झूठी भई, कारी ना लागे कोई।
द्वारिका में बसे बेद, जासों मेरी यारी है॥ ३ ॥
'मीराँ' को जिवाई चाहो, श्याम तुम बेगा आवो।
रोग को कटैयो एक, कुंज को बिहारी है॥ ४ ॥

(१२९)

झुक आइ रे बदरियाँ सावन की। सावन की मन भावन की॥टेर॥
सावन में उमग्यो मेरो मनवा, भनक पड़ी हरि आवन की॥ १ ॥
नान्ही नान्ही बूँदन मेहरा बरसे, दामिनि दमके झर लावन की॥ २ ॥
दादुर मौर पपिहरा बोले, कोयल सबद सुनावन की॥ ३ ॥
'मीराँ' के प्रभु गिरधर नागर आनँद मंगल गावन की॥ ४ ॥

(१३०)

तुम सुनो हो दयाल म्हारी अरजी॥टेर॥
भव सागर में बही जात हूँ काढ़ो तो थाँरी मरजी॥ १ ॥
यो संसार सगो नहिं कोई साँचा सगा रघुवरजी॥ २ ॥

मात पिता अरु कुटुम कबीलो मतलब का सब गरजी॥ ३॥
मीरा की प्रभु अरजी सुनलो चरन लगाओ थाँरी मरजी॥ ४॥

(१३१)

हमरौ प्रनाम श्री बाँके बिहारी को॥ टेर॥
मोर मुकुट माथे तिलक विराजै, कुण्डल अलकन्ह कारी को॥ १॥
अधर मधुर सुर बंसी बजावे, रीझे रीझावे राधा प्यारी को॥ २॥
कटि पिताम्बर किंकिनि सोभित, जामो बन्यो जरि तारी को॥ ३॥
यह छबि निरखि मगन भइ 'मीराँ' मोहन गिरिवर धारीको॥ ४॥

काशी-विश्वनाथ

(१३२)

शिव के मन भाय रही काशी, शिव के मन॥ टेर॥
आधी काशी ब्राह्मण बनियाँ, आधी काशी संन्यासी।
काह करन को ब्राह्मण बनियाँ, काह करन को संन्यासी।
नेम धरम को ब्राह्मण बनियाँ, तप करने को संन्यासी।
कोन शिखर पर गौरि विराजे, कौन शिखर पर अविनाशी।
उत्तर शिखर पर गौरि विराजे, दक्षिण शिखर पर अविनाशी।
'मीरा' के प्रभु गिरधर नागर, हरि के चरण की मैं दासी।

प्रहलादजीकी पढ़ाई

(१३३)

म्हारा बाला! भव-सागर तरबो सहज छे॥ टेर॥
बोलो एक! एक! एक! सब घट महँ प्रभु को देख॥ म्हारा०॥
बोलो दोय! दोय! दोय! हरि बिना न दूजो कोय॥ म्हारा०॥
बोलो तीन! तीन! तीन! हो राम-भजन में लीन॥ म्हारा०॥
बोलो चार! चार! चार! हरि भजे सो उतरे पार॥ म्हारा०॥
बोलो पाँच! पाँच! पाँच! हरि भज्याँ न लागे आँच॥ म्हारा०॥
बोलो छै! छै! छै! तूँ गोविन्द, गोविन्द, कह॥ म्हारा०॥
बोलो सात! सात! सात! तज हरि बिन दूजी बात॥ म्हारा०॥
बोलो आठ! आठ! आठ! कर गीताजी को पाठ॥ म्हारा०॥

बोलो नौय! नौय! नौय! सब हरि की लीला होय॥ म्हारा०॥
बोलो दस! दस! दस! है हरी ही इक रस॥ म्हारा०॥

करमाँ बाइ रो खीच

(१३४)

थोड़ो आरोगो जी मदन गोपाल करमाँ बाई रो खीचड़लो॥ टेर॥
प्रभु जी थाँरो प्रेम पुजारी, गयो तीरथाँ न्हाण।
जातो-जातो दे गयो म्हाँने, सेवा री भोलाण।
जद मैं आई थाँरे मंदिरिये में चाल॥ १॥
मैं हूँ दीन अनाथणी जी, नहिं जाणूँ पूजा-फन्द।
नयो नवादो झेलियो ओ, धन्धो गोकुलचन्द।
तूँ ही राखणियूँ भगताँ री बाजी भाल॥ २॥
नहिं कर जानूँ षटरस भोजन, खाटा सूँ अनुराग।
रूखो-सूखो राम-खीचड़ो, ग्वाँर फली रो साग।
मीठो दही ल्याई बाटकिये में घाल॥ ३॥
रूठ्या क्यूँ बैठ्या जी राधा, रुकमण जी रा श्याम।
भूखाँ मरताँ बणे न सौदो मास-दिवस रो काम।
थांरा भूखां रा चिपजासी बाला गाल॥ ४॥
समझ गई सरमा गये ठाकुर, लखि गये नई नुवाद।
धाबलिये रो पड़दो कीन्हो, प्रगट लियो परसाद।
हरख्यो हिवड़ा में मन लहरी मोती लाल॥ ५॥

बातड़ियाँ

(१३५)

बातड़ियाँ जी बातड़ियाँ,
म्हारा सत्गुरू कही म्हाँने बातड़ियाँ॥टेर॥
मिनखा जनम पदारथ पायो, सोय न सारी रातड़ियाँ।
छिनमें छूट जाय तन तेरो, फेर न आवे हाथड़ियाँ॥ १॥
जब लग हंस बसे काया में, हिल मिल होय सब साथड़ियाँ।
मनवो फिरे मिरग ज्यों भूल्यो, काल करे सिर घातड़ियाँ॥ २॥

मात पिता तिरिया सुत बन्धु, और कड़ूमो जातड़ियाँ।
अन्तकाल में कोई नहिं तेरो, जम कूटेला लातड़ियाँ॥ ३॥
शेष महेश सन्त सनकादिक, वेद पुराणाँ में गातड़ियाँ।
'जन जीया' भज राम सनेही, कर सतगुराँ जी री साथड़ियाँ॥ ४॥

परीक्षा

(१३६)

पारखी देख शकल पहिचान,
चेलो देख गुरु परखीजे, भगत देख भगवान॥ टेर॥
पत्ता देख पेड़ परखीजे, कपड़ो देख्याँ थान।
प्रजा देख राजा परखीजे, भूख देख जलपान॥
लीक देख सोनू परखीजे, गावत परखे ताँन।
नैणाँ देख नेह परखीजे, बोल्याँ बचन जबान॥
तपत देख सूरज परखीजे, शबद सुण्या असमान।
गन्ध देख धरणी परखीजे, वस्तु देख्याँ खाँन॥
पुत्र देख मायत परखीजे, देख बानगी धाँन।
जगत देख जगदीश परखले, धार हिये बिच ज्ञान॥

श्रीगोविन्ददेवजीसे प्रार्थना

(१३७)

म्हारा गोविन्द देव, थाँने भूल्याँ नहीं सरे।
म्हारा गोविन्द देव, थाँ बिन म्हाँ रे नहीं सरे॥टेर॥
जयपुर माहीं रया विराज, भगत उड़ीके दरशण काज।
मन्दिर माहीं उमड़े लोग, खूब लगावे लडुवन भोग॥ १॥
दरशन कर परिकम्मा देत, म्हाँसूँ घणों आप को हेत।
भारत भूमी राजस्थान, नर तन दियो म्हाँने अपनो जान॥ २॥
सत पुरूषाँ सूँ दिया मिलाय, जम की फाँसी दई छुटाय।
श्रीमुख प्रगट्या गीता ग्यान, सब कोई कर लो कल्याण॥ ३॥
दोउ कर जोड़ नवाऊँ सीस, भगती माँगूँ बिसवा बीस।
जिन्ह भगती सूँ प्रगटो आप, वाही भगती द्यो माँ बाप॥ ४॥

(१३८)

हे जगन्नाथ भगवान कष्ट हरो म्हारो।
जल भीतर पकड़्यो ग्राह आज गज हार्‌यो॥टेर॥
इक अर्ध रैणके समयमें कुंजर तिसायो।
दस हजार हथनी ले सरवर पर आयो॥
हथनी सब बाहर खड़ी भीतर गज धायो।
तब ग्राह बली ने अपनो जोर चलायो॥
जब खेंच लियो मझधार चले नहिं सारो॥ जल०॥ १॥
हथनी सब बाहर खड़ी वे बहुत पुकारी।
जलमें जाकर गजराज जुद्ध कियो भारी॥
वाके लिखी भाग्यमें विपति टरे नहिं टारी।
देखो दुखमाहीं त्रिया पतीसे न्यारी॥
हे दीनबंधु हरि आवो बेगि उबारो॥ जल०॥ २॥
जब सुणी भगतकी टेर झिझक हरि जागे।
लक्ष्मीजी जोड़े हाथ खड़ी प्रभु आगे॥
अस कहा भयो प्रभु कहो मोहि समझा के।
अब आधी रात भई जाओ सुसता के॥
घड़ी दोय करो आराम प्रभात सिधारो॥ जल०॥ ३॥
तब रमानाथ लक्ष्मी को यों समझावे।
मैं कैसे करूँ आराम भगत दुख पावे॥
म्हारो करुणासिन्धू नाम बेद में गावे।
म्हारे इसी नामके आज बटो लग जावे॥
म्हारो भगत लगे मोहि प्राणन से अति प्यारो॥ जल०॥ ४॥
प्रभु निज अरधंग्या तजी गवन हरि कीनो।
हो गये गरुड़ असवार गरुड़ तज दीनो॥
निज भक्तन के हित पाँव पयाँदे कीनो।
झट चक्रसुदर्शन फेंक ग्राहपर दीनो॥

प्रभु ग्राह मारकर गज को कियो निसतारो॥ जल०॥ ५॥
यह भक्त कथा महाभारत में परकासी।
कथ गावे रामरिखदास चुरू को बासी॥
कोइ पढ़े सुणे अरु गावे हरि पद पासी।
वाको फेर जनम नहिं होय धाम निज जासी॥
गज के मस्तक पर हाथ कृपानिधि धार्‌यो॥ जल०॥ ६॥

(१३९)

हर हर गंगा लहर तरंगा, दरशणसे होय पातक भंगा॥
गंगा मैया को नाम उचारूँ, सबही पापांरो भार उतारूँ॥
गंगा मैया का दरशण पाऊँ, पूजा करूँ वांने शीश नवाऊँ॥
गंगा के तट पर दीया जलाऊँ, गंगा मैया की आरति गाऊँ॥
गंगा मैया की रज्जी में लेटूँ, परमेश्वरसूँ भुजा भर भेंटूँ॥
गंगा किनारे झूमत डोलूँ, मैया मैया कहकर बोलूं॥
गंगा को जल पीउँ गंगा में न्हाऊँ, गंगा के जल सों भोजन पाऊँ॥
गंगा के घाट करूँ सतसंगा, पाउँ प्रभुजी की भगति अभंगा॥

(१४०)

गोपाल लाल म्हे तो थाँरी चरचा सुणबा आया हो,
म्हारा मदन गोपाल, प्यारा नन्दजी रा लाल,
भाग बडा भगताँ रा दरसण पाया हो, गोपाल॥टेर॥
गोपाल लाल चोखा भूँडा जो कुछ हाँ म्हे तो थाँरा हो॥ म्हारा०॥
आप बिना म्हारे और न कोइ सहारा हो, गोपाल॥ १॥
गोपाल लाल थे छो म्हारे हिवड़े रा उजियारा हो॥ म्हारा०॥
पल पल छिन छिन लागो घणाँ थे प्यारा हो, गोपाल॥ २॥
गोपाल लाल थाँने छोड्याँ ठौड़ कठे नहिं म्हाने हो॥ म्हारा०॥
हाँ जिसड़ा म्हे तो पड़्ग्या थाँरे पाने हो, गोपाल॥ ३॥
गोपाल लाल नित प्रति म्हाने संत समागम दीज्यो हो॥ म्हारा०॥
अपणाँ जाण शरण में म्हाँने लीज्यो हो गोपाल॥ ४॥

(१४१)

गोपाल लाल म्हे तो थाँरी गीता सुणबा आया हो,
बसुदेवजी रा लाल, म्हारा मदन गोपाल,
किरपा कर सतसंगत माहिं बुलाया हो, गोपाल॥ टेर॥
गोपाल लाल थे तो म्हाँने चोखा मिनख बणाया हो॥ बसु०॥
म्हे अभिमानी थाँने हीं बिसराया हो, गोपाल॥ १॥
गोपाल लाल म्हे तो थाँने दूर समझ भरमाया हो॥ बसु०॥
संत कृपा कर नेड़ा घणाँ बताया हो, गोपाल॥ २॥
गोपाल लाल गीता में थे गीत जिणाँ रा गाया हो॥ बसु०॥
उण भगताँ रा दरसण आप कराया हो, गोपाल॥ ३॥
गोपाल लाल आस जगत री करी घणाँ दुख पाया हो॥ बसु०॥
जननी ज्यूँ हिवड़े सूँ आप लगाया हो, गोपाल॥ ४॥
गोपाल लाल राग द्वेष कर अगणित जनम बिताया हो॥ बसु०॥
बासुदेव सबही ने आप लखाया हो, गोपाल॥ ५॥

(१४२)

बिहारी लाल म्हे तो थाँरा दरसण करबा आया हो,
जसोमतीजी रा लाल म्हारा मदन गोपाल,
और आस तज सरण आपरी आया हो, गोपाल॥टेर॥
बिहारी लाल थाँरी म्हारी जात नहीं है न्यारी हो॥ म्हारा०॥
फूल बिना तो सोहे नहिं फुलवारी हो, गोपाल॥ १॥
बिहारी लाल इतरा दिन थाँने सत चित आनँद मान्या हो॥ म्हारा०॥
थे तो म्हारा परम पिता अब जान्या हो, गोपाल॥ २॥
बिहारी लाल इतरा दिन थाँने तीन लोक पति मान्या हो॥ म्हारा०॥
थे तो म्हारा बन्धु सखा अब जान्या हो, गोपाल॥ ३॥
बिहारी लाल थाँ पर म्हारो हक पूरो ही लागे हो॥ म्हारा०॥
बालक मौज उडावे माता आगे हो, गोपाल॥ ४॥
बिहारी लाल थाँरा होय म्हे और कठे अब जावाँ हो॥ म्हारा०॥
थाँने हीं म्हे तो खोटी खरी सुणावाँ हो, गोपाल॥ ५॥

बिहारी लाल थाँरा ही टाबर थाँ देख्याँ दुख पावे हो॥ म्हारा०॥
देख दसा क्यूँ सरम न थाँनें आवे हो, गोपाल॥ ६॥
बिहारी लाल इतरा दिन थे, क्यूँ म्हाँने भटकाया हो॥ म्हारा०॥
दूर कर्‌या म्हाँने थे काईं सुख पाया हो, गोपाल॥ ७॥
बिहारी लाल अब तो म्हाँने छोड कठे मत जाज्यो हो॥ म्हारा०॥
गुनाह माफ कर हिवड़े आप लगाज्यो हो, गोपाल॥ ८॥

तर्ज—गणगौरकी

(१४३)

मैं तो ढूँढ्यो जग सारो, थाँसूँ कोई नहीं न्यारो, देख्यो थाँरो ही उणियारो,
अब तो मोर मुकुट सिर धारो हो, गिरधर लुक छिप आप कठे जास्यो,
न्यारा म्हाँने छोड कठे जास्यो॥ टेर॥
थाँने ओलख लीना आज, म्हारी सुनल्यो थे आवाज, क्यूँ भगताँ सूँ रया भाज,
लुकताँ आवे नहीं लाज, अब थे नेड़ा म्हारे क्यूँ नहीं आवो हो गिरधर,
लुक छिप आप कठे जास्यो॥ १॥
ढूँढ्या धरणी आकास, थे तो बैठ्या म्हारे पास, प्रभु मैं तो थाँरो दास,
थे हो मालक म्हारा खास, थे तो मीठा मीठा बैण उचारो हो गिरधर,
लुक छिप आप कठे जास्यो॥ २॥
थाँने समझ लीना दूर, थे तो हाजर हजूर, थाँरो झलके छे नूर,
थाँरी किरपा है भरपूर, म्हारे हिवड़े निवास है थाँरो हो गिरधर,
लुक छिप आप कठे जास्यो॥ ३॥
नहीं आवड़ेलो थाँने, हरदम साथ राखो म्हाँने, बाताँ करस्याँ छानें छानें,
थे तो चौड़े करज्यो क्यांने, म्हारे एक आसरो थाँरो हो गिरधर,
लुक छिप आप कठे जास्यो॥ ४॥
म्हारा आप छो अनादी, सब पड़पोताँ री पड़दादी, म्हारी बिगड़ी बात बना दी,
म्हारी जिग्यासा जगा दी, म्हारी लालसा लगा दी, म्हाँने गीताजी रटा दी,
म्हारी चौरासी छूटा दी, साधन सामगरी जूटा दी, थाँरी पाई म्हे परसादी,
थे तो जन हित नर तन धारो हो गिरधर, लुक छिप आप कठे जास्यो,

न्यारा म्हाँने छोड कठे जास्यो॥ ५॥

म्हाँपर किरपा कर दी नाथ, पायो प्रेमीजन रो साथ, म्हारे सिरपर थाँरो हात, अब तो मिलस्याँ बाथूँ बाथ, थाँरो कीरतन लागे म्हाँने प्यारो हो गिरधर,

लुक छिप आप कठे जास्यो।
न्यारा म्हाँने छोड कठे जास्यो।
थाँ बिना घड़ी ए न आवड़े॥ ६॥

(१४४)

म्हारा मालक कृपानिधान, म्हारा स्वामी कृपानिधान।
किण बिध ध्यान करूँ प्रभु थाँरा, रूप अनेक महान॥टेर॥
ऐसा थे बाजीगर बनग्या, जान न सके जहान।
प्रेमी भगत जमूरा थाँरा, ले थाँने पहचान॥ १॥
वकताँ री थे वाणी बनग्या, श्रोताँ रा सब कान।
नैणाँ री थे जोती बनग्या, प्राण्याँ रा सब प्रान॥ २॥
भगताँ री थे भगती बनग्या, ग्यान्याँ रा थे ग्यान।
कवियाँ री थे कविता बनग्या, गावणियाँ री तान॥ ३॥
कलाकार सब कारीगराँ रा, गुनियाँ रा गुनवान।
चतुराँ री चतुराई बनग्या, विद्या रा विदवान॥ ४॥
धनवानाँ रा बडा धनी थे, सब रतनाँ री खान।
बलवानाँ रा बड़ा बली थे, जूझ मरे अनजान॥ ५॥
सब संपति रा थे भंडारी, छिप कर करो प्रदान।
लोग जगत रा अपनी माने, वृथा करे अभिमान॥ ६॥
थाँरा गुणाँ रो पार न पायो, थकग्या बेद पुरान।
हरदम म्हाँने मीठा लागो, देद्यो यो वरदान॥ ७॥

(१४५)

थे तो अगनित रूप बनाया जी, म्हारा भाग बडा हरि आया।
थे तो जगत रूप धर आया जी, म्हारा भाग बडा हरि आया।
थे तो पहर अनोखा बाना, धर लिया भेष थे नाना,

कर दरसण अति सुख पाया जी॥
थाँने सतसंगत सूँ पाया जी, म्हारा भाग बडा हरि आया॥ १ ॥
म्हे तो डींग मारता भटक्या, सत असत खोजमें अटक्या,
भगताँ री महर सूँ पाया जी॥ २॥
थे तो कामण गारा मोटा, बाबा नँदजी रा ढोटा,
थाँने जसोमति गोद खिलाया जी॥ ३॥
थाँने आवे घणाँ ही लटका, थे तो भेष धार लिया नटका,
थाँरी लीला देख लुभाया जी॥ ४॥
थाँने आवे घणाँ हीं चाला, सब जग मणिका थे माला,
थे तो घट घट माहिं रमाया जी॥ ५॥
थाँने आवे घणाँ हीं नखरा, थे तो हो नहिं किण रे बखरा,
म्हाँने विश्वरूप दरसाया जी॥ ६॥
थाँने आवे घणाँ हीं बाजा, थाँरा दिव्य जनम ओर काजा,
थाँरा छदम भेष मन भाया जी॥ ७॥
थाँरी अजब अलौकिक क्रीड़ा, हर लेवो भगतकी पीड़ा,
नहिं व्यापे थाँरी माया जी॥ ८॥
थाँरी अजब अलौकिक गीता, कोइ रया न थाँसू रीता,
सब आप हि आप लखाया जी॥ ९॥

(१४६)

म्हारो प्यारो प्रगट्यो आय, जगत में दरस रयो जी दरस रयो।
ओ तो अगनित रूप बनाय, जगत में दरस रयो जी दरस रयो॥टेर॥
आपहि छोरा छोरी बनग्यो, सीरो पुरी कचोरी बनग्यो,
पापड़ फली मँगोड़ी बनग्यो, थाली गिलास कटोरी बनग्यो,
आपहि भोग लगाय॥ १॥
आप नदी ओर नाडी बनग्यो, गाय भैंस ओर पाडी बनग्यो,
आप बैल ओर गाडी बनग्यो, आपहि रयो चलाय॥ २॥

आपहि नाचे आपहि गावे, आप मजीरा ढोल बजावे,
आपहि अपनो मरम जनावे, आपहि सुने सुनाय॥ ३॥
आप बाप दादाजी बनग्यो, आप बूढ़िया माजी बनग्यो,
आपहि बहन भुवाजी बनग्यो, और कठे सू ल्याय॥ ४॥
आप गुरूजी आपहि चेलो, आपहि न्यारो आपहि भेलो,
बनग्यो सब कुछ आप अकेलो, आपहि आप लखाय॥ ५॥

(१४७)

दरसण कर ली ज्यो जी, हरि की लीला है।
हियमहँ धरली ज्यो जी, हरि की लीला है॥ टेर॥
या लीला रंग रँगीली है, कोइ लाल हरी कोइ पीली है,
या नित नव प्रेम रसीली है, कोमल निरमल चमकीली है,
धारण कर ली ज्यो जी, हरि की लीला है॥ १॥
कहुँ गंगाजीकी धारा है, कहुँ ऊँडा पानी खारा है,
कहुँ बिन चायाँ हीं बरसे है, कहुँ पानी खातर तरसे है,
घबराय मत जाज्यो जी, हरि की लीला है॥ २॥
कोइ जनम्या बटे बधाई है, कोइ मरग्या करे उठाई है,
कोइ हो रया ब्याह सगाई है, कोई लड़ रया लोग लुगाई है,
थे डर मत जाज्यो जी, हरि की लीला है॥ ३॥
कोइ धनवन्ता कोइ चपरासी, कोइ घरबारी कोइ संन्यासी,
कोइ तरक बाज कोइ बिसवासी, कोइ समझदार कोइ बकवासी,
झाँकी कर लीज्यो जी, हरि की लीला है॥ ४॥
कोइ खावे है कोइ पोवे है, कोइ सिसक सिसक कर रोवे है,
कोइ लम्बा पग कर सोवे है, कोइ टुक टुक बैठ्या जोवे है,
जोवत ही रहिज्यो जी, हरि की लीला है॥ ५॥
अब कितरी कहूँ कठे ताईं, कोइ माप तोल गिनती नाईं,
ऐ नाना रूप हरी का है, लीला बिन लागे फीका है,
चितमहँ धर लीज्यो जी, हरि की लीला है॥ ६॥

समँदर दवात कागज धरती, सुरतरु सों लीखे सरस्वती,
वा लिखती हरदम जावे है, लीला को पार न पावे है,
कोइ बिसर न जाज्यो जी, हरिकी लीला है॥ ७॥

(१४८)

नाथ थाँने कैयाँ रिझाऊँ जी, श्याम थाँने कैयाँ रिझाऊँ जी।
थे जैसा भेष बणाओ वैसा पुषप चढ़ाऊँ जी॥ टेर॥
साधू ब्राह्मण बणकर आवो सीस नवाऊँ जी।
चोर रूप सूँ आवो तो डंडा लगवाऊँ जी॥ १॥
महापुरुष बण आवो तो मैं उछब मनाऊँ जी।
पाखंडी बण आवो तो मैं मुँह न लगाऊँ जी॥ २॥
साधक बण आवो सतसँग की बात चलाऊँ जी।
भोगी बणकर आवो तो मैं पिन्ड छुटाऊँ जी॥ ३॥
उग्र रूप धारो तो मैं डरतो भग जाऊँ जी।
माँ बणकर आवो तो गोदीमें बड़ जाऊँ जी॥ ४॥
बालक बण आवो तो गीता पाठ पढ़ाऊँ जी।
झूठा बोलो कयो न मानो धर धमकाऊँ जी॥ ५॥
कारीगर बण आवो थाँसू काज कराऊँ जी।
खटकर चोखो काम करो बखसीस दिराऊँ जी॥ ६॥
बहन भाणजी बणकर आवो चीर ओढ़ाऊँ जी।
पूण पावलो देकर थाँरो नेग चुकाऊँ जी॥ ७॥
कूकर बण चोके में आवो डाँग दिखाऊँ जी।
घर के बाहर काढ़ूँ रोटी थाल जिमाऊँ जी॥ ८॥
अलग अलग बरताव करूँ मन मन हरषाऊँ जी।
सब रूपाँ में थाँरा ही मैं दरसण पाऊँ जी॥ ९॥

(१४९)

थाँरे काईं आवे काम!
श्रद्धा प्रेम भगती म्हाँने, देद्यो घनस्याम॥ टेर॥

पहली देद्यो प्रेम थाँरो, प्रेमीजन रो संग।
सरणागत कर आपनो थे, राखल्यो श्रीरंग॥
थाँरा काईं लागे दाम॥ १ ॥
ध्यान जप में निष्ठा देद्यो, सुमिरूँ आठौं याम।
पूरी दैवी संपदा थे, कर द्यो म्हारे नाम॥
थाँरी लागे ना छदाम॥ २ ॥
ऊमड़तो सो प्रेम देद्यो, ऊबलतो वैराग।
भूलूँ जग सारो थाँमे, बढ़े अनुराग॥
रहे भाव निसकाम॥ ३ ॥
दृष्टि ऐसी देद्यो थाँने, देखूँ सब ठौर।
रहवूँ सदा चाकरी में, कहूँ कर जोर॥
निज पाऊँ बिसराम॥ ४ ॥

(१५०)

म्हारो प्रेम जगाओ जी, थाँरे चरन कमल रो चेरो॥टेर॥
पड़्यो रहूँ दरबार आपरे, संतन मायँ बसेरो।
आठौं पहर चाकरी करसूँ हरदम रहसूँ नेरो॥ १ ॥
थाँने छोड कठे नहिं म्हारो ठौर ठिकानौं डेरो।
झिड़क बिडारो तो नहिं छोड़ूँ पकड़ लियो अब लेरो॥ २ ॥
ज्यों राखोला त्यों हीं रहसूँ करौं न कोइ बखेरौ।
आप बिना कोई नहिं म्हारो सब जग मायँ अँधेरो॥ ३ ॥
थाँरो हूँ बस इतरो जाणू और नहीं कछु बेरो।
अपनौं जान शरन में राखो कृपा दृष्टि कर हेरो॥ ४ ॥

(१५१)

हर हर बैठ्या हरिजी रथ में आगे आय,
कुन्ती सुत सूँ बाताँ हरि की होय रही॥ १ ॥
हर हर पकड़ी हरिजी घोड़लाँ री लगाम,
इक कर माहीं चाबुक धारण कर लीना॥ २ ॥

हर हर हाँकण लाग्या घोड़लाँ ने घनस्याम,
निज भगताँ री आग्या पालण कर रया॥ ३॥
हर हर रोक्या रथ ने दोय सेना रे बीच,
भिषमपिता द्रोणांचारज रे सामने॥ ४॥
हर हर मोह भरी कायरता अरजुन केरि,
दुनियाँ रे हित परगट हरिजी कर रया॥ ५॥
हर हर पारथ प्यारा कुरु बंस्याँ ने जोय,
इतरी सी बाणी में जादू कर दीन्हा॥ ६॥
हर हर अरजुन रे मिस दीन्हो सबने ग्यान,
गीता रो अध्याय प्रथम हरि बरनीयो॥ ७॥

(१५२)

ए तो गायो हरि भगताँ रे काज, गीत प्रभु गायो रे॥ टेर॥
ए तो सास्त्र समंदर मथ लीनो, ए तो इमरत लियो है निकाल॥ १॥
ए तो पारथ रा सारथि बनिया, ए तो हिरदो दीनो खोल॥ २॥
ए तो गागर में सागर भरियो, ए तो घणाँ समर्थ सुजाण॥ ३॥
ए तो देख दसा कलजुगियाँ री, ए तो पिघल गया ततकाल॥ ४॥
म्हे तो स्वारथ में आँधा बनिया, ए तो ग्यान नेत्र दरसाय॥ ५॥
म्हे तो नासवान में सुख मान्यो, ए तो परमानंद लखाय॥ ६॥
म्हे तो भव सागर में डूब रया, ए तो लीना बाहर निकाल॥ ७॥
म्हे तो चौरासी लख भुगत रया, ए तो दीना मुकत कराय॥ ८॥
म्हे तो दल दल माहीं फँस रया, ए तो ऊँचा लिया उठाय॥ ९॥
म्हे तो भूखाँ मरता तड़फ रया, ए तो दीना तृपत कराय॥ १०॥
म्हे तो लोभ फाँस गल बिच घाली, ए तो छिन में देई निकाल॥ ११॥
म्हे तो मोह की बेड़ी पहर लेई, ए तो छिन में दीनी काट॥ १२॥
म्हे तो ममता मैल लगाय लियो, ए तो भगती री गंगा नहलाय॥ १३॥
म्हे तो अहंकार में फूल रया, ए तो चूर चूर कियो डार॥ १४॥

म्हे तो विषयाँ रो बिष खाय लियो, ए तो प्रेम रो इमरत पाय॥ १५॥
म्हे तो राग द्वेष कर झगड़ रया, ए तो बासुदेव दरसाय॥ १६॥

(१५३)

करुणानिधान आपही, सब कष्ट भगताँ रो हर्‌यो।
आयो सरण जो आपके, सब काज वाँरो ही सर्‌यो॥टेर॥
प्रहलाद हित नरसिंघ बनिया, देख हिरनाकुस डर्‌यो।
बिन सस्त्र नख सूँ चीर कर, मार्‌यो असुर कूँ निस्तर्‌यो॥ १॥
ध्रुव भक्त छाती सों लगायो, नेह जननी ज्यूँ झर्‌यो।
अँबरीष राख्यो चक्र सूं भयभीत दुरवासा फिर्‌यो॥ २॥
गज काज नंगे पाँव धाया, नाम आधो उच्चर्‌यो।
रच्छा विभीषण की करी, रावण हत्यो धरनी गिर्‌यो॥ ३॥
करुणा करी जब द्रोपदी तो, नीर नयणाँ सूँ ढर्‌यो।
थाक्यो दुसासन खेंच तन से, वस्त्र-तिलभर ना टर्‌यो॥ ४॥
राखी प्रतीग्या भीष्म की प्रभु, आपरो प्रण बीसर्‌यो।
रच्छा करी सब पाँडवाँरी, कौरवाँ रो बध कर्‌यो॥ ५॥
सेना भगत रे कारणे प्रभु, भेष नाई को धर्‌यो।
बण सेठ साँवलसाह हरिजी, भात नरसी रो भर्‌यो॥ ६॥
भयभीत हो जो आप के, आयो सरण सोई तर्‌यो।
अब जेज किण बिध हो रही, प्रभु दास चरनन में पर्‌यो॥ ७॥

(१५४)

अगम देसाँ सूँ जोगी जी आया, आकर दीन हेला हो।
जाग जाग उठ हरि भज प्राणी, सोवण की नहिं वेला हो॥टेर॥
जिण देही का गरब करे तूँ, बण ठण होरयो छेला हो।
बिखर जावताँ बार न लागे, बालू का ज्यूँ ढेला हो॥ १॥
बेटा बहू घर नाती रे गोती, संपति कुटुम कबीला हो।
ना कोइ किण रे संग चल्या है, जावेला आप अकेला हो॥ २॥
इण जग की है रीत पुराणी, थिर नहिं कोइ रहेला हो।
चार दिनाँरी चमक दमक है, तीरथ का सा मेला हो॥ ३॥

तरवर केरा पान ज्यूँ टूटे, रह न सके कोइ भेला हो।
जाय कठे ही दूर सिधावे, लागे पवनका झेला हो॥ ४॥
हरि का सुमिरण सेवा जग की, ए दोउ संग चलेला हो।
धन्य हो जोगी मोकूँ जगाया, आप गुरू हम चेला हो॥ ५॥

(१५५)

कुलवंती बहना नवधा भगती रा गहणाँ पहरल्यो॥टेर॥
कथा श्रवण काना रा झूमर, हरि किरतन रो हार।
सुमिरन मूरति स्याम सुंदर की, पहरो हियमहँ धार हे॥ १॥
पद सेवा की पहुँची पहरों, पहुँचों प्रभु के द्वार।
अरचन आँगलियाँ री मुदरी, जतन जड़ाऊदार हे॥ २॥
बंदन बोर सीस धर राखो, हरि चरणाँ में डार।
नक बेसर हरि नाम उचारो, उतरो भव सूँ पार हे॥ ३॥
दुलड़ी दासी भाव सूँ हरि सेवा में हरबार।
सखी भाव का भुजबँद पहरो, प्रगटो हिय उदगार हे॥ ४॥
कटि किंकिणी करो व्रत पालन, हरि ही राखण हार।
नूपुर रह एकांत निकट प्रभु, नाचो ले करतार हे॥ ५॥
आत्म निवेदन अंग अंग सजि, बिनवो बारंबार।
मैं तो कुछ जाणू नहिं प्रभुजी, लीजो आप सँभार हे॥ ६॥

(१५६)

गउ हत्यारा पापीड़ाँने बोट मत दीज्यो जी, सजन थे सुणज्यो जी॥
गउ हत्यारा पापीड़ाँने बोट मत दीज्यो जी, बहना सुणज्यो जी॥टेर॥
बाताँमें बहकावे थाँने, तनक न थे बहकीज्यो जी।
नरकाँ माहीं जावण री त्यार्‌याँ मत कीज्यो जी॥ १॥
चप्पल जूता चमड़े रा थे, पग में मत पहरीज्यो जी।
सूटकेस बिस्तर चमड़े रा, छुह मत लीज्यो जी॥ २॥
चूल्हे पर ली पहली रोटी, गउ माता ने दीज्यो जी।
गउ माता ने नित उठ थे परणाम करीज्यो जी॥ ३॥

दूध दही अरु घिरत गाय रो, घर माहीं बरतीज्यो जी।
बेजीटेबल नकली घी सूँ दूर रहीज्यो जी॥४॥
गोबर अरु माटी सूँ घरमें आँगण चौक पुरीज्यो जी।
गऊ लोकमें बास करो हरि दरसण कीज्यो जी॥५॥

(१५७)

कुबुद्धि ने छोडो रे भाई,
लख चौरासी फिरताँ फिरताँ मिनखा देह पाई॥टेर॥
हीरा जनम अमोलक खोया दिया तोहि साईं।
काम क्रोध ने मार हटाओ, नारायण ध्याई॥१॥
हरि भजता हिरणाकुस बरजे, ऐसो अन्याई।
खंभ फाड़ प्रहलाद उबार्‌यो, आँताँ बिखराई॥२॥
ध्रुवजी ध्यान लगायो वन में, बालापन माँईं।
भक्तन को सरदार बनायो, वैकुण्ठाँ जाई॥३॥
जब गजराज गयो जल भीतर, हरि हरि उचराई।
गरुड़ छोड़ आतुर हो धाया, ऐसा रघुराई॥४॥
मंदोदरि रावणने बरजे, सीता मत लाई।
समँदर ऊपर सेतू बाँध्यो, अब तूँ कहँ जाई॥५॥
सिसुपालो तो जान तनावे, बरजे भौजाई।
रुकमणि ने तो कृष्ण ले गयो, रथ में बैठाई॥६॥
कंस राज जब बैर बढ़ायो, कृष्ण कुँअर ताईं।
पकड़ केस धरणीं पर डार्‌यो, दाँतुन की नाईं॥७॥
जो कुबुद्धि ने छोड हरी के चरनन चित लाई।
गेनो भगत कहे परमेस्वर रीझे पल माईं॥८॥

(१५८)

सुण सेठाणी हे गायाँ ने दे दे चारो पाणी हे॥टेर॥
जोड़ जोड़ धन भेलो कीन्हो, बेटाँ पोताँ ताणी हे।
मरसी जद वे राख उडासी, बीना छाणी हे॥१॥
चोखा चोखा करम करे तो, संत कहे तूँ स्याणी हे।
किण रे संग में चली नहीं है, कौड़ी काणी हे॥२॥

भूल गई तिरलोक नाथ ने, बण बैठी तूँ राणी हे।
रट ले अब तो राम नाम थोड़ी जिंदगाणी हे॥ ३॥
सतसँग सुमिरण सेवा कर ले, मत कर आनाकानी हे।
दान कर्‌याँ धन नाँय घटे संतारी बाणी हे॥ ४॥

(१५९)

धरणी ने क्यूँ बोझाँ मारी, रे बंदा तूँ तो हरिजीकी भगति बिसारी॥टेर॥
गरभ वास में भगति कबूली, संकट काटो गिरधारी॥ १॥
बाहर आकर भूल गयो तूँ, नकटाई क्यूँ धारी॥ २॥
जिण देही ने देवता तरसत, वाही खाख कर डारी॥ ३॥
खायो पियो नींद भर सोयो, कंचन काया बिगारी॥ ४॥
नौ दस मास जननि दुख पाई, बाँझ न रही बिचारी॥ ५॥
बार बार तोहे कह समझायो, जीती बाजी हारी॥ ६॥
बंसीदास शरण महँ आयो, रच्छा करो मुरारी॥ ७॥

(१६०)

सन्तो कुण आवे छे कुण जाय बोले छे जाकी खबर करो॥ टेर॥
पानी केरो बुलबुलो रे धर्‌यो आदमी नाम।
कौल कियो हरि भजनको रे, आय बसाय लियो गाँव॥ १॥
हस्थी छूट्यो ठाण से रे, लसकर पड़ी पुकार।
दसुँ दरवाजा बन्द किया रे, निकल गयो है असवार॥ २॥
जैसे पानी ओस को रे, वैसो यो संसार।
झिलमिल झिलमिल हो रही रे, जात लगावे नहीं बार॥ ३॥
कहत कबीर सुनो भाइ साधो, झूठो जग व्यवहार।
राम नाम की नाव बैठ के, उत्तर चलोनी परले पार॥ ४॥

(१६१)

म्हारा सतगुरु देई है बताय दलाली हीरा लालन की॥टेर॥
लाल लाल सब कोई कहे रे, सबके पल्ले लाल।
गाँठ खोल देखे नहीं रे, ताही ते फिरे है कंगाल॥ १॥
लाल पड़ी चौगान में रे, कीच पड़ी लपटाय।
मूरख ठोकर दे चल्यो रे, साधूजन लेई है उठाय॥ २॥

सतगुरु ऐसा कीजिये रे, ज्यूँ महँदी का पात।
लाली वाके भीतर माहीं, हरियल है वाकी जात॥ ३॥
सतगुरु ऐसा कीजिये रे, ज्यूँ लोहा बिच आग।
लाली वाके भीतर माही, चकमक होय कर लाग॥ ४॥
सार झड़े लोहा झड़े रे, झड़ झड़ पड़े सरीर।
'रामानँद' का बालका रे, कहवे है दास 'कबीर'॥ ५॥

(१६२)

सखी इण आँगणिये में हे।
कइ खेल्या कइ खेलसी कइ खेल सिधाया हे॥टेर॥
आवो पाँच सहेलड्याँ, मेरा सींवो चोला हे।
मैं अबला भइ बिरहणी, मेरा साहिब भोला हे॥ १॥
बड़ तल आण उतारिया, साथी कुरलाया हे।
तुम सब अपने घर चलों, हम भया पराया हे॥ २॥
काजी महमद यूँ भणे अब यहाँ न रहणा जी।
आया सँदेसा राम का अब कछु नहिं कहणा जी॥ ३॥

(१६३)

संसारिया में नथी आवनो पाछो॥टेर॥
चुन चुन कंकर महल चिनाया, काया गढ़ छे काचो॥ १॥
काया नगरी में बाग लगायो, हँसला लेत वासो॥ २॥
सतसँग सुमिरन सेवा कर ले, सँग ना चले मासो॥ ३॥
'मीराँ' कहे प्रभु गिरधर नागर, साँवरो सनेही साँचो॥ ४॥

(१६४)

म्हाँने पार उतारो जी, थाँने निज भगताँ री आण॥टेर॥
काम क्रोध मद लोभ मोह में, भूल्यो पद निरबान।
बह्यो जात हूँ भवसागर में, तारो श्याम सुजान॥ १॥
लख चौरासी भरमत भरमत, मोड़ी पड़ी पिछाण।
अब तो शरण पड़्यो चरणाँरी, मत दीज्यो थे जाण॥ २॥
मैं तो कुटिल अधम अपराधी, भज्यो नहीं भगवान।
कह नरसी तुम पतित उधारन, गावत बेद पुरान॥ ३॥

(१६५)

राम कृष्ण उठि कहिये भोर॥टेर॥
यह अवधेश वह ब्रज जीवन, यह धनुधर वह माखन चोर॥ १ ॥
इनके चमर छत्र सिर सोहे, उनके लकुट मुकुट कर जोर॥ २ ॥
इन सँग भरत शत्रुहन लक्ष्मन, बलदाऊ सँग नंदकिशोर॥ ३ ॥
इन सँग जनक लली अति सोहे, उत राधा सँग करत किलोल॥ ४ ॥
इन सागरमें शिला तिराई, उन गोवर्धन नख की कोर॥ ५ ॥
इन मार्‌यो लंकापति रावन, उन मार्‌यो कंसा वर जोर॥ ६ ॥
तुलसिदास के ये दोउ जीवन, दशरथ सुत अरु नंदकिशोर॥ ७ ॥

(१६६)

कर दे दीनों का दुख दूर हो, बाघंबर वाले॥ टेर॥
कोई चढ़ावे थाँरे जल की धारा, कोई चढ़ावे काचो दूध॥ १ ॥
कोई चढ़ावे हरी बेल की पतिया, कोई चढ़ावे फल फूल॥ २ ॥
कोई चढ़ावे थाँरे आक धतूरा, भाँग चढ़ावे भरपूर॥ ३ ॥
नंदीगण की सोहे सवारी, हाथों में सोहे है त्रिशूल॥ ४ ॥
दास नारायण शरण तिहारी, अरज करोनी मंजूर॥ ५ ॥

(१६७)

जो दिन जाय भजन के लेखे, सो दिन आसी गिनती में॥टेर॥
गयो बालपन आयो बुढ़ापो, जोबन जासी झिलकी में॥ १ ॥
हीरा कंचन मानिक मोती, धर्‌या रहेला धरती में॥ २ ॥
खाय ले पिय ले और खरच ले, पुण्य धर्म परवरती में॥ ३ ॥
राजा भोज करण से जोधा, वे भी आया मरती में॥ ४ ॥
कहत कबीर सुनो भाइ साधो अमर नहीं इण पिरथी में॥ ५ ॥

(१६८)

म्हाँने रामजी सदा वर दीज्यो हे माय, अमरापुर में सासरो।
म्हाँने इण जुग में मत राखो हे माय, किसो भरोसो इण सास रो॥टेर॥
मैं तो अयानी धीवड़ नानी, म्हारी माता बड़ी विधाता हे माय॥ १ ॥

बाबल ग्यानी सब बिध जानी, एजी वे तो चार पदारथ दाता हे माय ॥ २ ॥
चँवरी माँडी कदे न राँडी, एजी म्हारो सतगुरु लगन लिखायो हे माय ॥ ३ ॥
सदा सपूती कदे न ऊती, एजी मैं तो सबद पुत्र भल पायो हे माय ॥ ४ ॥
सदा सुहागण कदे न दुहागण, एजी मैं तो अजर अमर बर पायो हे माय ॥ ५ ॥
रामादासा चरण निवासा, एजी वेतो द्याल वाल जस गायो हे माय ॥ ६ ॥

(१६९)

कयो हे ना जाय सखी हे म्हाँसू रयो हे ना जाय।
बालमुकुँद को रूप सखी हे म्हाँसू कयो हे ना जाय॥टेर॥
मोर मुकुट सिर चन्द्रिका वाँके तिलक सोहे भाल।
कुँडल झलकत कान माहीं चपल नैण विशाल।
धनुष सा बाँका भँवारा लियो चित्त चुराय॥ १ ॥
अलक घुँघरारी भ्रमर सी ललित गोल कपोल।
अधर पर लाली लसत नासा मणी अनमोल।
चिबुक पर ज्यूँ दामणी दमकत भई थिर आय॥ २ ॥
नील मणि ज्यूँ अंग चमकत कंठ मुकता माल।
बाँसुरी कर लियाँ शोभित चलत मधुरी चाल।
ऊजली सी दाँत बतीसी रयो अति मुसकाय॥ ३ ॥
पीत अंबर कमर कसियो दुपट्टो जरिदार।
मेखला भुजबन्द कंकण नुपुर की झणकार।
चित्त चढ़्यो हिय में बस्यो नैनन में रयो समाय॥ ४ ॥

(१७०)

थे तो लुकग्या कठे जी म्हारा श्याम, म्हे तो थाँने ढूँढ थक्या।
थे तो छिपग्या कठे जी म्हारा श्याम, म्हे तो थाँने ढूँढ़ थक्या ॥टेर॥
कोई निरगुण सगुण बतावे, निराकार साकार।
कोई कहे दोय भुज थाँरे, कोई बतावे भुजा चार॥ १ ॥
कोई जीव प्रकृति ईश्वर महँ, बरण्या भेद अनेक।
कोई कहे जगत सब झूठो, साँचो तो ब्रह्म है एक॥ २ ॥
कोई कहे बैकुण्ठ में थे, रहवो रमानिवास।
कोई कहे खीर सागर में, रहवो जठे है थाँरो वास॥ ३ ॥

कोई कहे दशरथ का बेटा, कोई कहे नँदलाल।
कोई कहे म्हारे तो घर में, छोटा सा लड्डू गोपाल॥ ४॥
महापुरुष किरपा कर म्हारो, मेट्यो भ्रम संताप।
अब तो सबही ठौड़ म्हाँने, दरश रया छो प्रभु आप॥
अब ही थाँने ढूँढ़ सक्या॥ ५ ॥
थे तो मोड़ा मिलिया जी म्हारा श्याम, अब ही थाँने ढूँढ़ सक्या॥

(१७१)

देखूँ थाँने कवन दिसा में जाय,
थे व्यापक सबमें होरया जी म्हारा श्याम।
परिपूरण सबमें होरया जी म्हारा श्याम॥टेर॥
अगन पवन जल धरणी ओर आकाश,
थे दसहु दिशा में छारया जी म्हारा श्याम॥ १ ॥
नर नारी पशु पच्छी कीट पतंग,
सब भेष रमापति धारिया जी म्हारा श्याम॥ २ ॥
परबत जंगल बिरछन रा सब पात,
जामे दरशे छबि आपकी जी म्हारा श्याम॥ ३ ॥
कल कल बहवे गंगाजी की धार,
थाँरा ही शबद सुहावणा जी म्हारा श्याम॥ ४ ॥
मिट गइ अब तो भोग मोक्ष की चाह,
घट घट में निरखूँ आपने जी म्हारा श्याम॥ ५ ॥

(१७२)

जठे देखूँ बठे ही म्हारा रामजी रे, राखूँ काहेसूँ बैर बिरोध॥ टेर॥
म्हाँने प्रेमी भगत हरिका लाडला रे, दीन्हो गीता रो दुरलभ ग्यान॥ १ ॥
मनड़े री गती थिर हो गई रे, हरि की रूप माधुरी जोय॥ २ ॥
हरियाली लसत हरि रूपकी रे, रहि दसहु दिसा महँ छाय॥ ३ ॥
अब तो माया ब्रह्म अरु जीवमें रे, दरसे कछु भी नहिं भेद॥ ४ ॥
मिट गई मलिन सब वासना रे, भयो राग द्वेष को नास॥ ५ ॥
सब पापाँ रा उडग्या छूँतरा रे, होयो करमाँ रो चकनाचूर॥ ६ ॥
माथाफोड़ी करत जुग बीतग्या रे, पायो पायो परम बिसराम॥ ७ ॥

(१७३)

कैसी रचना रची म्हारा स्वामी, वाहवा जी वाहवा।
नाना रूप धर्‌या बहु नामी, वाहवा जी वाहवा॥टेर॥
आप पुरुष अरु आपहि नारी, वाहवा जी वाहवा।
आप देवता आप पूजारी, वाहवा जी वाहवा॥ १ ॥
आपहि पवन अगन जल धरनी, वाहवा जी वाहवा।
आपहि की सब अदभुत करनी, वाहवा जी वाहवा॥ २ ॥
आपहि चाँद सूरज नभ तारा, वाहवा जी वाहवा।
आपहि का सब जगत पसारा, वाहवा जी वाहवा॥ ३ ॥
आपहि पशु खग कीट पतंगा, वाहवा जी वाहवा।
भाँत विचित्र बन्या बहु रंगा, वाहवा जी वाहवा॥ ४ ॥
आपहि वृक्ष फूल फल शाखा, वाहवा जी वाहवा।
आपहि मास बरष दिन पाखा, वाहवा जी वाहवा॥ ५ ॥
आपहि निर्गुण ब्रह्म परेसा, वाहवा जी वाहवा।
आपहि ब्रह्मा विष्णु महेसा, वाहवा जी वाहवा॥ ६ ॥
नमो नमो प्रभु अंतरजामी, वाहवा जी वाहवा।
आपहि मात पिता गुरु स्वामी, वाहवा जी वाहवा॥ ७ ॥
ऐसा मरम बतावन हारा, वाहवा जी वाहवा।
आपहि केवल आपका प्यारा, वाहवा जी वाहवा॥ ८ ॥
करऊँ आपकी किण बिध पूजा, वाहवा जी वाहवा।
आप बिना कोई और न दूजा, वाहवा जी वाहवा॥ ९ ॥

(१७४)

हरिने भजनाँ अज्यूँ किसीकी, लाज न जाती जाणी हो।
हरि भगताँ री सदा विजय छे, आ संताँकी वाणी हो॥टेर॥
भक्त प्रहलाद की रक्षा कीनी, हिरणाकुश ने मार्‌यो हो।
लंकापती विभीषण कीनो, रावण ने संहार्‌यो हो॥ १ ॥
नानीबाइ को भर्‌यो माहेरो, नरसी रो दुख हर लीनो हो।
ध्रुवजीने प्रभु दरसण दीना, राज अचल कर दीनो हो॥ २ ॥
विष को प्यालो हँस हँस पी गई, राखी मीराँबाई हो।
द्रुपदसुता को चीर बढ़ायो, पाँडवाँ री करी सहाई हो॥ ३ ॥

मनसा पूरी अंबरीष की, शाप ताप दुख झेल्या हो।
भगताँ रे हित परमधाम तज, मृत्युलोक में खेल्या हो॥ ४॥
परतीग्या हरिचंद की राखी, गज को फंद छुटायो हो।
तुलसी सूरा दास कबीरा, अरजुन मोह मिटायो हो॥ ५॥
मोटो लाहो हरी भजन को, जे कोइ सुमिरण करसी हो।
प्रेमलदास कहे कर जोड़्याँ, हरि सारा दुख हरसी हो॥ ६॥

(१७५)

कद भजसी तूँ रघुराय, थारी बीति उमरियाँ जाय॥ टेर॥
भोगाँ सूँ मन भरतो भरतो, पापाँ में पग धरतो धरतो,
तूँ आज काल करतो करतो, दियो हिरोसो जनम गमाय॥ १॥
तूँ आयो जनम सुधारणने, हरि चरणकमल चित धारणने,
अब माया लग्यो सँवारणने, कब आँख बंद हो जाय॥ २॥
तूँ गरभवास में दुख पायो, हरि हरि पुकार कर चिरलायो,
बाहर काढ़ो भगती करस्यूँ, तूँ दियो कवल बिसराय॥ ३॥
तूँ माया मद में चूर रयो, धन जोबन में भरपूर रयो,
सतसँग सूँ डरतो दूर रयो, खो दियो जमारो हाय॥ ४॥
तूँ गीता पढ़े न रामायण, तूँ पूजा करे न पारायण,
तूँ बिषयन में दतचित रहवे, तनें देख जीव घबराय॥ ५॥
कब समय जोग सूँ कथा सुणे, घर आकर माया जाल बुणे,
तूँ बादशाहके बकरे ज्यूँ, रयो हरि हरि दूब चबाय॥ ६॥

(१७६)

हरि भज ले रे बंदा रामने सुमिर ले, जब लग घटमहँ प्राण रे॥ १॥
किरपा कर प्रभु नर तन दीनो, सेवा कर निसकाम रे॥ २॥
दाँत दिया रे बंदा अन्नकुट लेवण, जीभ देई रट नाम रे॥ ३॥
नैण दिया रे बंदा हरि दरसण को, कान दिया सुण ग्यान रे॥ ४॥
पाँव दिया रे बंदा तीरथ करबा, हात दिया कर दान रे॥ ५॥
सीस दियो रे बंदा सीस झुकावण, कर प्रभुजीने परणाम रे॥ ६॥